

रुहानी इलाज

स्वाजि शमसुद्दीन अजीमी

ते० म क ह
म क ते० ह
क ते० म ह

६६ ६६ ६६
६६ ६६ ६६
६६ ६६ ६६

या रहीमु या अत्ताहु या गुरीदु
या रहीमु या अत्ताहु या गुरीदु
या रहीमु या अत्ताहु या गुरीदु

30/

issuu.com/healthmagazineindia/schizophrenia

अपने विषय पर एक मात्र

किताब

हर प्रकार की मानसिक मनोवैज्ञानिक और
शास्ररररर ररररर का

रुहानीइलाज

लेखक :-

इवाजा शमसुद्दीन अजीमी

अनुवाद :-

सालरर धामपुरी

प्रकाशक :-

नसीम बुक डिपो

C/85, जनकपुरी ररररी

प्रकाशकधिकार सुरक्षित

पहली बार

संकलन

मूल्य: ₹ 3000

अनुवाद-

अक्षर मुद्रक-

1994

तनवीरफारुकी

उप क०

सालिक धामपुरी

issuu.com/abdul23/niali/odisha

विषय सूची

पृथ्वीका	८	उदासी	२७
अमल और आभिल	१३	आम बुखार	२८
इलाजल और तादीन की	१४	वारी का बुखार	२८
जुकात		टाइफॉइड मोतीझारा	२९
आसेब का इलाज	१५	मीआदी बुखार खसरा	
आसमानी व जमीनी मुसीबतें	१६	सूखा	२९
मोतिपा और पड़ताल	१७	पसली चलना और नमूनिया	३०
निगाह की कमजोरी	१८	कान का दर्द	३१
आंख का नासू	१९	काली खासी	३१
मैगापन	१९	बिस्तर में पेशाब करना,	३२
आंखों के सामने धून	२०	मिट्टी खाना	
तैरता हुआ नजर आना		निद्र करना	३२
इस्तिस्नारा	२१	पेट में कीड़े	३२
इस्तिस्नान में कामयाबी	२१	दांत निकलना	३२
के लिए		सपने में डरना	३३
एलर्जी	२२	बच्चों का गुम हो जाना	३३
दिल का दौरा	२२	मूख न लगना, लफिन्जा	
एगर्जीमा	२३	कमजोर होना, पड़ने में दिल	
आंठों में याव	२३	न लगाना, बदन पर काले पच्चे	
आंठों की टी० बी०	२४	जुरी आदत से मुक्ति के लिए	३४
आंठों में छुरकी	२४	ब्लडशेयर, नर्वस ब्रेक डाउन	३५
आंठ उतरना	२४	मानसिक रोग	
पट्टों की कमजोरी	२५	एहतलाप से छुटकारे के लिए	३५
औलाद का नाफरमान होना	२६	बदन में दर्द	३६

विष्णु सांग का काटना	३७	बस में करना, रागी की	४८
सर के बाल लम्बे	३८	जोच करना तिल्ली कर इलाज	
करने के लिए		जवानों में बचपन की शकल	५१
जुड़ाये में कम सुनना	३८	जिरायान	५१
बहरापन दूर करने के लिए	३८	जिंसी कशिया पैदा करना	५२
बगल में गिलिंडिया	३८	जिंसी इच्छा(गिर मर्द,औरत)	५२
बेहोशी से होश में लाना	३८	जगू का तोड़	५३

बहन भाइयों का आपस में झगड़ना	३८	जिन्नों के लिए हानिगल	५३
बरकल के लिए	४०	जिस्मानों व सलामी योयताओं की तजदीद	५४
बदबख्सी के कारण परेशानी	४०	चोरी की आदत छुड़ाना	५४
बवासीर, बादी बवासीर,	४१	चलने फिरने की मजदूरी	५५

खूनी बवासीर के लिए सफेद दाग	४२	घोहरा सुन्दर व आकर्षक	५६
बीमासी सम्पन्न न आना	४२	गैस	५६
सिंचित का रोग	४२	सफर में हिफजल के लिए	५७
पेचिश	४३	दिमाग की रग फटना	५८

पातलियों में दर्द	४३	दिमागी कमजोरी	६१
पाशुरिया	४३	दाग पच्चे और घाव	६१
पिनी उजलना	४५	के निशान	
पूरी, पोशा, खुजली	४५	दांत पीसने की आदत	६२
पेशाब में खून आना, पेशाब	४५	दम्मा	६२

issuu.com/tehelapublish/nalishadishan

बार बार आना,
तबादला रुकवाना,
तबादला कराना

४७ दांत या दाढ़ में दर्द
सर में दर्द, सल्ला दर्द कहीं
भी हो कान में दर्द सीढ़ की
हड्डी में दर्द

गुदरी और कमर में दर्द	६६	दूध की कमी, धनेला	८२
लंगड़ी का दर्द		सोने का सपाट होना	८२
आमा सीसी का दर्द	६८	बेहरे और निरस पर	८३
हिप्पीरिया, जिपाब्नीस	६८	उने अधिक बाल	
जेहन का आउट होना	६८	हीस्टीरिया	८३
रग फटने से खून आना		गुस्से की ज्यादाती	८४
रसौली	७०	फालिस व लकवा	८५
सैयदना हुनूर सल्ल० की	७१	कर्ज की वस्तुओं के लिए	८६
जिपायल व कदम बोसी	७१	कैदी की रिहाई के लिए	८७
शादी के लिए	७१	कद में बाँधती	
शोहर का गुस्सा कम करना	७२	दुआ कुबूल कराने के लिए	८८
शोहर से बीवी की ज्यादाती	७२	कैन्सर	८८
शोहर और बीवी का लड़ना	७३	कुब या कूबड़	८०
शऊरी कमजोरी छलप होना	७४	खेती बाड़ी में बरकल	८१
लाऊन	७४	काम में दिल न लगाना	
हमल गिर जाना और बच्चों	७७	कुत्ते का काटना	
का पैदा होते ही मर जाना		कहू दाने और केचवे	८२
औलाद न होना (बांझपन)		गुर्दे की बीमारियाँ	८२
माहवासी का बिगाड़	७८	गंन, गठिया और घुटनों	८३

भूमिका

आदमी निंदगी के सारे मरहते छोटे-छोटे टुकड़ों में तै करता है जैसे एक सैंडिच का कोई फ्रैक्शन। आदमी की निंदगी चाहे सी साल की क्को न हो लेकिन वह इन्हीं मरहलों में बंटती रहती है। सोचने की बात यह है कि आदमी निंदगी बसर करने के लिए जेहन में वक्त के टुकड़े जोड़ता है और इन्हीं टुकड़ों से काम लेता है इन्हीं टुकड़ों के तूफान में जिनको हम सोचना या विचार करना कहते हैं हम या तो एक टुकड़े से आगे दूसरे टुकड़े पर आ जाते हैं या वक्त के उस टुकड़े से पलटते हैं।

इसे अच्छी तरह समझना चाहिए कि आदमी अभी सोचता है कि मैं खाना खाऊंगा लेकिन उसके पेट में गड़बड़ी है इसलिए वह यह इरादा छोड़ देता है कब तक वह इस इरादे पर कायम रहेगा इस बारे में उसे कुछ पता नहीं, कहने का मतलब यह है कि असंख्य विचार ही उसकी निंदगी के मिले जुले टुकड़े हैं जो उसे नाकाम या कामयाब बनाते हैं। अभी वह एक इरादा करता है फिर उसे छोड़ देता है चाहे फिन्टो में करता है कुछ घंटों में करता है या महीनों और सालों में छोड़ता है। बाताना यह है कि इरादा करके छोड़ देना आदमी की निंदगी का एक जरूरी हिस्सा है क्योंकि वह फिरती तौर पर आराम लेता हुआ है। बहुत सी बातें हैं जिन्हें आदमी मुश्किल, बीमारी, परेशानी, बेअमली, उकताहट, बेवैनी आदि कहता है इनके मुकाबले में एक ऐसी कैफियत है जिसे वह सुकून का नाम देता है। यह नहीं कहा जा सकता कि ये सारी हालतें हकीकी हैं बात यह है कि इनमें से कुछ चीजें केवल कल्पना पर आधारित हैं।

अपनी बात

शक और बे यकीनी के तूफान से पैदा होने वाली लगभग दो सौ बीमारियों और मसलों की जगह करके इस किताब में उनका हल दिया जा रहा है किताब "रुहानी इलान" में मिलने भी लोगों का इलान और मसलों का हल पेश किया गया है वे सब मुझे ओबोसियाह, कलन्दरिया और अजीमिया के सिलसिले से मिले हैं और इस फिक्क ने इन सब अमलों की जगह अदा की है मैं अल्लाह के बन्दों की सेवा के लिए इस रुहानी इलान को आम करता हूँ और सप्यदना हुनूर सल्ल० के वसीले से दुआ करता हूँ कि अल्लाह मेरी इस कोशिश को कुबूल फरमाए और परेशानियों से महफूज रखे।

ख्जाना शमसुद्दीन अजीमी

इन्सान के दिमाग की बनावट ही ऐसी है कि वह हर आसानी की तरफ दौड़ता है और हर मेहनत से जी चुराता है खुली बात है कि ये दो सिमतें हैं और इन सिमतों में आदमी हमेशा विचारों के जरिए सफर करता है उसकी हर हरकत का जरिया इन सिमतों में से एक सिमत हैं। होता यह है कि अभी हमने एक तदवीर की फिर उसे बनाया यहां तक कि वह मुकम्मल हो गयी उसकी सिमत भी सही थी लेकिन केवल दस कदम चलने के बाद हमारे जेहन में तब्दीली आ गयी तब्दीली आते ही विचार बदल गये नतीजे में सिमत भी बदल गयी चुनावों हम जिस मौजिल की तरफ जा रहे थे वह खत्म हो गयी हमारे पास क्या बाकी रहा ? टटोलना और टटोलकर कदम उठाना। याद रहे कि यह चीज यकीन और शक के बीच की राहों की था।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इन्सान का आधार वहम और यकीन पर है मजहब की इस्लाम में इसी को शक और ईमान कहा गया है। अल्लाह दिमाग में शक को जगह देने से मना करते हैं और जेहन में यकीन को पक्का करने का हुक्म देते हैं। कुरआन में इशारे है —“ला रयबा” “कोई शक नहीं” यह अल्लाह की किताब है और उसी को हिलायत बख्शती है जिसका यकीन गैब पर है। जिस शक को अल्लाह ने मना फरमाया है वही शक है जिससे आदम अलै० की बाज रखने का हुक्म दिया गया था आखिर कार शैतान ने बहकाकर यह शक आदम अलै० के दिमाग में डाल दिया जिसकी वजह से हज़रत आदम अलै० को जन्नत से निकाला गया। इसी जगह से आदम के दिमाग में दो सिमतों को जगह मिली यानि शक और यकीन।

इस हकीकत की रोशनी में इंसान के दिमाग का आधार यकीन व शक पर है यही वह शक और यकीन है जो दिमाग को नसों में हर वक्त अमल करता रहता है जितनी शक की अधिकता होगी उतनी ही दिमागी नसों में टूट फूट होगी। यह बताना बड़ा जरूरी है कि यही वे दिमागी नसों हैं जिनके तहत दिमाग के सारे कल पुर्जे

काम करते हैं और इन्हीं की वजह से इन्सानो जिन्दगी में हरकत

जितना फरेब को झुठलाना। इसकी मिसाल ऐसी है कि इंसान जो कुछ है वह अपने को उसके खिलाफ पेश करता है वह हमेशा अपनी कमजोरियां छिपाता है और उनकी जगह काल्पनिक खूबियां बयान करता है जो उसके अन्दर मौजूद नहीं है। सबसे बड़ी भुतिकल यह है कि वह जिस समाज में तर्बयत पाकर नवान हुआ है वह समाज उसका अकीदा बन जाता है। उसका जेहन इस कौबिल नहीं रहता कि उस अकीदे का अच्छी तरह जायजा ले सके। वह अकीदा यकीन की जगह ले लेता है हालांकि वह केवल एक फरेब है। सबसे बड़ी वजह इसकी यही है कि आदमी जो कुछ अपने को जाहिर करता है ऐसा है नहीं बल्कि उससे उल्टा है।

इस तरह की जिंदगी गुज़ारने में उसे बड़ी भुतिकलें पेश आती हैं ऐसी भुतिकलें जिनका हल आदमी के पास नहीं है इस जिंदगी में कदम-कदम पर उसे खतरा महसूस होता है कि उसका अमल बेकार हो जाएगा और वे नतीजा साबित होगा। कभी-कभी आदमी यह समझने लगता है कि उसकी पूरी जिंदगी बर्बाद हो रही है अगर बर्बाद भी नहीं है तो सख्त खतरे में है। यह सब उन दिमागी नसों की वजह से होता है जिनमें शक की वजह से टूट फूट हो रही होती है इसी टूट फूट की वजह से उसके इरादों और अमल में रुकावट पैदा होती है अमल वे नतीजा साबित होता है और उसे नुकसान पहुंचता है।

आदमी का दिमाग असल में उसके अधिकार में है वह नसों की टूट फूट को यकीन की ताकत से कम और ज्यादा कर सकता है टूट फूट की कमी से होने वाले नुकसान को बचाया जा सकता है।

आदमी भी एक जानवर है किसी तरह से उसने आग का इस्तेमाल सीख लिया और आग के इस्तेमाल से धीरे-धीरे दूसरे कामों की जुनियाद पड़ी। किताब “रंग और रोशनी से इंसान” में आदमी

के दो पैरों पर चलने की विशेषता बचान की गयी है। हमने उस किलब में यह बताया है कि जानवर और आदमी में रोशनी की बांट का अमल किन बुनियादों पर कायम है और बांट के इस अमल से ही आदमी और जानवर की निंदगी अलग होती है।

तारीख में ऐसा कोई दौर नहीं आया जब आदमी कुछ प्रति हजार से ज्यादा सेहत मन्द मौजुर रहा हो। असल में होना यह चाहिए था कि वह ज्यादा से ज्यादा रोशनी की किस्म और रोशनीयों का अमल मालूम करता लेकिन उसने इस तरफ़ कभी ध्यान नहीं दिया। यह चीज़ हमेशा पर्दे में रही। आदमी ने इस पर्दे में झोंकने की कोशिश इसलिए नहीं की कि या तो उसके सामने रोशनीयों का पर्दा ही मौजूद न था या उसने रोशनीयों के पर्दे की तरफ़ ध्यान ही नहीं दिया जो रोशनीयों के मिलने से सम्बन्ध रखते हैं। अगर आदमी ऐसा करता तो उसके दिमाग की टूट फूट में कमी हो सकती थी। इस हालत में वह ज्यादा से ज्यादा यकीन की तरफ़ कदम उठाता। बेकार के अफीवों और अयविश्वास का शिकार न होता। शक उसे इतना परेशान न करता जितना कि अब परेशान किए हुए है और उसके कामों में जो अमली रूकावट होती है वे कम से कम होती। लेकिन ऐसा नहीं हुआ उसने रोशनीयों की किस्म मालूम नहीं की। रोशनीयों की तबियत का हाल मालूम करने की कोशिश नहीं की। वह यह भी नहीं जानता कि रोशनीयां भी तबियत और वजूद रखती हैं और रोशनीयों में रूक्षान भी मौजूद है उसे यह भी पता नहीं कि रोशनीयां ही उसकी निंदगी हैं और उसकी हिफाजत करती हैं। वह तो केवल मिट्टी के पुतले को जानता है इस पुतले को जितने अन्दर अपनी कोई निंदगी नहीं जिसके लिए अल्लाह ने इशार्द फरमाया है कि वह सड़ी हुई मिट्टी से बनाया गया है और दूसरी जगह यह भी इशार्द फरमाया है कि वह मिट्टी खाली है।

अल्लाह ने कुरआन में इशार्द फरमाया है—“इंसान बचान न किये जाने वाली चीज़ था हमने उसके अन्दर अपनी रूढ़ डाल दी तो यह बोलाता सुनता समझता और महसूस करता इंसान बन गया।

रूढ़ की तारीफ़ यह है कि वह रब का हुक्म है मतलब यह है वह हो जाता है। अल्लाह के इस इशार्द को न जानना ही वहम और शक को बढ़ाता है नतीजे में ईमान व यकीन टूट जाते हैं

कुरआन ने कौम को एक फर्द की हैसियत दी है चुनांचे उसके साथ भी यही अमल होता है जो फर्द के साथ होता है कौम में अगर यकीन के मुक़ाबले शक ज्यादा हो जाए तो यह अमल दो रूख़ अपना लेता है जब उसका रूख़ तरफ़ों की तरफ़ होता है तो आसमानो आफ़तों के आने का डर होता है और जब पतन की तरफ़ होता है तो ज़मीनी आफ़तें आती हैं।

आसमान से जब आफ़तें उतरती हैं तो बिखर कर पूरी कौम के जेहन व निस्स की प्रभावित करती हैं उनसे बचने के सिवाए इसके कोई तरकीब नहीं कि कौम के यकीन की राह एक हो अलग अलग न हो यही नबियों का सबक़ है। जब कौम ग़िरोहों में बांट जाती है और उनका यकीन अलग अलग होता है तो शक ज़मीन पर फैल जाता है। इसकी वजह से ज़मीनी आफ़तें हरकत में आ जाती हैं और फैल जाती हैं चुनांचे सैलाब, जलजले, बीमारियां आदि आती हैं कभी-कभी आपसी लड़ाईयां भी होती हैं जिससे कौम और फर्द का दिमागी सन्तुलन तबाह व बर्बाद हो जाता है जो तरह तरह की बीमारियां फैलने की वजह बन जाता है।

अमल और आमिल

अमल करने वाले किसी अमल की तृकार करके अपने दिमाग को बार बार हरफ़त देते हैं यहाँ तक कि वे इरादे पर क़बू पा लेंते हैं मरक़ के ज़रिये उनकी मलाईत जितनी बढ़ती है उतना ही उन्हें अपने इरादे की ताक़त से काम लेंने में आसानी हो जाती है इस तरह के आदमी आप से आप भी ऐसे ही पैदा होते हैं उनकी तबियत आप से आप इस तरफ़ मुड़ जाती है और छोटी उम्र से इन चीज़ों को समझे बिना बार बार इस्तेमाल करते हैं पहले से इन्हें यह पता नहीं होता कि हमारे अन्दर यह विशेषता मौजूद है बल्कि इस विशेषता

के बार बार इस्तेमाल से जो वे केवल खेल के तौर पर करते हैं कामयाबी होने लगती है। धीरे धीरे उन पर यह राज खुलने लगता है कि विचार और इरादे से काम लिया जा सकता है जब वे इस पर अमल करते हैं और बार बार इसे दोहराते हैं और नतीजा अच्छा सामने आता है तो वे अपने को अभिल सम्बन्धने लगते हैं लोग भी इन्हें अभिल के नाम से पुकारते हैं।

इजाजत और ताबीज की ज़कात

हर अभिल को इस बात पर यकीन होता है कि मैं जिसे यह ताकत बख्शा दूंगा वह मेरी तरह अभिल हो जाएगा। बार बार देखा गया है कि किसी अभिल ने किसी को अपना अमल बख्शा दिया है जिसे बख्शा है उसकी तबियत भी वही बन जाती है जो अभिल की है। एक तबियत का दूसरी तबियत में मिल जाना भी आदमी की नफ़ीसियाती आदत है असल अभिल तो बहुत ही कम होते हैं अलबत्ता बख़्तो हुए अभिल काफी पाए जाते हैं। बख़्तो हुए अभिलों के यकीन में यह बात बैठ जाती है कि अगर हम ऐसा करेंगे तो ऐसा होगा। हम यह बात बता चुके हैं कि कामयाबी का आगार यकीन की मजबूती पर है।

इस किताब से फायदा उठाने के लिए चाहें आप ही रोगी हों या किसी का इलाज करें ज़्यादा से ज़्यादा बार पढ़ते व बार में दरुद शरीफ़ पढ़ें और एक सौ एक बार यिसिल्लाहि अल वासिऊ जल्ला जलालु पदकर ऋषों पर दम करके तीन बार चेहरे पर हाथ फ़ीरे अब मेरी तरफ़ से उसे इस किताब के अमलों की इजाजत है।

ताबीज आप इस्तेमाल करने या किसी को सिख़ाकर देने की सूरत में ताबीज की ज़कात दो रुपए दान कर दें या उस रोगी को जिसे ताबीज दिया गया है यह हिदायत कर दें कि वह ताबीज की ज़कात दो रुपया दान कर दें।

आसेब का इलाज

आसेब एक ऐसा रोग है जो दिमाग से संबन्ध रखता है इसकी अधिकतर वजह यह होती है कि खून में मिठास के मुकाबले नमक की मात्रा बढ़ जाती है। यह खून सारे जिस्म में से दौर करके जब दिमाग की दो खरब नलों में दोड़ता है तो दिमाग की वे नसे जो इन्सान के अन्दर शऊरी हवास बनाती है प्रभावित हो जाती है नतीजे में रोगी कभी पर वज़न महसूस करने लगता है और उसकी नज़रो के सामने ऐसी चीज़ या सूरते आने लगती हैं जिन्हें वह समझ नहीं सकता और न उनका आपस में सम्पर्क या सम्बन्ध रख सकता है। जैसे यह कि उसे किसी औरत या मर्द का सामा नज़र आता है चूँकि इस तरह ग़ैब में देखना उसकी आदत नहीं है इसलिए वह डर जाता है और ऐसी हरकतें करने लगता है जो शऊरी सीमाओं से बाहर होती है। कभी कभी यह सब इतना गहरा होता है कि शऊर में ठहराव पैदा हो जाता है और उसके हवास ला शऊरी हरकतों के तहत हो जाते हैं अब वह कोई बात जमीन की कहता है कोई आसमान की। कभी बेमेल हो जाता है और आप ही होश में आ जाता है कभी वे बात पर हसता है और कभी किसी वजह के बिना ही रोने लगता है। यह भी होता है कि भटकी हुई रूखें जिनकी तबियतों में तोड़ फोड़ होती है मरने के बाद ऐसे लोगों की तलाश में रहती हैं जो दिमागी तौर पर कमजोर हो और जब इन्हें अपने पूरे मकसद के लिए ऐसा शिकार मिल जाता है तो वे उसके सामने आ जाती हैं और उसके शऊर को रोक देती हैं। इसका इलाज यह है कि एक कागज़ पर

या महला ईला -या समनाईला
या मीकाईला - या निबराईला

يَا مَعْلَىٰ يَٰمَعْلَىٰ
يَا مَعْلَىٰ يَٰمَعْلَىٰ
يَا مَعْلَىٰ يَٰمَعْلَىٰ

लिखकर कागज को मोड़ कर बत्ती बना लें। इस मुड़े हुए कागज को रुई में लपेट लें। रुई और कागज की बनी बत्ती को घी या जैतून के तेल में ऐसी जगह जलाएं जहां से रोमी को पुआं पड़ने लगे यह अमल-रात को सोते वक़्त करना चाहिए। सुबह सूरज निकलने से पहले —कुल आऊजू बिदिबल फलक की पूरी सूरः पढ़कर एक प्याली पानी पर दम करके नहार मुंह पिलाएं। दो हफ़्ते तक नमक बिलुल न दें। दो हफ़्ते के बाद एक वक़्त तला नमक कम से कम और थोड़ा थोड़ा इस्तेमाल कराएं। तीन वक़्त असली शहर का इस्तेमाल भी बढ़ा जरूरी है।

आसमानी व जमीन की आफ़तों से बचे रहने का तरीका

जब कोई कौम अल्लाह के बनाए हुए शानून से मुह मोड़ती है और बुराई और मलाई को जानते हुए भी कानून को तोड़ती है तो उसके अन्दर यकीन की ताक़त कम और कम से कम हो जाती है जैसे जैसे यकीन कमजोर पड़ता है उसके अफीदों में भी बिगाड़ पैदा होता है और इस बिगाड़ की वजह से कोई कौम अंधविश्वास का शिकार हो जाती है। अंधविश्वास की शिकार से इस्लाम के अन्दर वक़्तसे जन्म लेते हैं इस वक़्तसे की वजह से उसके अन्दर लालच और हवस इतनी बढ़ जाती है कि जिंदगी का दारोमदार अल्लाह की बनाय साधनों पर रह जाता है यही वह वक़्त होता है जहां से कौमों का पतन शुरू होता है और कुरुरल का — चूँकि ऐसी कौमों को सहन नहीं करता इसलिए उसके ऊपर आसमानी व जमीनी आफ़तें नाज़िल होती है। इरादा व अमल के साथ वे यकीनी की ख़त्म करने की कोशिश करती चाहिए और इन आफ़तों से बचे रहने के लिए ६ इंच चौड़े और १२ इंच लम्बे सफ़ेद आटे कागज पर काली चारद चमकदार रोशनी से बहुत गुन्दर लिखकर या लिखवाकर यह नक्शा अपने घर में लटकवा दें —

issuu.com/abdul23/majidh/urdu/englisha

يَا مَعْلَىٰ يَٰمَعْلَىٰ
يَا مَعْلَىٰ يَٰمَعْلَىٰ
يَا مَعْلَىٰ يَٰمَعْلَىٰ
يَا مَعْلَىٰ يَٰمَعْلَىٰ
يَا مَعْلَىٰ يَٰمَعْلَىٰ

निदिमल्लाहिरहमानीरहीम

या हफीनुया हफीनुया हफीनु

या बदीअऊ या बदीअऊ या बदीअऊ

या बदीअ ऊल अजादीब बिल ख़ैयार या बदीअऊ

(अगर छुटा न करे कोई ववा फैल गयी हो तो यही नक्शा सफ़ेद चीनी की तीन लेंदों पर जाफ़रान और गुलाब के अर्क से लिखे और सुबह व शाम और रात को पानी से धोकर सारे घर वाले पिएं। पीने में पानी पका कर इस्तेमाल किया जाए।

(नोट—) अगर जाफ़रान न मिले या खरीदने की ताक़त न हो तो छाने का ज़रद रंग इस्तेमाल करें।)

आंखों की बीमारिया

यह बीमारी शज़िमे की खराबी या बाहरी बिगाड़, गर्मी, सर्दी, चोट, धूल, घुवा लगने और नज़ला रहने से होती है।

मोतिया और पड़वाल

हर नमाज़ के बाद ययारा बार "अलहयुल कय्यम अल हक़ूनुल" पढ़कर आंठों उगलियों के पोरों पर दम करें और आंखों पर करें।

रतोंद

रतोंद उस बीमारी को कहते हैं जिसमें अंधेरे में या रात को चींने या तो नज़र नहीं आती या धुंधली नज़र आती है ऐसी सूरत

में—या अमा नबीला या अमा नबीला (यह एक बार हुआ) मयारा सौ बार पढ़कर एक पात्र साफ कलोजी पर दम करे और सुबह एक एक चुटकी ताना पानी के साथ खाए ।

निगाह की कमजोरी

مُعِينَةُ الْعَاظِرِ مَاءَاتِ الْبَلَدِ الْبَلَدِ الْبَلَدِ

“मुओी नुस्सलाम भिअतुल हीन अस्साबिल गिलापुल मरियु”
सुबह सूरज निकलने से पहले तीन बार पढ़कर एक बड़े प्याले पानी पर दम करें । इस प्याले में से तीन घूट पानी अलग करके नहरा मुंह पी लें और बाकी पानी को सोधे हाथ के चुल्लू में ले कर इस पानी में आंख डाल कर घों लें और बन्द करें । पानी जब गर्म हो जाए तो पानी फिर से गमले या किसी बियारी में डाल दें अब दूसरी चुल्लू भर लें इस तरह पहले वाली आंख को घोंएं और दाएं आंख की । यह अमल नब्बे दिन करना है अल्लाह की मेहरबानी से निगाह की कमजोरी दूर हो जाएगी

आंख का नरिंधा

इस बीमारी में आंख के ऊपर एक झिल्ली आ जाती है और नजर इस झिल्ली में दब जाती है इसकी वजह एक खास गैस होती है पहले यह गैस दिमाग पर असर डालती है और उसके बाद आंख के ऊपर असर करती है असल में वह गैस ही झिल्ली बनकर आंख के ऊपर पर्दा बन जाती है ।

स्टेनलेस स्टील का एक प्याला और एक नयी छुरी तो प्याले में हिस्टलड वाटर या घर में पकाया हुआ ठंडा पानी भर दें । हाथ धोकर और कुल्फी कारके तीन बार

رَبِّهِ النَّبِيِّ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ
وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

इलाहा इल्लल्लाहु या रहीमु या अल्लाहु या मुरीदु या रहीमु या अल्लाहु या मुरीदु पढ़ कर एक फूक मारे और दूसरी फूक छुरी पर । अब छुरी से पानी को काटे यानि एक मिन्ट तक पानी में कास (X) बनाते रहें । दोबारा फिर तीन बार पढ़ कर पानी और छुरी पर दम करें और पानी को एक मिन्ट तक काटे । इसी तरह तीसरी बार भी यही अमल दोहराएं यह पानी दो दो औंस हर चार घन्टे के बाद पिलाएं । इसी तरह कि सूरज निकलने के बाद से इशा तक यह पानी पूरा हो जाए । इलाज में मुद्दत चाहिए लेकिन कामयाबी यकीनी है ।

आंख का नासूर

आंख के कोण में फुली की तरह का दाना जो रिसता रहता है उसे आंख का नासूर कहते हैं । चने की दाल लीनिप (दाल से मुराद चने का आधा हिस्सा) और एक पत्थर लीनिप । ऐसा पत्थर जो नदियों के किनारे आम तौर पर मिल जाता है यह पत्थर काला सफेद मूगू और कभी कभी नक्श निगार से भरपूर और चिकना होता है मोटाई की कोई कैद नहीं । पत्थर पर पानी डाल कर एक बार-----‘अल्लाहु नूस्समवाले वल अर्जि’ पढ़ कर दम करें और चने की दाल को पत्थर पर घिसें । दाल घिसने से एक लेप सा बन जाएगा । इस लेप को जरत की सलाई से सुबह शाम कुछ दिन आं र में लगाएं ।

भैंगापन

जिस वक्त रोगी बिल्कुल सीया देख रहा हो उसकी आंख बन्द करा दें और उसकी उस आंख पर जो भैंगी है अन्धेरे में हल्की सी पट्टी बांधे पट्टी बांधते वक़्त यह कल्पना करें कि मैं और रोगी अंधे के बीच हूँ । यह पट्टी २२ दिन तक बांधी रहे । पट्टी मैली होने पर अन्धेरे में बदल दें । पट्टी बांधते वक़्त यह ख्याल रखना जरूरी है कि नजर सीधी रहे यानि आंख की पुतली बीच में हो २२

दिन के इस अमल से आँख का भ्रमणन पूरी तरह खत्म हो जाता है।

आँखों के सामने खून तैरता हुआ नज़र आना

यह बीमारी जो दिमाग के रेशों में पानी भर जाने से होती है इसके लिए दवा और हुआ यह है—

दक्खिनी पित्त एक छटाक, चीनी एक छटाक दोनों को साफ़ हलन दस्त में बारिक पीस लिया जाए। छः माशा रोज़ सोते वक़्त ताजा पानी के साथ कम से कम २० दिन तक इस्तेमाल करें और इसी के साथ—'अर्र ज़ाअतु अमा नबीतु' सफ़ेद चीनी की तीन प्लेटों पर लिख कर सुबह शाम और रात को एक प्लेट पानी से पीकर पिए। प्लेट लिखने का तरीका यह है—

"पाक साफ़ सफ़ेद चीनी या शीशे की तीन प्लेटें सामने रखकर म्यारह बार या हफ़ीज़ पढ़ कर तीनों प्लेटों पर दम करें। फिर म्यारह बार 'या शाफी' पढ़ कर तीनों प्लेटों पर दम करें। तीसरी बार 'या काफी' पढ़ कर प्लेटों पर दम करें और ज़ाफ़रान को गुलाब के अरक में मिला कर या ज़र्द रंग गुलाब के अर्क में घोल कर इस रोगनाई से प्लेटों के इबात लिखी जाए।

गैबी मदद

अगर आर्थिक हालात इतने ख़राब हो जाएं कि सुधार की कोई सहाय नज़र न आए तो केवल इन हालात में यह अमल पढ़ने की इजाज़त है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّْهَا الْمَلَأَى
يَا أَيُّْهَا الْمَلَأَى
يَا أَيُّْهَا الْمَلَأَى
يَا أَيُّْهَا الْمَلَأَى

issuu.com/ahelbathilfi/finali/cdlissha

या ईल या ईलाह या अल्लाह
या फ़लाहु या फ़लाहु या फ़लाहु
या जिबाइल या भीकाइल या समनाइल या महलाइल
आमी रात बीतने के बाद जुनु करके मुसल्ले पर बैठ कर ३०० बार पढ़ें और हालात ठीक होने की हुआ करके बात किए बिना सो जाएं ज्यादा से ज्यादा २२ दिन में अल्लाह की तरफ़ से गैबी मदद हासिल हो जाएगी। इसका तरीका कुछ भी हो जो अल्लाह परसन्द फ़रमाए।

इस्तिख़ारा

कोई काम करने से पहले इस्तिख़ारा करना सुन्त है। इस्तिख़ारा असल में अल्लाह से मददया करना है।

أَسْأَلُكَ يَا رَبِّ الْعَالَمِينَ بِالْمَلَكِ الْمَلَكِيِّ
وَبِالْحَقِّ الْمَقْدُوسِ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُّخْتَلِفٍ
وَبِالْحَقِّ الْمَقْدُوسِ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُّخْتَلِفٍ

इक़तह अफ़ुतह या बदीअल अनाइबि बिल ख़ैयारी या बदीअक २२ बार, दलद ख़िज़री सल्लल्लाहु तआला अला हबीबिहि मुहम्मदिक्कसल्लम० पहले और बाद में एक एक बार पढ़ें। इसके बाद दाएँ करवट सेट कर चेहरे के नीचे दाएँ हाथ की हथेली रख कर सो जाएं। सोते वक़्त जो बात मालूम करना हो उसे ज़हन में दोहराए। ज्यादा से ज्यादा तीन दिन के अन्दर अपने में या जागते में जो कुछ मालूम किया गया है ज़ाहिर हो जाएगा।

इस्तिहान में कामयाबी के लिए

इशा की नमाज़ के बाद पहले और बाद में म्यारह म्यारह बार दलद शरीफ़ के साथ तीन सौ बार 'अल मलिकुल कुददुसु अलमलिकुल कुददुसु पढ़ कर दिल की गहराई के साथ अल्लाह से हुआ करें पर अमल इस्तिहान का नतीजा आने तक करते रहना चाहिए।

इलर्जी

साल रंग के रेशमी कपड़ों के छोटे छोटे टुकड़े किसी जगह फँसा कर रख दें। इलर्जी का रोगी इन रसोंवर कपड़ों के टुकड़ों में से कोई एक टुकड़ा उठा ले। उस टुकड़े पर काली तार कशी से—(या मोहलाई ल या समलाई ल या भीकाइल या जिलई ल)

कशीया काँति से लिख कर रोगी के गले में डाल दें। मगर गले में पहनने या बाजू पर बांधने में कोई स्कावट हो तो यह नशुआ तकिए के अन्दर रखें लेकिन यह सावधानी करना ज़रूरी है कि यह तकिया कोई दूसरा आदमी इस्तेमाल न करे।

(नोट—इलर्जी के होने की कोई खास वजह है नहीं की जा सकती। कोई आदमी हवा से, कोई दवा, खुश्बू से या किसी सख्त दवा के बाद भी एलर्जी हो जाती है। वजह कोई भी हो सबके लिए यही इलाज है।)

दिल का दौरा

दिल का दौरा दिल की कमजोरी की वजह से हो या निस्समानी कमजोरी की वजह से, खून का दबाव बढ़ जाए या तेज दबाव इस्तेमाल करने से हो, सबका इलाज एक है लेकिन तरीका अलग-अलग है। बिस्मिल्लाहि रहमानी रहीम

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

‘या हय्यु कल्ता कुल्ती शयदन या हय्यु बाअदा कुल्ती शयदन तीन बार पढ़कर पानी पर दम करके पिलाए।

सदमें की वजह से अगर दिल की शिकायत पैदा हो गयी हो तो इस अमल को कागज पर लिख कर शहर में डाल दें और यह शहर रोगी दिन में कम से कम तीन बार इस्तेमाल करे।

हाई बिलड प्रेशर की वजह से हो तो नमक पर दम करके एक शीशी में रख दें और खाना खाते वक़्त यह नमक छिड़क कर खाए। अगर ऐसे हालात न हो कि यह मालूम किया जा सके कि

दिल के दौरे की वजह क्या है तो एक बड़े कागज पर माट कलम से लिखें

गले पर चिपका दें। रात को सोने से पहले इस गले को ऐसी जगह रखें जहाँ कोई और आदमी न हो। गहरी निगाह से ‘अल्लाह’ लिखें पर नज़र जमाएँ और आँखें बन्द करके यह कल्पना करें कि अल्लाह का नूर बारिश की तरह हमारे ऊपर नाज़िल हो रहा है लगभग १० मिनट बाद आँखें खोल दें और बात किये बिना सो जाएँ। कुछ दिन के इस अमल से दिल के दौरे की तकलीफ़ अल्लाह की मेहरबानी से हमेशा हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी।

एगजिमा

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

एक बड़े और मनबूत कागज पर मोटे कलम से—“फी नबहिन राहा अहा निघाति” लिख कर निस्स के जित हिस्से पर एगजिमा हो वहाँ कागज मर्से। जब कागज कमजोर हो जाए जला दें कुछ दिनों तक नमक, सुख मिर्च, गरम मसाला और किसी तरह के गोयल की बोटी न खाए गोयल में अंडा और पखली भी शामिल है।

आंतों की बीमारियाँ

आंतों में घाव

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
اِنَّ لَاسِلَ فِي مَرْحَلَةِ الْبَحْرِ فِي الْاَلَدِ

बिस्मिल्लाहि रहमानी रहीम

“अल सलासिलू फी मरजाअलि बाहरयदि या अल्लाहु”

तीन प्लेटों पर लिख कर रोज़ सुबह शाम और रात को पाना से घो कर चालीस दिन भिज दें। खाने के लिए किसी हकीम या डाक्टर से परामर्श करें।

आंतों की दिक्

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الرَّحْمَةُ الْإِيمَانُ الْكِتَابُ الْبَيْتُ الرَّحِيمُ الرَّحِيمُ

बिस्मिल्लाहि रैहमानि रैहीम

'अलिफ़ लाम टा तिलका आयातुल क़ितायिल मुबीन० अरैहीम अरैहीम अरैहीम' सूरज निकलने से पहले २२ बार पढ़कर एक प्याली पानी पर दम करके नहरा मुंह ७ दिन तक पिए ।

आंतो में खुश्की

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الرَّحْمَةُ الْإِيمَانُ الْكِتَابُ الْبَيْتُ الرَّحِيمُ الرَّحِيمُ

"नब्बत यदा अभी तरह० खिल० मा अगना अन्हु माजुड व मा कस-ब० समयसला नारन जाता लहबि-वम-टा अगुड०" इशा की नमान के बाद एक सौ एक बार पढ़कर पानी पर दम करें। चौबीस घंटे में पाँचों के लिए 'नैवल एक ही पानी इस्तेमाल करें। मतलब यह कि इतने में पानी पर दम किया जाए जो दिन और रात की जरूरत के लिए काफी हो। चौबीस घंटे बीत जाने के बाद अगर पानी बचा रहे तो उस पानी को किसी कियारी या पेड़ की जड़ में डाल दें और अगले चौबीस घंटे के लिए नया पानी तैयार करें। इलाज की मुदत २२ दिन है इस बीच कोई दूसरा पानी न पिया जाए।

आंत उतरना

रात को सोने से पहले २१ बार 'वर फ़म दरनागुडम' पढ़कर पेट पर दम करें। इलाज की मुदत ६० दिन है। इस बीच लंगोट बांधने का इन्तेजाम किया जाए।

issbsharifi/abdul23/niali/odisha

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الرَّحْمَةُ الْإِيمَانُ الْكِتَابُ الْبَيْتُ الرَّحِيمُ الرَّحِيمُ

जल-पर (पेट में पानी भर जाना)-देखने में आया है कि इस बीमारी का इलाज नहीं होता अलबत्ता एलोपैथी में स्यूड (सिरेज) के जरिए पेट से पानी निकालना एक तरीका है लेकिन कुछ दिनों बाद पेट में पानी फिर भर जाता है और फिर निकाल दिया जाता है यह कोई मुस्तकिल इलाज नहीं है इस फकीर ने इस्तरका के कई योगियों का इलाज किया है अल्लाह की मेहरबानी से रोगी को पूरी तरह और मुस्तकिल सेहत नसीब हो जाती है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الرَّحْمَةُ الْإِيمَانُ الْكِتَابُ الْبَيْتُ الرَّحِيمُ الرَّحِيمُ

एक कागज पर बिस्मिल्लाहि रैहमानि रैहीम — व इस्मुहमा अकबर० दिन नक़्क़ी अहिमा लिख कर फलीते के तौर पर जलाकर रात की सोते वक़्त या दिन में एक बार घुमा लें। दूसरा काम यह करना है कि रोगी ज़मीन के ऊपर चित बैठ जाए आखि बन्द कर लें और दोनों हाथ सर पर रखे तीन बार ऊपर लिखी अरबी की इबारत पढ़ें और यह कलना करें कि पेट का पानी रोशनी बनकर पैरों के जरिए ज़मीन में जा रहा है यह इलाज उस वक़्त तक जारी रखना चाहिए जब तक बीमारी से पूरी तरह नज़ात हासिल न हो जाए।

पेटों की कमजोरी

इसकी वजह बहुत सी हैं जैसे लगातार उलझन, उकाताहट, हिमागी कशेमकश, बहुत ज्यादा हिमागी थकन, नींद की कमी, पेट बराबर खराब रहना, जलवायु और माहौल की पुटन, डर व दहशत, रूखानी मूल्यों से अलग रहना, कुनाअत का न होना, शक वसवसा और वहम, हिफ़जत की कमी का अहसास आदि।

सबसे पहले यह जरूरी है कि इन्सान अपने अन्दर कनाअत पैदा करे और अपने मामलों को अल्लाह पर छोड़ने से मुग़ाद यह नहीं कि आदमी हाथ पैर छोड़ कर बैठ जाए। सही तरीका यह है कि आदमी अपने अंगों का वजीफा पूरा करने के बाद नतीजा अल्लाह पर छोड़ दे और इलाज के बतौर केवल एक घूट पानी पर दम करके सुबह नहार मुह पी जाए।

अंगों का नम जाना
बिरिमल्लहिरहमा निररहीम
'रमीपु फर्कुल हाप'

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
رَبِّهِمْ وَرَبِّ الْعَالَمِينَ

७८ ११ १८ २६ ३१ ४१

खाने के ज़रूरी रंग को पानी में घोल कर रोशानाई बना लें इस रोशानाई से ऊपर बना हुआ ताबीज प्लेट पर लिख कर सुबह, तीसरे पहर और रात को पानी से पोकर पिलाएं। यही ताबीज इसी रंग से चिकने और मोटे एक बालिशत कानाज पर लिख कर प्रभावित अंग पर दिन में तीन बार घड़ी की सुइयों की गतिश के अनुसार मलें। खाने में सर्द और बारी चीजों व नमक से परहेज जरूरी है।

औलाद का ना फरमान होना

यह बात जरूर ध्यान देने की है कि बच्चे जेहन्नी तौर पर आ कुछ कुबूल करते हैं उनमें आपा हिस्सा मां बाप के रखिए और घर के माहिल से बनता है और आपा हिस्सा बाहर के माहिल से। अगर घर का माहिल सुकून वाला न हो और भां बाप लड़ते झगड़ते रहें तो बच्चे भी मां बाप की आदतें अपना लेते हैं फिर यह आदत उनमें पक्की हो जाती है पहले बहन भाई आपस में लड़ते हैं फिर मां बाप से लड़ना शुरू कर देते हैं क्योंकि मां बाप में जेहन्नी मेल मिलाप नहीं होता इसलिए वे बच्चों की आदत से नज़रें बचा लेते हैं नतीजे में बच्चे गुस्ताख होकर ना फरमान हो जाते हैं ऐसे मां बाप जिनमें जेहन्नी मेल मिलाप होता है या अपने मल्लों की कड़वाहट को औलाद के सामने जाहिर नहीं होने देते उनकी औलाद मां बाप का कहना मानने वाली होती है बेजा लाइ प्यार या बात वे बात

पर सच्ची भी बच्चों को बागी बना देती है यह मसला बढ़ा तकलीफ़
isshahkiqanbalbahi/latiati/otai'sha

अपने रखिय में तर्दीली के साथ ना फरमान औलाद के लिए
अगर यह अमल कर लिया जाए तो इसकी बरकत से औलाद फरमाबरदार बन जाती है। रात के वक़्त बच्चा या बड़ा जब गहरी नींद सो जाए सरहाने खड़े हो कर एक बार — बिरिमल्लाह

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
رَبِّهِمْ وَرَبِّ الْعَالَمِينَ

'बाल हुआ कुरआनुमजीद० फी तवाहिमक, फूज० मां या बाप इतनी आवाज से पढ़े कि सोने वाले की नींद खराब न हो। अमल की मुदत २१ दिन और ज्यादा से ज्यादा २२ दिन है।

कमतर समझने का अहसास

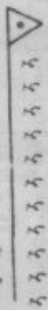
यह इरादे की ताकत की कमजोरी से पैदा होती है जब यह समझा जाता है कि हम किसी आदमी के सामने नहीं जा सकते, बात नहीं कह सकते हम दूसरे लोगों से कतराते हैं या दूसरे लोग हम से कम तर हैं ये सारी बातें कमजोर कुबले इरादी को जाहिर करती है सोच सही हो या गलत दोनों का सम्बन्ध दिमाग की उन नसों से है जो जिंदगी में काम आने वाले बाले जन्मों को पैदा करती है और जन्मे आदमी की कुबले इरादी के तहत होते हैं इसलिए जब किसी इन्सान के अन्दर जन्मे उसके इरादे के तहत नहीं रहते तो उसकी जिंदगी में कमी पैदा हो जाती है इस कमी का दबाव ही असल में एहसास कमवरी की सूरत में जाहिर होता है।

बड़ा ही आसान और सरल इलाज यह है कि आदमी हर वक़्त बुनू से रहे। बुनू से रहने में इस बात का ध्यान जरूरी है कि पेशाब पाखाना या हवा को सोका न जाए क्योंकि ऐसा करने से भी दिमाग पर जोर पड़ता है जरूरत पड़ने पर दोबारा बुनू कर लिया जाए।

उदासी

यह बात हर आदमी जानता है कि कोई आदमी न तो हमेशा

खुश रहता है और न हमेशा दुखी लेकिन यह भी देखने में आया है कि बार बार की नाकामी आदमी को तोड़ कर रख देती है और उस पर उदासी छा जाती है ऐसे हालात से हिमांग को आजाद करने के लिए नीचे दिया हुआ नक्शा जाफरान और गुलाब के अर्क से लिख कर योगी के गले में पहना दिया जाए या बानू पर बांध दिया जाए तो उदासी खत्म हो जाती है।



नोट- कागज पर नक्शा लिखने से पहले दोबार और तावीज लिखने के बाद एक बार बिस्मिल्लाहि अलवासीक जल्ला जलाजुहु या बदी अल अजाबिब बिल खैरि या बदीअऊ प्रह कर दम किया जाए और दम करते वक़्त यह कल्पना की जाए कि तावीज लिखने वाला और योगी दोनों अर्क के नीचे खड़े हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
مَدَامُ الْوَالِدِ الْوَالِدِ الْوَالِدِ الْوَالِدِ

बुखार

आम बुखार

बिस्मिल्लाहि रहमानि रहिम

“बुखल्लहुल खालिकुल बारीउल मुसबिल नहुल असमा उल हुस्ना” कागज पर लिख कर बिना मोमनामा के सफ़ेद कपड़े की धुन्नी में बांध कर गले में डाल दें। बुखार उतरने पर तावीज और कपड़ा दोनों जला दें।

बारी का बुखार

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
مَدَامُ الْوَالِدِ الْوَالِدِ الْوَالِدِ الْوَالِدِ

issuu.com/abdul123/pinalli/gdisha

‘कुलना या नारकूनी वरदब् सलामन अल्लो इब्राहिम बेरी की लकड़ी या किसी मोमी कागज पर लिखकर सफ़ेद धुन्नी में बांध कर गले में डाल दें। बारो चाहे एक दिन की हो दो दिन की हो या तीन दिन की जब इससे नजात मिल जाए गले से निकाल कर जला दें।

टाइफाइड, मोती झारा, मीयादी बुखार, खसरा

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहि रहमानि रहिम
या हफीजु या हफीजु या हफीजु
या शाफी या शाफी या शा फी
मुहसुसुहु कुदरस

जुदे के रंग को पानी में घोलकर रोशनार्ई बना लें और इस नक्शा को प्लेट पर लिखकर इस्तेमाल करें। यह पानी हर चार घंटे के बाद बड़ों को एक बड़ा घमचा और बच्चों को एक छोटा घमचा पिलाएं। अगले दिन फिर नयी प्लेट लिख कर इसी तरह अमल करें तीसरे दिन भी यही अमल दोहराएं दवा और खाना तीन दिन तक मना है।

बच्चों की बीमारियां और

उनका इलाज

सूखा

बच्चों का ख्याब में डरना, ज्यादा रोना, चीख चीख कर रोना, कोपना, छुर को या दूसरों को नोचना, बिना किसी वजन के बार

۴۴۴۴۴۴۴۴

पसली चलना और नमूनिया

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَا حَبِطُطُ يَا حَبِطُطُ يَا حَبِطُطُ
يَا فَنَاتُطُ الْمُهَيَّمِ الْعَزِيزِ
يَا شَانِي يَا شَانِي يَا شَانِي
الْحَيِّ الْقَيُّومِ

अनादयुग कयुग

घापी की तथशर्तों पर जाहरान और पानी से लिख कर एक मा दो घूट दूध से घो कर तीन वज्रत भिलां। सावधानी के तौर पर दो तीन दिन तक भिलाते रहना चाहिए ताकि नमूने का असर पूरी तरह खत्म हो जाए।

وَلِأَعُوذُ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ

काशी खांसी

या हफीनु या हफीनु या हफीनु
कस कस कस

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَا حَفِيطُ يَا حَفِيطُ يَا حَفِيطُ
تَضُ تَضُ تَضُ

मालि आतुलमाअ

विस्तार पर पेशाब करना

कभी कभी बच्चे बड़ी उम्र तक बिस्तर में पेशाब करते हैं। इसका इलाज यह है कि जब बच्चा रात को गहरी नींद से जाए तो उसके सरहाने की तरफ बैठ कर इतनी आवाज से कि बच्चे की नींद खराब न हो एक बार सूर्य: बकरा की पहली आपत्त अतीत। लगभग मीमांसे से गुणितना विल गणित। तर्क २१ दिन तक पढ़ें।

मिददी खाना

बहुत सी औरतों को भिट्टी खाने की आलात पड़ जाती है
 बच्चे भी भिट्टी खाते हैं इससे तरह तरह की बीमारियाँ पैदा हो
 بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

जाती हैं तीन बार-----बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

‘फारम मुरखन’ पढ़कर दूध पर दम करके बच्चे को पिलाए। जब भी दूध पिलाएँ यह अमल करे २२ दिन के अन्दर अन्तर मिट्टी खाने की आदत छूट जाएगी। अगर माँ को मिट्टी खाने की आदत है तो वह पानी पर दम करके पिए।

बच्चों की निद्र खत्म करने के लिए सूखे वाला तावीज कागज पर लिख कर बच्चे के गले में डाल दें।

اَنَا اعْطَيْتُكَ الْكَوْثَرَ

बाहो वे कुछ दाने हों, केचवे हों या छोटे मोटे कीड़े (जुन्ने) इन सबसे नजाल हासिल करने के लिए ——'इन्ना आलमना कलकलसर' (पूरी सर) तीन बार पढ़कर पानी पर दम करें और नहार मुंह पिलाए। सोनी यह अमल खुद भी कर सकता है। साथ ही दिन में किसी वक़्त ठहर ठहर का तीन बार एक एक बार यही सूता पढ़कर पेट पर फुंक मारें। २२ दिन के इस अमल से पेट में किसी भी तरह के कीड़े हो खत्म हो जाएंगे।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الَّذِي تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ

जो बच्चा सेहतमन्द हो इसमुख या जर्हीन होते हैं उन्हें कभी कभी बड़ों की नज़र लग जाती है हालाँकि यह हैरत वाली बात है । लेकिन देखने में आता है कि मां बाप और भाई बहन की भी नज़र लग जाती है नज़र लगने से बच्चा बेचैन हो जाता है दूध पीना छोड़ देता है रोता रहता है बुखार भी हो जाता है दिन ब दिन चिड़चिड़ा और कपजोर होता चला जाता है नज़र उतारने के लिए बिचिसल्लाह शरीफ़ के बाद इना आयतना कलकवारा० (पूरी सूर) पढ़कर बच्चे के मुँह पर फूँक मारे नज़र का असर खत्म हो जाएगा ।

रात को सोते वक़्त नयी और साफ़ 'ई' के फाए पर — 'अल्लजी ख-ल-का फुसव्वा० वल्लजी कद-दा फ-ह-दा०' एक बार पढ़ कर फाए पर दम करें और कान में रात को सोने से पहले रख दें

अमल छोड़ दें ।

बच्चों अगर पैदायशी गूणां या बहरा हो या किसी बीमारी की

तजह से यह बीमारी हो गयी हो तो इसका इलाज इस तरह करे जब बच्चा या बड़ा रात को गहरी नींद सो जाए तो उसके सरथाने के सख् सीपी तरफ छाई होकर एक बार सारा मरयम की पड़ती आमत काफ हा या अेन साद पहुँ । पढ़ने से हर हर्फ अलग अलग पड़ा जाए । इलाज में जर्दो या पयराहट से काम न लें । लगातार छः नहिने तक यह अमल जारी रखें अगर मजबूरी में बीच में मुट जाए तो कोई बात नहीं है लेकिन कोशिश यह होनी चाहिए की कोई दिन न छूटे । औत अगर यह अमल करे तो नागा के दिनों में भी कर सकती है ।

हर वक्ता कुछ न कुछ सोचते रहने से वे रौशनियां जो आसानी

हर वज्रत कुछ न कुछ सोचते रहने से वैरोचानियां जो आसानी
निर्गम बनती हैं पिछर कर बर्बाद हो जाती हैं नतीजे में दिमाग
का वह हिस्सा जिस पर शक्तों हरकतों का आधार होता है कमजोर
पड़ जाता है । और जब यह शलत सामने आती है तो डरावने
छाया ज्यादा नज़र आते हैं । अगर दिमाग को किसी एक बिन्दु पर
ठहरा लिया जाए तो डरावने छाया नज़र आना बन्द हो जाएगा ।
इसके लिए चलते फिरेते उठते बैठते जुड़ु और बिना जुड़ु
'अंशवाद नजीफजुन' का विर्द करते हैं ।

विस्मिताहिंसाभिनिर्दोष

या इत्युक्तं नि

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا أَقِيلُ

तीन दिन तक चिस्मिल्लाह शरीफ के साथ बाहर बार 'या रहीमु' पढ़कर जो चीज़ भी खाने को दें उस पर दम कर दें।

फव्व की नमाज के बाद तीन बार "रब्बि यरिसार वला तुआरिसार"
पढ़कर पानी पर दम करें और दम किया हुआ पानी नाला मुंह रर
दिन तक पिएं या पिलाएं ।

नव बच्चा रात को गहरी नींद में था। तब उसकी सरासरी वेट कर - ८५ किग्रा १०० व लफ्ट ५५ सेंटीमीटर। कुल आना तिनकार फुलत पिंपु दरकिर ०७ इनाजी आना से पढ़े कि बच्चे की नींद खावा न हो। इतना की मुद्दत एक महिना है।

रात को जब रोनी सो जाए और उसके जानने का डर बाकी न रहे तो घर का कोई अमीर रोनी के पास बैठ कर एक बातचीत की दूरी से—“अतीक लाभ भीम—जलिकल किताबु ला रयमा फीही इरात तिलमुत्कीन—अल्ल—जाना मुहिमुना विल गमावि” पढ़ कर सुनाए। इस इतान को कई हफ्ते तक जारी रखना चाहिए।

दुर्ग आदर्श (चोरी, जुवा खेलना, नशा करना, लोगों को परेशान करना, घुरे लोगों में बैठना आदि) छुड़ाने के लिए नब रेमी सो नाए तो कोई साहब तीन फीट की दूरी से ऊर्बा आवाज से एक बार कुलहवाल्साहु २२ दिन तक पढ़े।

issuu.com/abdul237pialil/odisha
बिल्ड प्रेशर, नर्वस ब्रेक डाउन

人	人	人	人
人	人	人	人
人	人	人	人
人	人	人	人

हाई बलड प्रेस के लिए यह ताबीज हरे रंग से लिखें नर्वस ब्रेक डाउन के लिए यह ताबीज जर्द रंग से लिखें ।

नोट- अगर रंग रंग सुर्ख रंग या नीला रंग न मिले तो ज़रूर रंग से लिखना काफी है यहाँ है कि रंग खाने में इस्तेमाल होने वाले हैं। इताना की मुद्रित ज़्यादा से ज़्यादा चाँदीस दिन है फर्मीता चाहें तोन एक बनावं या एक से ज़्यादा बनाकर रख लें। फर्मीता जलाने के लिए पिट्टी के लिए में श्री इस्तेमाल करें

एहतलाम से (कपड़े नापाक होना) नजात पाने के लिए

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

विदिमल्लादिर्दुर्गमानिर्दहीम

या हकीनी या हकीनी या हकीनी
 या बदीक या बदीक या बदीक
 या बदीक या बदीक या बदीक
 या बदीक या बदीक या बदीक

पा वहीनु
 या बादरु
 या बदीक
 या बादीक
 पा वहीनु
 या बादरु
 या बदीक
 या बादीक

साद साद साद साद
काफ काफ काफ काफ
या रहीमु या रहीमु या रहीमु

س س س س س
ق ق ق ق ق
يا رحيم يا رحيم يا رحيم

सोने से पहले बिस्तर पर खित लेटकर २२ बार पढ़ें और सोने पर फूके भार दें यह अमल २२ दिन तक जारी रखें। गर्म और खट्टी चीजे न खाएं।

बदन में दर्द

बदन में दर्द से मुलाद निम्न आ टूटना, काहिली, सुस्ती और जोड़ों में दर्द है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يا حفيظ يا حفيظ يا حفيظ
يا شافي يا شافي يا شافي
يا كافي يا كافي يا كافي
يا كريم يا كريم يا كريم
يا كريم يا كريم يا كريم
يا كريم يا كريم يا كريم
يا كريم يا كريم يا كريم
يا كريم يا كريم يا كريم
يا كريم يا كريم يا كريم

विश्वामल्लार्हैरहमनिर्हीम
या हकीमु या हकीमु या हकीमु
या शाफी या शाफी या शाफी
या काफी या काफी या काफी
या बदीअल अनाअिबि विल खैयारि या बदीअल
या बदीअल अनाअिबि विल खैयारि या बदीअल
या बदीअल अनाअिबि विल खैयारि या बदीअल
या हकीमु या हकीमु या हकीमु

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يا رحيم يا رحيم يا رحيم

issalatibathathabib al-ashghar
पर दम करके पी लें और बात किए बिना सो जाएं। आम हलाल में यह अमल तीन दिन कर लेना काफी है लेकिन अगर रोग पुराना हो तो दिनों की तापदाद बढ़ा कर दिन ६२ दिन कर लें।

बीमारी के बाद कमजोरी

तीन प्लेटों पर ज़ाफ़रान और गुलाब के अर्क से — 'सुम्मा रददनाहु अराफला साफिनीन' लिख कर एक प्लेट सुबह, एक तीसरे पहर और एक रात की सोते वक़्त पानी से घो कर कुछ दिन पिलाएं। अल्लाह ने चाहा तो कमजोरी दूर हो जाएगी।

बिच्छू या सांप के काटे का इलाज

इसमें बिच्छू, सांप या किसी ज़हरीले कीड़े का काटना शामिल है। किसी ज़हरीली दवा का प्रियकरण हो गया हो तब भी यही तावीज इस्तेमाल किया जाए।

يا رحيم يا رحيم
يا رحيم يا رحيم
يا رحيم يا رحيم
يا رحيم يا رحيم
يا رحيم يا رحيم
يا رحيم يا رحيم
يا رحيم يا رحيم
يا رحيم يا رحيم
يا رحيم يا رحيم
يا رحيم يا رحيم

या रहीमु या अल्लाहु या मुहीदु
या रहीमु या अल्लाहु या मुहीदु
या रहीमु या अल्लाहु या मुहीदु
या बदीअल अनाअिबि विल खैयारि या बदीअल
चीनी की प्लेट पर ज़रू रंग से लिखकर बार बार पोंकर पित्तल
यही तक कि जुहन का अंतर खत्म हो जाए।

सर के बाल लम्बे करने के लिए

नवानी की उम्र में बाल मोटे होते हैं जो बाद में पतले हो जाते हैं बाल एक हद तक बढ़ जाने के बाद रुक जाते हैं और कुछ दिनों के बाद फिर जाते हैं बाल की उम्र चार साल होती है कभी करते वक़्त अगर बाल पिर जाएं तो यह कोई ख़िंता की बात नहीं है लेकिन अगर कंघी में बड़े बालों के साथ छोटे बाल भी निकल जाएं तो इसकी कोई न कोई वजह जरूर है जिसे बीमारी का ना दिया जा सकता है। बालों के पिरने में पहली अलामत खुश्की होती है यह खुश्की मिलावटी खानों में इस्तेमाल, तेज़ ख़ुश्क़ के तेल, सर योने में साबुन के इस्तेमाल, खाने में नमकीन और ज्यादा चाटपटी चीजों के इस्तेमाल की वजह से होती है इन चीजों को इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

‘अलकरामुल आसु बल मुफनागुल फाम’

सौ बार पढ़ कर इतने पानी पर दम करें जिससे अच्छी तरह सर पुल जाए। हफ़्ते में तीन बार इस तरह दम किए हुए पानी से सर धोएं। इस अमल की मुदत एक महीना है।

बुढ़ापे में कम सुनाई देना

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

इशा की नमान के बार २२ बार — “फुककानुनुना सबआ सामावालि बल अनि सुम्पस्तवा अलत अरिफा” पढ़कर हाथों पर दम करके तीन बार हाथ चेहरे पर फेर लें २२ दिन पूरे करना जरूरी है।

बहरापन दूर करने के लिए

कान के अन्दर हड्डी के ऊपर बाल होते हैं अगर नज़ला कान

issuu.com/abdul23/niail/odisha

की तरफ रहता हो या किसी बीमारी की वजह से ये बाल भाट हो जाएं तो आवाज़ की लहरें इन बालों को इतना नहीं हिला पाती जितना सुनने के लिए जरूरी है नतीजे में आदमी कम सुनने लगता है। बहुत कम सुनता है या बिल्कुल बहरा हो जाता है इसके लिए — “यसुस-म-ऊल मराम” रात को सोने से पहले और दिन में दोपहर को तीसरे हाथ की छोटी उंगली पर दम करके कान में घुमाएं। यही शब्द कान पर लिख कर तबीन की शक्ल में औरते गले में पहने और मर्द गान् पर बांधें।

बग़ल में गिलटियां

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिरिमल्लाहिरहमानिरहाम

‘अलिफ लाम या तिलका आपागुल किलविल मुबीन० अरहीम अरहीम अरहीम-’ सुबह सूरज निकलने से पहले और शाम को सूरज डूबने के बाद सौ बार पढ़कर पानी पर दम करें और पी लें जब तक बीमारी पूरी तरह खत्म न हो जाए यह अमल जारी रखें और सुबह पित्त बिल्कुल इस्तेमाल न करें।

बेहोशी से होश में लाने के लिए

“एक प्याली पर एक बार — ला ताखुनु सिमनुवला नबुनुन” पढ़कर पानी पर दम करें और यह पानी रोमी के हलक में डाल दें और इस पानी का छीटा उसके मुंह पर मारें।

बहन भाई का आपस में झगड़ा

जब ऐसी सूरत पैदा आ जाए कि बड़े बहन भाई छोटी से प्यार से पैदा न आए और छोटे बड़ों का अदब न करें तो — “इन्नुम

यकी दूता कमदा० व अर्कोदू कमदा०' सी बार पढ़ कर तकिमों पर ४० दिन तक दम करें लेकिन यह ध्यान रहे कि एक तकिमा दूसरा इस्तेमाल न करें।

बारकत के लिए

घर या कारोबार में बारकत न होने से तरह तरह की परेशानियां पेश आती हैं और घर में आए दिन लड़ाई झगड़े होते रहते हैं मां बाप लड़ते झगड़ते हैं तो औलाद पर बहुत बुरा असर पड़ता है। औलाद की तबियत सही नहीं होती तो मां बाप का अंदर व एहतराम उनके दिल से उठ जाता है और वह मां बाप से लड़ने लगती हैं। घर में बारकत के लिए अल्लाह का यह फरमान याद रखना चाहिए कि अल्लाह फिजूल खर्ची करने वालों को ना पसन्द करता है कारोबार में बारकत के लिए यह उसूल हमेशा सामने रहना चाहिए कि अच्छे अज्वाक और उचित नफा लेने से कारोबार में तरक्की होती है इन उसूलों पर जैसे रहने के बावजूद अगर बारकत न हो तो इसका रुझानी इलाज यह है

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ब स मीम अल अ ह

अ ल वाव अस अ ज

ल ज ल अ स ह

६६६ ६६६ ६६६

यह नफ़ा सफ़ेद चमकदार या किसी मोमी कानज पर लिख कर चौखट या दीवार में छोटी कौलों से गाड़ दें। तारीख़ गाड़ने से पहले बच्चों को भिठाई बाँटें।

बद बख़्शी की वजह से परेशानी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

या बद्रुदा वादू या बद्रू

अल्लाहु ता इलाहा इल्ला हुबल हयूम केयूम०

issuu.com/abdulhijabulindia

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَذَا
وَمَا كُنَّا لَنَهْتَدِيَ لَوْلَا هُدَاؤُهُ
وَالْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَذَا
وَمَا كُنَّا لَنَهْتَدِيَ لَوْلَا هُدَاؤُهُ

ता इलाहा इल्ला अल्ला सु बरानका इन्नी
क़ुनु मिन ज़ग़ालिमीन० कुल हुक्लाहु अहद०
मुहिब्बुनाहुम कहुब्बुल्लाहि वल्लज़ीना
आमनू अशदू हुब्बल्ल लिल्लाह०

इशा के बाद एक तो एक बार पढ़कर हाथों पर दम करें और हाथ तेज़ बार बेहरे पर फेंकें। यह अमल २२ दिन या ६० दिन तक जारी रखें जैसे हालात हों उसके अनुसार अमल करें।

बवासीर

बवासीर दो तरह की होती है एक खूनी दूसरी बादी। यह रोग ज्यादा बैठे रहने से, कब्ज़, ज्यादा मसालेदार खाने या शराब पीने से हो जाता है।

बादी बवासीर के लिए

बादी बवासीर में पाखाना करने के बाद तबरात इस तरह की जाए कि बाएं हाथ की बड़ी उंगली बवासीर की जगह से रगड़ खाती रहे और तबरात करते वक्त ज़बान से ——— फ़िज़्युन फ़िज़्युन फ़िज़्युन पढ़ते रहे।

खूनी बवासीर के लिए

“मानियुन क़मीरा” तबरात करते वक़्त इसी तरह पढ़ें जिस

سورة التوبة
۸۳

तरह बाती बवासीर में फिज्जुन फिज्जुन फिज्जुन पढ़ने को बताया गया है।

कभी कभी बवासीर की तकलीफ इतनी तेज होती है कि रोगी बेचैन हो जाता है और यह महसूस करता है कि जैसे बवासीर की जगह सूझा चुप रही है अल्लाह अपनी हिफाजत में रखे। तकलीफ की वजह से रोगी को न उठते चैन मिलता है और न ही बैठते चैन मिलता है और हाथ हाथ करता हुआ टहलता रहता है इसका जल्दी का इलाज यह है —

रोगी "हुजल्लनी सा इलाहा इलाहु" पढ़ कर शहादत की उंगली पर दम करे और यह उंगली पानी में डाल दे अल्लाह ने चाहा तो तकलीफ फौरन दूर हो जाएगी।

सफ़ेद दाग़
سُفَّيْدُ دَاغٍ

कुलहुवल मुअीन या माअल्लुल मन्तान वल हलीम' कई दिनों तक चोटों पर लिख कर पानी से धोकर तीन वक़्त पिएं। इस रोग में मछली अंडा और दही का इस्तेमाल न करें।

बीमारी जो समझ में न आए

कागज़ पर—लिख कर गले में डालें दे

७ ६ ५ ४ ३ २ १
१४ १३ १२ ११ १० ९ ८

अगर बीमारी दोरे की शक्ल में हो तो एक सावीज़ घों कर लिगाएं।

पित्ते की बीमारी
بِطَّةُ كِي بِيْمَارِي

पित्ते में पयसी हो या ज़हर पैदा हो गया हो तो इसके लिए एक बार 'अल्लाहु ता इलाहा इलाहा हुजल हय्युल कय्युम' सुबह शाम और रात पानी पर दम करके लिगाएं ४० दिन यह अमल जारी रखें।

issuu.com/abdul23/niaali/odisha
पंचिषा

४३

पंचिषा सादा हो या खट्टी, दोनों सूरतों में इसकी वजह आंतों में खराश होती है। इस रोग में जमीन के अन्दर पैदा होने वाली तरकारीयां, तेज़ मसाले, ज्यादा नमक पित्त और गोश्त बड़ा नुकसान देता है पुरानी पंचिषा का रोग काफी दिनों तक लगातार इलाज करने से खत्म हो जाता है।

वक़्त में वक़्त कुछ न कुछ खाने की आदत बड़ी नुकसान देह होती है खाने में सागु दाना, पूरा की दाल की खिचड़ी इस्तेमाल करनी चाहिए। बकरी के गोश्त के शोरबे में (नमक कम हो) रोटी को अच्छी तरह मिर्चों कर खाएं। इलाज यह है—

سُفَّيْدُ دَاغٍ
سُفَّيْدُ دَاغٍ

विस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'इनललाहा काना बिहुल्ली शायइन अलीमा'न

सूरज निकलने से पहले सुबह नहरा पुंह एक प्याली पानी पर दम करके एक महीने तक पिएं। दम किया हुआ पानी पीने के बाद आये पेटे तक कोई चीज़ खाना पीना मना है।

पसलियों में दर्द

पसली, सीना, कंधर या सर में कितना ही दर्द हो कोई दूसरा आरमो बुनू करके दर्द की जगह सात बार शहादत की उंगली से 'या अल्लाहु' लिख दें और इस अमल को दिन में सात बार दोहराएं।

पाइरिया

यह बात याद रहे कि दांतों की बीमारी का सम्बन्ध सीधे पेट से होता है। पेट अगर सही है और दांत बराबर साफ़ किये जाएं तो दांतों की बीमारी नहीं होती।

पाइरिया में मसूहों के अन्दर पीप जम कर सड़ जाता है और फिर यह पीप बाहर निकलता रहता है बड़ी खराब बीमारी है मुश्किल ही से पीछा छोड़ती है। पेट की सफाई और दाँतों की सफाई के साथ साथ सुबह सूरज निकलने से पहले काफी दिनों तक पालक के पत्ते पर 'इला अन्तलिमुसुम्मा' एक बार दम करके पालक को अच्छी तरह चबाया जाए। चबाते वक़्त इस बात का ध्यान रखें कि धूँक हलक़ के अन्दर न जाए। पालक के पत्ते को अच्छी तरह चबा कर धूँक दें इस अमल को दिन में तीन बार दोहराएं और हर बार एक पत्ता लेकर तीन बार चबाएं इस अमल के आपने पन्ने बाद तक न कोई चीज़ खाएं न पिएं।

पेट का बढ़ना और मोटापा कम करने के लिए

१२	१२	१२	१२
१२	१२	१२	१२
१२	१२	१२	१२
१२	१२	१२	१२

यह नक़्श एक बड़े काग़ज़ पर लिख कर रात को सोने से पहले और सुबह उठने के बाद पेट पर घेरो में घिलाया जाए। हर दिन पेट को किसी डोरी से नापा जाए। पहले ही पेट घटना शुरू हो जाएगी जब पेट अपनी असली हालत पर आ जाए तो यह अमल बन्द कर दें इस बीच अगर काग़ज़ फट जाए तो उसे जला दें और नए काग़ज़ पर नक़्श दोबारा लिख लें।

पिंडिलियों या टांगों के पट्टों का बेकार हो जाना
काले तिलों का आधा सेर तेल अपने सामने निकलवाएं। उस पर—

कुल्लु शयइन यरज़िक इला असलिल्हि
म्यारह हज़ार बार पढ़ कर दम करें। तरकीब यह है कि तेल किसी बोतल में कार्क लगा कर रख दें रोज़ एक बार में जितनी

issuu.com/abpulpur/pinjani/obolishha है) प.

कार कार्क खोल कर बोतल में धूँक मारें और बोतल पर कार्क लग दें इस तरह म्यारह हज़ार की तादाद पूरी कर लें। इस्तेमाल का तरीका यह है—रोज़ तीन माशा तेल रोटी पर लगा कर खाएं और तीन तीन माशा रोज़ हल्के हाथों से घुटनों और पिंडिलियों पर मालिश करें।

पिन्ती उछलना

पानी में खोए का पेड़ा या बीनो घोल कर ११ बार 'कुन फ़यक़ुल' पढ़ कर दम करें और रोगी को दिन में तीन बार पिलाएं। एक बार ही यह अमल कर लेना काफी है अगर बीमारी में जोर हो तो म्यारह दिन तक या ज्यादा से ज्यादा २२ दिन तक जारी रखें।

फुंसी, फोड़ा व खारिश

	ल	ल	ल	ल
	ल	ल	ल	ल
	ल	ल	ल	ल
	ल	ल	ल	ल
	ल	ल	ल	ल
	ल	ल	ल	ल

बीनो की सकेद ब्लैट पर यह नक़्श खाने के नुर्द रंग से लिख कर पानी से धोकर पिएं और ७८ई के बिना बड़ी ब्लैट पर लिख कर पानी से धोकर एक बाल्टी पानी में डाल दें और उस पानी से नज़ाह मापूनी पुर्तियों के लिए २२ दिन फोड़ों के लिए एक महीना और खून की सफाई के लिए एक ब्लैट रोज़ाना चालीस दिन तक धोकर पिएं

पेशाब की बीमारियां और उनका इलाज़

पेशाब में खून आना

पेशाब में खून आने या नलन की जगह बहुत है जैसे गुदों या मसाने में प्यरी की जगह से यह शिकायत हो सकती है। बहुत ज्यादा गर्म चीजों या ताल भिन्न खाने से भी पेशाब में नलन हो जाती है। पेशाब की बीमारियों में जुकसान देने वाली खाने की चीजों से परहेज के साथ साथ एक बार —

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
هَذِهِ الْبَلَدُ الْبَارِيَّةُ لَا تَزَالُ تَكُونُ الْبَلَدُ الْبَارِيَّةُ

विस्मिल्लाहि रहरमानि ररहीम

‘हुनल्लाहुल बरिअुललहुल असमानुल हुसना’ पढ़कर पानी पर दम करके दिन रात में आठ बार पिलाएं।

पेशाब रुक रुक कर आना

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
هَذِهِ الْبَلَدُ الْبَارِيَّةُ لَا تَزَالُ تَكُونُ الْبَلَدُ الْبَارِيَّةُ

सुबह सूजन निकलने से पहले और शाम को सूजन हूबने के बाद प्यारह बार— विस्मिल्लाहि रहरमानि ररहीम

‘अलमलिकुल कुदुसु अररहमानि ररहीम’ पढ़ कर पेट पर फूँकें मारें। जब तक बीमारी से पूरी तरह नजाल न पा ले यह इलाज जारी रखें।

पेशाब बार बार आना

रात के वक़्त अकेले में बैठकर सौ बार या दैल या ईलायाह या अल्लाहु पढ़ें और पेट पर फूँकें मार दें। तीन महीने तक यह अमल जारी रखें।

issuu@nialibhaha123/nialibhaha

अ	सा	म	ह
हम	अ	र	क
अ	क	त	त
त	त	अ	य

यह नफ़ा खाने के ज़रूरी रंग से किसी मोमी कागज पर लिख कर लिख कर गले में डालें और खेतों पर लिख कर दोपहर सुबह शाम एक एक खेत पानी से धोकर पिएँ या कोई दूसरे साहब लिख कर पिलाएँ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
هَذِهِ الْبَلَدُ الْبَارِيَّةُ لَا تَزَالُ تَكُونُ الْبَلَدُ الْبَارِيَّةُ

सुजाक, आंतिक—

विस्मिल्लाहि रहरमानि ररहीम

या हफ़ीनु या हफ़ीनु या हफ़ीनु

या बरुदु या बरुदु या बरुदु

या बदीक या बदीक या बदीक

या बदीउल अजाअिबि बिल खैरी या बदीक

जब भी पानी पिएँ यह अमल पढ़कर पानी पर दम कर दें।

तबादला रुकवाने के लिए

नीकरी के सिलसिले में किसी जगह से दूसरी जगह या एक शहर से दूसरे शहर में तबादला हो गया हो और उसे रुकवाना हो तो इसके लिए इशा की नमाजके बाद १८ दिन तक १८ बार तब्बल यरा अबी तरह बिन्द तब्बल (पूरी सूर) पढ़कर हुआ करें।

तस्यैव

दुग्धन कौ शारात से बचे रहने, हाकिम को अपने ऊपर मेहरबान करने और लोगों में इज्जत का स्थान पाने के लिए, पति की नाराजगी और गुस्सा खत्म करने के लिए या बुरे स्वभाव की बीबी को राम करने के लिए दुजु करके रात को सोने से पहले १०८ बार —

بِسْمِ اللَّهِ الرَّؤُوفِ الرَّحِيمِ جَلَّ جَلَالُهُ

दीमारी की जांच करना

إِسْمُ اللَّهِ الرَّخِيمِ
إِفْخِ افْخِ افْخِ

इकनर इकनर इकनर

ISSUE NO. 23 / चंद्रमा को कलना

जेरून में जाहिर हो जाणगी। अगर रोगी खुद मातूम करना चाहे कि बीमारी क्या है तो यह अमल करके अपने दिल के अन्दर देखे। जेरून में बीमारी को पहचान हो जाणगी।

किसी रोमी का इलाज मालूम करना ही तो यही अमल रात को सोने से पहले शिमाल की तरफ मुँह करके पड़े किसी से बात न करे और सो जायें। जब तक हालात का पता न चले यह अमल रोज करते रहें ज़ाब में या किसी भी तरीके से पता चल जायेगा।

दिल्ली का इलाज

कानून पर फूटिन्मा क्वागिरिन अल कलम लिख कर रोगी के गले में डाल कर या तिल्ली की जगह पेठ पर बांध दें और जरा सी गायब कलमे की उंगली पर लगा कर एक बार या बहुत कई उंगली पर फूँक मारें और तिल्ली के ऊपर उस उंगली से एक बार जख (X) का निशान बना दें ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَا حَيُّ قَبْلَ كُلِّ شَيْءٍ يَا حَيُّ بَعْدَ كُلِّ شَيْءٍ
يَا حَيُّ قَبْلَ كُلِّ شَيْءٍ يَا حَيُّ بَعْدَ كُلِّ شَيْءٍ
يَا حَيُّ قَبْلَ كُلِّ شَيْءٍ يَا حَيُّ بَعْدَ كُلِّ شَيْءٍ

कपकपाहट और बदल में झटके लगना

विस्मयान्तराद्विहङ्गमानिरुद्धीम

या हय्यु कवता कुल्ली शायन या हय्यु बाअरा कुल्ली शायन
या हय्युकवता कुल्ली शायन या हय्यु बाअरा कुल्ली शायन
या हय्यु कवता कुल्ली शायन या हय्यु बाअरा कुल्ली शायन

दौसिल्स और कंठ माला

يَسْمِعُ اللَّهُ الرَّحِيمِ
الْمُتَّبِعِ آيَاتِ الْكِتَابِ الْمُسْتَفِ
الْمُسْتَفِ الْمُسْتَفِ الْمُسْتَفِ

विदिमल्लाहिरुहमानिरुहीम

अरहीनु अरहीनु अरहीनु

जिगर की तमाम बीमारियां

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

issuu.com/abdulhadi/majid/16151511

जवानों में बचपन की शक्त

जिथ्यानि

या शाकी या शाकी या शाकी

या कार्फी या कार्फी या कार्फी

या वदद् या वदद् या वदद्

या रहीमु या रहीमु या रहीमु

जानवरो में दूध की कमी

विश्वरिभल्लाहीरुहमानिरुहीम

की स-मा-रति रिजका

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَا شَاقِي يَا شَاقِي يَا شَاقِي
يَا كَاكِي يَا كَاكِي يَا كَاكِي
يَا دَاوُدُ يَا دَاوُدُ يَا دَاوُدُ
يَا رَحِيمُ يَا رَحِيمُ يَا رَحِيمُ

६६	६६	६६
६६	६६	६६
६६	६६	६६

किसी ऐसी साफ लकड़ी पर जिसमें बदबू न हो यह नग्न लिख कर लकड़ी में सूराख करके डोरी से बकरी, गाय, या भैंस के गले में डाल दें। अल्लाह ने चाहा दूध की कमी पूरी हो जाएगी।

जिंसी कशिश पैदा करने के लिए

कुछ हालात में ऐसी हालत पैदा हो जाती है कि औरत या मर्द के अन्दर जिंसी जन्मा या तो बहुत कम हो जाता है या बिल्कुल नहीं रहता इसे ठीक करने के लिए एक कागज पर 'अल कयना-अल-कयना' लिख कर औरतें चौकी में और मर्द बाजू पर बांधें।

जिंसी चाहत (गैर मर्द या औरत) खत्म करने के लिए

तुन् करके तीन बार

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ
أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ
وَرَسُولُهُ لَا حَسْبَهُ سِوَهُ وَلَا دُونَهُ

बिस्मिल्लाहिररहमानररहीम

'ला इलाहा इला अल्ला सुबहानका इनी कुनु
मिन्नज्जातिमीन० अल्लाहु नुलसममावाति वल अर्दि० ला
ताबुनुहु मिन्नत० ला नवमुन' पढ़कर एक प्याली पर दम करे
और पिलाए। यह अमल चाहीत दिन तक करे।

isnada. khatma. dulp23/niall/odisha

ज्यादा तर हालात में जादू का ख्याल वसवसे से ज्यादा होई महसूस नहीं रहता लेकिन जादू से इन्कार भी नहीं किया जा सकता। जादू एक इत्स है जो कुरआन से साबित है हकीकत में अगर किसी आदमी पर जादू का असर हुआ और कोई जानने वाला इसे बता भी दे कि जादू किया गया है तब यह इलाज किया जाए।

(सुबह सवेरे उठ कर फज की नमाज पढ़े और सुकून अकजु बिरबिल फलक पढ़ते समुन्द्र या दरिया या नदी पार कर लें। सफर के दौरान बात करना मना है नदी या दरिया पार करने के बाद पानी के किनारे पूराब की तरफ मुंह करके ऊकड़ू बैठ जाए और शहादत की उंगली से (हामाज हास्त मास्त) लिख कर हाथ से मिला दें। लिखने और मिटाने का यह अमल हर हाल में सूरज निकलने से पहले किया जाए। किसी जगह समुन्द्र या दरिया या नदी न हो वहां आबादी से बाहर कुएं के पानी में अपने चोहरे को देखें।

जिन्नात के लिए हाजिरात

अगर बीमारी का सही पता न चले और यह कहा जाए कि इस पर जिन्नात का साया है तो रोगी को सोमने बैठा कर—

बिस्मिल्लाहिररहमानररहीम
या हकीनु या हकीनु या हकीनु
या बदीऊ या बदीऊ या बदीऊ
या बदीऊ अलअजाअशिबि विलखयार
या बदीऊ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا كَلِمَةُ الْوَحْيِ
يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا كَلِمَةُ الْوَحْيِ
يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا كَلِمَةُ الْوَحْيِ

बड़े सुकून और इत्मीनान के साथ ११ बार पढ़ें और रोगी पर दम करे दम करते वक़्त यह कल्पना होनी चाहिए कि मैं और रोगी दोनों अर्थो मुअल्ला के नीचे हैं अगर रोगी पर जिन्नात का असर

है जो दम करते वक़्त पता चल जाएगा। यह पता होने के बाद कि रोमी पर ज़िन्नात का असर है ११ बार या हफ़ीज़ पढ़कर एक बार फिर दम करे रोमी अपनी असली हालत पर आ जाएगा।

ज़िस्मानी और रुहानी सलाहियतों की तजदीद

हालात जब पेचीदा हो जाते हैं और मसला किसी तरह हल नहीं होता तो इन्सान के ऊपर ठहराव सवार हो जाता है इस ठहराव की वजह से उसके अन्दर सूझ बुझ और इरादे की कुव्वत ख़त्म हो जाती है कोशिश के बावजूद वह किसी नतीजे पर नहीं पहुँचता। ज़िन्दगी में नाकाम रहता है इसका असर रुहानी और ज़िस्मानी सेहत पर भी पड़ता है। यह हालत ख़ुद उसके लिए और घर वालों के लिए अज़ाब बन जाती है इससे मुट्ठकारा हासिल करने के लिए चाँदी की अँगूठी पर ८ ख़ाने बनवाकर उसके अन्दर ८ का अरब ख़ुदवालिमा जाए और यह अँगूठी सीधे हाथ की छोटी उँगली के बराबर वाली उँगली में पहन ली जाए। अल्लाह ने याहा तो मसले हल हो जाएंगे।

चोरी की आदत छुड़ाने के लिए

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 لَا تَجْنُبْ وَلَا تَجْنُبْ وَلَا تَجْنُبْ
 وَلَا تَجْنُبْ وَلَا تَجْنُبْ وَلَا تَجْنُبْ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

या हफ़ीज़ या हफ़ीज़ या हफ़ीज़ या हफ़ीज़ या हफ़ीज़
 या बंदू या बंदू या बंदू या बंदू या बंदू
 कागज़ पर लिख कर उस आदमी के तकिए के अन्दर सूई के बीच रख दें जिसकी चोरी की आदत छुड़नी हो। यह तकिया कोई दूसरा आदमी सर के नीचे न रखे।

issaham/odisha
 चाँदी की धाँसी/odisha
 لَا تَجْنُبْ وَلَا تَجْنُبْ وَلَا تَجْنُبْ

इन्ना बिल्लाहि व इन्ना इलयाहि राजिकुन कि सी वज़नी फय्दर के नीचे ऐसी जगह दबा दें जहाँ फय्दर हिले जुंसे नहीं।

चोट से तकलीफ़

ऐसी चोट जिसमें कोई अंग जगह से वे जगह हो जाए या बन्द चोट जिसकी वजह से दर्द हो या वरम आ गया हो उसे ख़त्म करने के लिए एक बार बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 لَا تَجْنُبْ وَلَا تَجْنُبْ وَلَا تَجْنُبْ

'कुल्ला यवयिन हुवा फी शान' पढ़कर पानी पर दम करके पिलाएँ और कागज़ पर लिख कर तबीज़ की चोट की जगह या वरम वाली जगह बाँध लें।

चलने फिरने से मजबूरी

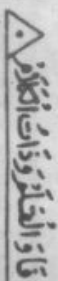
जिस्म की लम्बाई के बराबर कच्चे सूत का नीला घागा सात बार नापें और उसे इतना छोटा कर लें कि गले में डाला जा सके। एक बार—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 لَا تَجْنُبْ وَلَا تَجْنُبْ وَلَا تَجْنُبْ

'फ़िज्जीय आलाई रब्बिकुमा तुक़िज़्ज़ि बान' पढ़ें और घागे में एक पिरह दें। इस तरह ११ पिरह लगाएँ और यह गंडा रोमी के गले में डाल दें ठीक होने के बाद गंडा उतार कर नहर या दरिया में बहा दें।

न	म	न	म
ह	व	ह	व



五

हलान् की खराबी भेदे को झुरकी को वन्ह से बहुत सी औनारिया पैदा हो जाती है इसी में से एक रोग गैस भी है जब शेट में गैस ज्यादा हो जाती है तो यह दिल के आसपास जमा हो जाती है और दिल पर दबाव पड़ता है और आरमी का दम घुटने लगता है यह गैस सर की तरफ चली जाए तो आया सी सी का सर दर्द या साइनस हो जाता है इसका लख कर्मों की तरफ हो जाता है तो हाथों में दर्द और कभी कभी सनसनाहट होने लगती है ।

खाने में तब्दीली और पढ़ाने के साथ गेस कौलिनज का दर्द, आंत का बढ़ना, आंतों की कमजोरी, दस्त और दूसरी बाँमारियाँ के लिए जर्द रंग की साफ एक खिलपाती शीशी खरीद कर उसमें एका हुआ पानी भर और उसमें मजबूत कार्बे लगा दें। पानी भरते वक़्त इस बात का ख्याल रखें कि शीशी का उगरी हिस्सा खाली रहे। इस शीशी को ऐसी जगह पूरा में रखें जहाँ सुबह से तीन चार बजे शाम तक प्यूर रहती हो। शाम के वक़्त शीशी उठा लें। इस पानी में जर्द के रंग घोल कर रोशानई बनाएं और इस रोशानई से सफ़ेद ज़िनी की तीन अरद प्लेटों पर अलग अलग यह नक़्श लिखें।

बिस्मिल्लाहि र्हमानि र्हीम

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

रियाहीना रियाहीना रियाहीना	रियाहीना रियाहीना रियाहीना	रियाहीना रियाहीना रियाहीना
माआ माआ माआ	माआ माआ माआ	माआ माआ माआ

सुबह नाश्ते से पन्द्रह मिनट पहले दोपहर और रात के खान से आधा घंटे पहले एक एक दोस्त पूरा में तैयार पानी से पो कर पिए

हसद करने वाले, दुश्मन की शारात से बचे रहने के लिए फज्र की अदा नमाज के बाद या रात को सोने से पहले अल्ता आखिर ११-११ बार दस्त शरीफ के साथ

बिरिमल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नसलमिनल्लाहि व फतहून कर्तेब

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ سَيِّدَا رَبِّ الْعَالَمِينَ

ती बार पढ़ कर सोने पर

पूछे माते अल्ताह ने चाहा हासिर और दुश्मनों की शारात से बचे रहोगे। यह अमल ज़रूरत के बिना पढ़ने की इजाजत नहीं है केवल ऐसी सूत में हथारी तरक से इजाजत है जब इस बात की तरदीक हो जाए कि कोई आदमी दुश्मनी कर रहा है।

मर्जी की शादी के लिए

तावीज लिखने का तरीका

नीचे दिये हुए नकश के ऊपर शरीफ कागज रख कर खाने बना सें और कागज को अलग करके ऊपर बिरिमल्लाह शरीफ लिखें और फिर खाने इस तरह भरो कि पहले यह चार खाने लिखें निसपर नम्बर एक डाला गया है फिर नम्बर दो का भरो। इसी तरह तर्तीब से आठों खाने लिखें उसके नीचे जो शादी करना चाहता है उसका नाम और उस नाम के बाद उसका नाम निससे शादी करना चाहता है लिखें।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिरिमल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
यकुन बलम यूल्द बलम २
अल्ताहु अहदुन अल्ताहु हुआ ५
लहु यकुन बलम यूल्द ७
अहदुन अल्ताहु हुआ कुल १

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
(१)	(२)	(३)	(४)
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
(५)	(६)	(७)	(८)
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
(९)	(१०)	(११)	(१२)

issuu.com/abdul23

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
(१)	(२)	(३)	(४)
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
(५)	(६)	(७)	(८)
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
(९)	(१०)	(११)	(१२)

बलम यल्लिह लम अससमुद्
कुल अहदुन कुफुन लहु ५
यल्लिह लम अससमुद् अल्ताहुर
अहदुन कुफुन ८-अलहुदु

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

यह तावीज मुहिय अपन तकिये के नीचे रखें। अगर बहुत जल्दी अगर चाहिए तो दो फयरा के बीच इस तावीज को दबा दें। हर पत्थर का वजन कम-से कम दो सेर होना चाहिए पत्थर ज्यादा वजनी हो तो कोई हर्न नहीं लेकिन दो सेर से कम न हो। ये पत्थर जमीन पर रखें किसी तख्ते, चौकी या तख्त पर न रखें जाए। यह अमल केवल जायज मकसद के लिए किया जाए नानाजज काम के लिए न करें वरना नुकसान होगा।

सफर में हिफाजत के लिए

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सफर पर जाने से पहले पर या जाने वाले स्थान से निकलने के बाद— या हफ्तेनु या वरुद या रहींगु या मुरीदु या हफ्तेनु या वरुद या वरुद या अल्ताहु या हफ्तेनु पढ़कर आसमान की तरफ मुंह करके फूँके मार दें। अल्ताह ने चाहा तो रास्ते की हर आफत से महफूज रहेंगे। सफर में शैबी मदर भी हासिल होगी।

हाफिजे की कमजोरी दूर करने के लिए

सुबह नशार मुह्र बुनु या कुल्ली करके रखि यूसिर व ता तुअसिर तीन बार पढ़ें और पानी पर दम करके पी लें इस अमल को ४० दिन तक जारी रखें अगर किसी वर्जह से नागा हो जाए

चीनी की चेतनें या सोने के पतरे पर जूँ के रंग से ऊपर लिखा नक़्श लिखें और पानी से घोकर दिन में तीन बार पिलाएं।

सावधानी - रोमी साफ़ हवा और धूल मिट्टी से پاک माहील में रहना चाहिए। ठंडी हवा, खट्टी और ठंडी चीज़ें इस रोग में नुक़सान देने वाली हैं ज़्यादा सरी और ज़्यादा गरमी भी इस रोग के लिए सही नहीं हैं।

दाद

دَدُ الْبُرْدَةِ وَدَدُ الْبُرْدَةِ

सुबह, दोपहर और शाम—

रब्बुल मायाक़यनी व रब्बुल मफ़िदयान०

११-११ बार पढ़कर दाद पर दम करें।

दांतों के सभी रोग

उम्र से पहले दांतों का हिलना, पायरिया, दांतों पर चूना जमना, दांतों में कीड़ा लगना, दांतों पर काले धब्बे पड़ जाना, दांतों का रंग हल्दी की तरह ज़र्द हो जाना, दांत की हड्डी का चूरा होकर टूटना आदि आदि। इन सब के लिए बलनुस्सुह ६ बार पढ़कर सुबह नशर मुंह एक गिलास पानी पर दम करके एक घूंट अलग कर लें। बाकी पानी से अच्छी तरह कुल्ली करें। कुल्ली करने के बाद अलग किया हुआ एक घूंट पानी पी लें। इसके आगे घन्टे बाद तक कोई चीज़ खाना पीना मना है।

दांत या दाढ़ में दर्द

إِذَا بَرَأَ الْبُرْدَةِ الْبُرْدَةِ

उस दांत या दाढ़ को जिससे दर्द हो चुटकी से पकड़ कर छोड़ दें और चुटकी पर —“इज़ाज़ुलजालिल अर्नु ज़िल ज़ालहा” पढ़ कर दम करें।

islah.com/abdu
एक सही स्मॉल

विस्मयलकिरेहमानिरेहीम

‘रज़यना बिलक़यनना फ़ातु बुरहान अल्फ़ा मरह’

पढ़कर फूँक मारे और गिरह लगा दें। यह रुमाल सर में इस तरह बांधें कि गिरह कनपटी पर आ जाए। अगर दर्द पुराना हो तो यह रुमाल सुबह सवेरे बांध कर रात को सोने से पहले कुछ-मिनट के लिए खोल दें और फिर बांध लें और कई दिन तक यह सिलसिला जारी रखें। जुनू या गुल्ल करते दमन रुमाल खोल लेने में कोई हरज नहीं।

सख्त दर्द कहीं भी हो

إِذَا بَرَأَ الْبُرْدَةِ الْبُرْدَةِ
وَكَلْبَرَجَتِ الْبُرْدَةُ

दर्द किसी भी हिस्से में और किसी वजह से हो ‘इज़ानुल ज़िलजिल अर्नु ज़िल ज़ालहा० व अज़्ज़रानजिल अर्नु असकालहा० ऐसी अवाज़ से जिसे रोमी न सन तक सात बार पढ़कर सुबह शाम सीधे कान में फूँकें मारे।

कान में दर्द

ज़ररत मर असली सरसों का तेल हल्का गरम करके उस पर एक बार सूरत फुल आऊन बिगाबिल फू-ल-क पढ़कर दम करें और प्रभावित कान में कुछ बूढ़े डाल दें। कान में तेल हमेशा हल्का गरम डालना चाहिए।

सीढ़ की हड्डी में दर्द

गर्दन तोड़ बुखार हड्डी के छल्ले का दे जगह होना यमिन मोरसों के बीच जगह बन जाना, सीढ़ की हड्डी या उसमें बल पड़

आधी सीसी का दर्द

सुबह सूरज निकलने से पहले रोगी को उकड़ इस तरह बिठाएं कि उसका मुँह मशिरक की तरफ हो। रोगी से कहें कि वह सर के उस आधे हिस्से पर अपना सीधा हाथ रखे जिस तरफ दर्द होता है कोई ना बालिंग बिस्मिल्लाह के बाद फरीकु कज्जबला मुहयमिन पढ़कर फूँक मार दें ना बालिंग से पुरादा दस्त से बारह साल तक का लड़का या लड़की है।

डिपथीरिया (खुन्नाक)

यह रोग आम तौर पर मासूम बच्चों को होता है। इस रोग में बहुत ही महीन कीटाणु सास की नाली में इस तेजी से चलते हैं कि कुछ ही पड़ों में सास की नाली बन्द हो जाती है अगर वक़्त पर इलाज न किया जाए तो ये किटाणु झिल्ली के रूप में सास की नाली को बन्द कर देते हैं और रोगी का दम घुट जाता है। इस खतरनाक रोग से नजात पाने के लिए एक बार—“मन जल्लजी यशफुक इन्दु इल्ला बिइजीनेहि” पढ़कर पानी पर दम करें और यह पानी बार बार हलक में डालें और गला ग़ल्लाते रहें ताकि पानी हलक से नीचे उतर जाए। इस रोग में लापरवाही न करें। क्योंकि यह बहुत खतरनाक रोग है।

स्वाद खराब होना

अगर स्वाद खराब हो जाए और हर चीज़ कीकी मानुस हो तो सुबह सूरज निकलने से पहले नहार मुँह ‘अलसिन्जुबसुन्नी’ दिल ही दिल में पढ़कर पानी पर दम करें और यह पानी मशिरक की तरफ मुँह करके तीन घूंट में पी लें।

ज़ियाबतीस

शकर पेशाब में हो या खून में दोनों हालतों में नीचे वाला तावीज कागज़ या चीनी की ब्लेटों पर ज़ाफ़रान या गुलाब के अर्क

से लिख कर तीन बूँदें पानी में पड़ें पानी में पीकर पिए।
issul.com/abdu23/naifa/otishna

अ साद म ह
हमजा अ र क
अ क ल त
ल त अ य

६	७	८	९	०
१	२	३	४	५
६	७	८	९	०
१	२	३	४	५

माँ से परहेज नरुते है अलबत्ता ज़ामुन इस रोग में खाना ठीक है काला चना (छिन्नके समेत) पिसला कर उस आटे की रोटी खाना ज़ियाबतीस में खास तौर पर लाभदायक है।

दिमाग़ बेकार हो जाना

लगभग़ ज़ेहनी दबाव, आसानी क्लमकश या किसी और वजह से अगर दिमाग़ बेकार रहता हो यानि कोई बात समझ में नही आती हो, दिमागी या निसयानी काम करने वक़्त ज़ेहन साथ न देता हो ऐसी सूरत में काली रोशनाई से लोबान के बहुत छोटे छोटे टुकड़ों पर ६ के हिस्से लिखें जाए और लोबान के टुकड़ों को दहकते हुए कोयलों पर डाल कर धूनी की तरह सुलगाएं।

यह असल ऐसी जगह करना चाहिए जहां रोगी के अलावा कोई और आदमी न हो। इसके लिए रात का वक़्त बड़ा अच्छा है। धूनी लेने के बाद मुताबका करें यानि आँखें बन्द करके अपने दिल के अन्दर देखें। मुताबका पन्द्रह मिनट से आधे घन्टे तक किया जाए। इस असल से ज़ेहन में ऐसी रोशनिया/आने लगती है जिनसे मसलों का हल आसानी से समझ में आ जाता है और ज़ेहन के अन्दर छालात व मसलों का मुक़ाबला करने की ताक़त पैदा हो जाती है।

रग फटने से खून आना

सख़ा चोट की वजह से कोई रग फट जाए और उससे खून बहने लगे तो यह ख़तरे की बात है इस सूरत में लापरवाही नही बरतनी चाहिए जल्दी ही इलाज करना चाहिए। साथ ही—

‘कानल वहरु मिदादन लिकलिमाति रब्बी’

क्याक्यादि

किसी मोमी कागज पर बिभिमल्लाडिहमानिर्दहीम

अरुमानु अलमल कुरआन खलकल इसाना अलमहुल
ब्रह्मानं अरामसु वल क-म-ल विमुसुबान लिखकर एक तावीज गले
में पहना है और एक तावीज मुख नहार मुंह रोज पात्री से दोकर
काफी दिनों तक पिलाए ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّدِيْعُ الْعَجَائِبِ بِالْخَيْرِ يَا بَدِيعُ



रसौता जिसमें किसी भी जगह हो बिस्मल्लाह रहमान रहीम
'या बदीउल अज्जाअधि बिल खैरि या बदीक

(राधयो के बीच में विन्दु बनाकर इस तरह काँट कि कास को कास बन जाए) कागज या प्लेट पर जर्द रंग या गुलाब के अर्क से लिखाकर दिन में तीन बार कई महीनों तक किए जब तक कि रासोली खत्म न हो जाए।

व कदम बोसो

प्यारे नन्हा रमणुल लिल आलमीन सारकोर दो आताम हुनून्
सल्ल० कौ प्रियारात और कदम बोसौ शसिल करने के लिए झा
कौ नमान सब कामों से निपट कर रात को सोने से पहले ---सल्लल्लाहु
तआला अला हबीबिहि मुहम्मदि० तसल्लम०

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى حَبِيبِهِ مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
يَسْبِغُ اللَّهُ الرَّاحِمِينَ الرَّحِيمِينَ
يَا وَدَّ وَدَّ يَا نَدِيغُ الْعَقَايِبِ الْخَيْرِ النَّادِيغِ
يَسْبِغُ اللَّهُ الْوَارِثِينَ جَلَّالَهُ الْيَا حَبِيبُ

विस्मिन्नादि रङ्गानि रङ्गीन

या वदतु या वदीअल अजाअबि बिल खैयार या वदीक
बिस्मिल्लाहि अल वासिक जल्ला जलालुह या हफीजु

तीन सौ बार पढ़कर आखिरे बन्द करके पन्द्रह बीस मिनट हुनुर सल्लल० की कल्पना करें और बात किये बिना इसी कल्पना को कायम रखते हुए सो जाएं। २१ दिन के इस अभल की बारकत से अल्लाह ने घाला तो हुनुर सल्लल० की ज़ियात और कदम बोसी की सआरत नसीब हो जाएगी। ज़ियात की सआरत हासिल होने के बाद मीठे चावल पका कर बच्चों को खिला दें।

शादी के लिए

सब कामों से निमट कर रात को सोने से पहले अव्यक्त आखिर ग्यारह ग्यारह बार दसदश शरीफ पढ़ने के बाद सूर्या इङ्गलस ४१ बार पढ़े। केवल शार्दी के लिए दुआ करें अमल की मुदत ६० दिन है। इस अवधि में मंगनी या शार्दी हो जाए तो भी ६० दिन पूरे कराना।

नकली है औरतें नागा के दिन भिन कर बाद में पूरा कर लें।

पति का गुस्सा खत्म करने के लिए

बीवी पति के मुकाबले ज्यादा गुलबत्त करने वाली होती है इसके अन्दर गुलबत्त का लुफ्फानी समुद्र ही है जिसकी वजह से नस्लें इसानी का दण्ड और बढ़ती जाती है अगर बीवी के साथ पूरी गुलबत्त की जाए और पति की तरफ से उसे जेहन मुकुल मिल जाए तो समाज की अनेको बुराइया खत्म हो सकती है जिसका असर सीधे आने वाली नस्लों पर पड़ता है। पति के बुरे सुलूक से नजात पाने के लिए इशा की नमाज के बाद बीवी अब्बल आखिर ग्यारह ग्यारह बार दरुद शरीफ के साथ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَسِّرُ اللَّهُ لَهَا سُبُلَ رَحْمَتِكَ لَا تُلَاقِ

बिस्मिल्लाह ररहमानिररररिम

'बिस्मिल्लाह अल वासिऊ अल्ला जुलाहु' गुसल्ले पर बैठ कर एक तरबीह पढ़े और हुआ करे। अगर ऐसे हालात पैदा हो जाए कि पति तलाक देने पर तैयार हो या उसके अन्दर बीवी को अलग करने की जिद पैदा हो जाए या बीवी को घर से निकाल दे और बदले के तहत उसे घर न बुलाए तो बीवी को चाहिए कि रात को सोने से पहले जुनु करके गुसल्ले पर बैठ कर --- 'कुल हुल्लाहु अ-ह-डुन' पूरी सूरत पढ़कर बात किये बिना बिस्तर में चली जाए और तैटक आंखें बन्द कर ले और अपने पति की कल्पना करते करते सो जाए इस अमल की मुदत भी ६० दिन है।

पति के साथ बीवी की ज्यादाती

हर आदमी तीन कमजोरियों से परा हुआ है १- हुकूमत की ख्वाहिश २- जिस का गलबा ३- गुस्सा। ये तीनों कमजोरियाँ औरत और पर्द दोनों में होती हैं। कुछ घरानों में औरतों में गुस्सा इतना

isshar'at' की शर'त की निरूपण न जाती है इसका इलाज भी वही है जो हम पति को गुस्सा करने के लिए के तहत बयान कर चुके हैं बजाए बीवी के पति यह अमल करे।

मियां बीवी का आपस में लड़ना

ताली दोनों हाथों से बजती है मियां बीवी दोनों बात वे बात पर आपस में लड़ते रहें तो उस घर की हालत खराब हो जाती है और औलाद की तबियत में बड़ी खराबी पैदा हो जाती है इस का इलाज इस तरह करना चाहिए कि मियां बीवी दोनों में से कोई एक औलाद की तबियत की ख़तिर कुरबानी दे और खामोश रहे वह मिसाल तो आपने सुनी होगी 'एक चुप से हराए' अगर दोनों में से

وَالصَّالِحِينَ وَالْعَظِيمِينَ وَالْمُحْسِنِينَ وَالْمُتَّقِينَ
وَالْمُحْسِنِينَ وَالْمُتَّقِينَ

जिसी की तबियत में कुरबानी की भावना हो तो --- 'वल काज़िमीना अल गुयज़ा दल-अफना अमिन्नासि दल्लाहु मुहिब्बुल मोहिमिनीन' हर नमाज के बाद सी बार पढ़कर एक घूट पानी पर दम करके पिए।

शऊरी कमजोरी खत्म करने के लिए

इंसान के अन्दर दो बिभाग काम करते हैं एक को हम शऊर कहते हैं और दूसरे को लाशऊर कहते हैं शऊर लाशऊर की दी हुई तहरीकों को कुचुल करके हमारे अन्दर हवास बनता है और हमें इन हवास से काम लेना सिखाता है अगर शऊर कमजोर है तो वह ला शऊरी तहरीकों को पूरी तरह कुचुल नहीं करता नतीजे में जिनगी में काम आने वाली बहुत सी सलाहियातों से हम महरूम हो जाते हैं और कदम-कदम पर हमें मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। शऊर की इस कमजोरी को दूर करने के लिए ज़ेद के रंग और

अकौता खराब होना

अकौता जब खराब हो जाता है तो इस्लाम के विभाग में ऐसे बराबरी और विचार आने लगते हैं जिन से खुदा व रसूल और मजहब से उकताहट पायी जाती है और यह उकताहट ग़ैर अख़्तियारी होती है। अकौदे की खराबी और जमीन की मलापल से नज़र न आने वाला एक बदबूदार कोड़ा उसके पैर में पैदा हो जाता है जिसकी वजह से वह इतना बेचैन रहता है कि उसकी मिलात बड़ी से बड़ी बीमारी में नहीं मिलती। अल्लाह इम सब को अपनी शरण में रखे इस तकलीफ़ देने वाले मुक़सान से नज़ात पाने के लिए कौरे या पुले हुए ख़दर या लठठे का एक कुर्ता सिलवाया जाए। यह कुर्ता सारे जिसस पर एक एक बालिशत ज़्यादा हो और टखनों तक भीचा हो आसतोन भी एक एक बालिशत छुली हुई हो। किसी ऐसे कमरे में जिसमें अंधेरा हो (अंधेरा न हो तो अंधेरा कर लिया जाए) यह

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
مَا أَصْبَحْتُ بِمَرْءٍ سَلْبٍ قَبِيْلٍ

कुर्ता पहन कर पन्द्रह मिनट तक टहले और टहलते वक़्त— 'अल्लहु हिल्लाहि रब्बल आलमीन० अर्रहमानिर्र— हीम० मातिक्कियवीमिद्दीन०' पहले वक़्त पन्द्रह मिनट के बाद अंधेरे ही में कुर्ता उतार कर तब करके उसी कमरे में किसी महफूज़ जगह रख दें। जब तक अकौता सही न हो उसी वक़्त तक यह अमल किया जाए। केवल अंधेरा शत है।

issuu.com/issuuindia/indianishan

बीमारियाँ

हमल गिर जाना और बच्चों का पैदा होते ही मर जाना

माँ के पेट में बच्चे कौ सही परवरिश न होना या बच्चे का पैदा होते ही मर जाना, इन हालात की वजह माँ के विभाग में उन रेशों की कन्जोरी होती है जो बच्चे की पैदाइश में काम करते हैं माँ के विभाग में कपजोरी की वजह अधिकतर ज़ेहनी पैदाइशी, लीकोरिया और घा का मायुश माहौल होता है हमल के दौरान तेज़, गुलत और ज़्यादा दवाओं के इस्तेमाल से माँ यह हालात पैदा हो जाती है।

इस सारी बातों पर अमल करने के साथ साथ सूखे की बीमारी वाला तावीज़ ज़रूरी रंग के चिकने कागज़ पर लिख कर बिच्छुल शुरू ही में माँ को अपने गले में पहन लेना चाहिए और हर जुमरात की शाम के वक़्त कपड़े के कवर से निकाले बिना तावीज़ को सोचान की धूती देनी चाहिए। बच्चे की पैदाइश के बाद यह तावीज़ माँ अपने गले से उतार कर बच्चे के गले में पहना दें।

औलाद न होना (बांझ पन)

औलाद न होने की असंख्य वजहें होती हैं जैसे यह कि औरत के अन्दर कोई खराबी हो जाए, या मर्द के अन्दर औलाद के कीटाणु न हों। अगर मर्द और औरत दोनों की सेहत ठीक है और हमल नहीं टहरता तो कुरआन पाक की इन आयतों की बरकत से अल्लाह

ने चाहा तो मां की गोद भर जाती है। सौवार —

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 اِنْ شَاءَ اللَّهُ يَرْحَمُكَ اللَّهُ
 اِنْ شَاءَ اللَّهُ يَرْحَمُكَ اللَّهُ
 اِنْ شَاءَ اللَّهُ يَرْحَمُكَ اللَّهُ

विस्मिल्लाहिर्हमानिर्हीम

इकराविस्म रब्बकल्लजी ख-ल-कं ख-ल-कल इन्साना भिन
 अतकुं हामाम० अतीफ ताम या तिलका आयतुल किल्लाविल मुवीन०

औरत इशा की नमान के बाद पढ़े फिर पानी पर दम करके
 ६० दिन तक खूद पिए और पति को भी पिलाए नागा के दिन गिन
 कर बाद में पूरे करें।

माहवारी की वे तर्तीवी

माहवारी की वे तर्तीवी से औरतों में बहुत सी बीमारियां पैदा
 हो जाती हैं। नलों में दुखन होती है पेट बड़ा हो जाता है और
 मुकुरर दिनों से पहले सख दर्द से गुजरना पड़ता है। यह भी देखा
 गया है कि अगर माहवारी सही वक़्त और पूरी मुदत तक न हो
 तो औरत के चेहरे पर बाल निकल आते हैं। वे तर्तीवी की शिकायत
 अगर पुरानी हो जाए और रोग की हैसियत से लें तो रहम में वरम
 आ जाता है जिसकी वजह से औरतें बच्चा पैदा करने के काबिल
 नहीं रहती। इसका असर रंग व रूप पर भी पड़ता है और बदन
 पल्लना शुरू हो जाता है खून गन्दा और गाढ़ा हो सकता है और
 कमर में दर्द और अंगों को टूट फूट की बीमारियां भी हो सकती हैं
 अगर माहवारी का निजाम धीरे धीरे कम होकर उस से पहले बिलुप्त
 बन्द हो जाए तो औरतों के अन्दर मर्दाना चिन्नेपताए पैदा होते हुए
 भी देखी गयी हैं। जिस तरह खाना खाने के बाद और पानी पीने
 के बाद फ़ितरी तौर पर पेयाब पावाने का होना जरूरी है इसी तरह

माहवारी भी औरतों की सेहत के लिए अनिवार्य है इसके लिए एक
 लक्षण लिखा जा रहा है इस मुवीन में विस्मिल्लाह शरीफ लिखना
 इस पृष्ठ पर www.abdullah.com/niha/codisha

माहवारी की वे तर्तीवी में अगर कमर में दर्द हो तो यह तर्तीज
 कमर पर इस तरह बांधें कि तर्तीज रीढ़ की हड्डी के आखरी जेड
 से छूटा रहे। नलों में दुखन हो तो यह तर्तीज नाड़ी के ऊपर बांधें।

(नोट) तर्तीज को घागे में बांधा जाए जिसका रंग जामनी हो
 कपड़ा या किसी तरह की पट्टी इस्तेमाल न की जाए। नहाने की
 जरूरत से या पाखाने जाते वक़्त भी तर्तीज जिसमें से अलग न करें।
 तर्तीज की मोम जामा कर लिया जाए ताकि पानी पड़ने से तर्तीज
 के ऊपर लिखे हुए नक़्श खराब न हों। तर्तीज यह है —

तं०	म	क	ह
म	क	तं०	ह
क	तं०	म	ह

७	२	६	८
२	५	७	८
५	७	२	८

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

माहवारी की ज्यादाती— विस्मिल

लाहिर्हमानिर्हीम

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ

या अनाइबल खफ़ा व या बरा अलखल्क

जुर्द रोशनाई से तर्तीज लिख कर गन्ने में डालें। ज़ुर्द हो तो
 केवल तीन दिन तक एक एक तर्तीज रोज़ सुबह नहार मुह धोकर
 पी लें।

लीकोरिया और रहम की बीमारियां

हुबल अमरु हिवा अमा नवीनु
बाहकफा या हय्यु या कय्यु
या बारिपुल मुसबिल अरहाम

سَوِّ الْأَمْرَ مِنْ عَمَلِهِ بِأَنْ
يَحْيِي يَحْيِي يَحْيِي
يَا بَارِكُ يَا بَارِكُ يَا بَارِكُ

रहम की बीमारी (जिसमें रसौली भी शामिल है) के लिए ऊपर
दाला तारीज गले में पहनाएं। सज्जी की तरत में एक तारीज रोजाना
सुबह नहार मुंह वालीस दिन तक पानी से पोकर पिएं या पिलाएं।

बच्चा होने के बाद पेट का बड़ना

देखा गया है कि अगर बच्चे की पैदाइश के बाद पेट की सही
देखभाल न की जाए तो पेट बड़ जाता है इसके लिए—

तर्तीरी शयइन हिस्ति—

जर्द रग से प्लेट पर लिख कर सुबह दोपहर और शाम एक
एक प्लेट पानी से पोकर पिलाएं। यहां तक कि पेट अपनी असली
हालत पर आ जाए।

चिल्ले की तकलीफें

या रहीमु या अल्लाहु या मुरीहु
या रहीमु या अल्लाहु या मुरीहु
या रहीमु या अल्लाहु या मुरीहु

يَا حَبِيبُ يَا حَبِيبُ
يَا حَبِيبُ يَا حَبِيبُ
يَا حَبِيبُ يَا حَبِيبُ

बच्चा होने के बाद चिल्ले के दौरान औरतों को बहुत सी
बीमारियों से दो चार होना पड़ जाता है। इनसे पूरी तरह बचने
के लिए ऊपर वाला नक्शा जर्द रग से किसी मोमी कागज पर लिख
कर गड़े से बांध दें गंडा बनने का तरीका यह है बच्चे नीले धागे
के प्यारह तार लें और औरत के कंठ से नाथ लें। उसे दोहरा या

तीहरा करके इतना कर लें कि ग्यारह पिरहें लगने के बाद गले में
isSabbil alAhlal/abhalilHil/malil/odlisha

يَا حَبِيبُ يَا حَبِيبُ
يَا حَبِيبُ يَا حَبِيبُ

या रहीमु या अल्लाहु या मुरीहु

पढ़ें और फूँक मार कर एक पिरह लगा दें। इस तरह अन्धाने
से बचावर दूरी पर ग्यारह पिरहें लगा लें। चिल्ले का गुस्ल करने
के बाद या गंडा गले से उतार कर किसी गढ़े में दफन कर दें।

बच्चे की पैदाइश में आसानी

× × × × ×
+ + + + +

× × × × ×
+ + + + +

ऊपर को यह नक्शा मोमी कागज पर लिख कर पैदाइश के
बच्चा होमला की रीथी रान में बांधें अल्लाह ने चाहता तो बच्चा
आसानी से होगा।

सावधानी

यह तारीज उस बच्चा तक रान में न बांधा जाए जब तक कि
पैदाइश के आसार शुरू न हो क्योंकि तजुर्बे में यह बात आयी है कि
अगर आसार शुरू न हो और यह तारीज बांध दिया जाए तो बच्चा
बच्चा से पहले ही पैदा हो जाता है इस तरह बच्चे पर बुरा असर
पड़ता है।

दूध की कमी

वे औरतें जो बच्चे की पालरिया अपने दूध से करना चाहती
हैं लेकिन दूध नाकाफी होता है यह नक्शा —

११	११	११
११	११	११
११	११	११

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَا حَبِيبُ يَا حَبِيبُ

बिरिमल्लाहिरहमिर्हीम

फी	समरतिन	रिजकुन
६६	६६	६६
६६	६६	६६
६६	६६	६६

बीनी की प्लेटों पर जर्द रंग से लिख कर एक एक प्लेट सुबह दोपहर और शाम को पानी से धोकर फिर । नज़्ज़ात के वज्त नब् दूस् उतरने लगे तो यह अमल छोड़ दें ।

धनैला

धनैला एक ऐसी बीमारी है जिसका अगर सही इलाज न हो तो केसर की बीमारी हो सकती है इससे नज़ात हासिल करने के लिए तीन बार —

مَا فِي كَلْبِ غَيْرِ اللَّهِ

‘मा फी कलिब गयारल्लाहि’
पढ़कर एक बड़े प्याले में आपा गर्म पानी पर दम करें । तीन घूंट पानी पी लें और बाकी पानी से प्रभावित छाती को धोएं । ज्यादा से ज्यादा तीन बार

सीने का सपाट होना

सीने का सही उभार औरतों के हुरन् का एक जरूरी हिस्सा है जिजा और बच्चों की सही बढ़ोतरी का अमल भी इसी पर है सीने का उभरा हुआ होना मर्द औरत की पढ़चान भी है जो औरतें इस हुरन् से महलूम होती हैं वे मर्दों के लिए आकर्षण नहीं रखती इस कमी को दूर करने के लिए सूरः वतीन की पहली आयत

وَالْبَيْتِ وَالْأَرْضِ

रात को सोने से पहले सौ बार पढ़ें सोने पर दम करें और बात किए बिना सो जाएं । ६० दिन इस अमल से सीना उभरा हुआ और सुडोल हो जाता है अमल के साथ साथ तीन महीने तक रोजाना एक छंटाक पानीर भी इस्तेमाल किया जाए ।

चेहरे और जिस्म पर ज्यादा बाल

अल्लाह ने कुरआन में इशारा किया है । औरत और मर्द में यह सही माया ही इन्फरादियल कायम रखती हैं ।

इंसान के अन्दर खून दौरा करता है । हवा, रोशनी और कासमिक किरण के ज़रिए ज़हर की एक भारी मात्रा जिस पर इन्सान की ज़िंदगी के कयाम का आधार है इन्सान के अन्दर दखिल होती रहती है यह ज़हर छोटे छोटे सूराखों के ज़रिए पसीने की शक्त में बाहर निकलता रहता है यही वजह है कि बाल इन हिस्सों पर ज्यादा होते हैं जिस जगह खून का दबाव ज्यादा होता है । मर्दों के चेहरे पर दाढ़ी होती है लेकिन औरतों के चेहरे पर बाल नहीं होते इसकी वजह यह है कि औरतों में खून का यह ज़हरीला असर एक खास निज़ाम के तहत हर महीने निकलता रहता है अगर इस महीने वाले निज़ाम में खलल पड़ जाए तो इस खलल या कमी की वजह से औरतों के चेहरे पर बाल निकल आते हैं इसके लिए जरूरी है कि माहवारी को बारक़ार रखा जाए ।

एक पाब कलौजी पानी से धोकर घूब में सुखा लें और खुले मुंह की साफ़ नीले रंग की शीमी में भर लें । इशा की नमाज़ के बाद सी बार —

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

‘फी सितति अय्यामिन सुम्मास्वा अलल अर्श’ पढ़ कर कलौजी पर दम कर दें और शीमी का ढकना बन्द कर दें इस तरह २१ दिन तक करें २२ वें दिन से सुबह नहारा मुंह चौथाई चाय का बमचा कलौजी मुंह में डाल कर दो तीन घूंट पानी के साथ निगल लें । कलौजी खाने के आगे पेटे बाद तक कोई चीज़ खाना पीना मना है एक पाब कलौजी खत्म होने तक यह अमल जारी रखें ।

हिस्तीरिया

खाने क जर्द रंग को पानी में घोल कर रोशनाई बना लें इस रोशनाई से थोकर पिलाएं और कैही तावीज इसी रंग की रोशनाई से धिकने और मोटे एक बालिस्त कागज पर लिखकर सर, मुददी, पेयाजी और चेहरे पर दिन में तीन बार मलें। इलान में फातिज और लकने से प्रभावित मुवात्तिह परहेज जो सब जालने है नुस्ते है।

भगनन्दर-

حَقِّقُوا الْإِنْسَانَ
مِنْ خَلْقِهِ مِثْلَ الْوَلَدِ وَالْزَّجَّاجِ

खलकत इन्साना०

यखलकु मिनुमा अबुलक बलमर्नान

किसी भीमी कागज पर चालीस तावीज लिखे रोशनाई खाने के जर्द रंग से बनाएं, एक तावीज रोज सुबह नहार पुरु चालीस दिन पानी से थोकर पिए। इस रोग में सुबह भिर्द और हर तरह के गोशत से (गोशत में अंडा भी शामिल है) इलान के दौरान परहेज करें।

कर्ज की वसूली के लिए

يَا خَيْرُ نَيْلٍ يَا خَيْرُ نَيْلٍ يَا خَيْرُ نَيْلٍ

يَا خَيْرُ نَيْلٍ يَا خَيْرُ نَيْلٍ يَا خَيْرُ نَيْلٍ

या तन्कहोनु या हनुआइनु या हमनाइनु

या फताहु या फताहु या फताहु

एक कागज पर (किसी भी रोशनाई से) लिख कर इस कागज को चार तह करके तावीज बना लें और उसे दो पक्षों के बीच

ISSUE. कलान/दीहाहा अरु/मोदी/बिग नलाण नहीं हर पक्षर का वजन कम से कम दो सेंटीमीटर होना चाहिए समतल हो ताकि तावीज पर ऊपर के पक्षर का वजन पूरी तरह पड़ता रहे।

नोट-तावीज को जोर दार और असर दार बनाने के लिए उस आदमी का नाम उसकी माँ के नाम समेत जिससे कर्ज वसूल करना है तावीज मोड़ने से पहले लिख दिया जाए।

इशा की नमान के बाद ४१ बार आपतुल कुसी अजीम तक पढ़कर हाथों पर दम करें और हाथ तीन बार चेहरे पर फेरे इसके बाद कर्ज वसूल होने की दुआ करें। अमल की मुदत ६० दिन है और दो नागा के दिन गिन कर बाद में पूरे कर लें।

कर्ज उतारने के लिए- अजल आखिर एक बार दरुद शरीफ एक बार बिस्मिल्लाह और एक हजार बार फताहु सेने से पहले ६० दिन तक पढ़कर दुआ करें और बात किए बिना सो जाए।

कैदी की रिहाई के लिए

हाकिम को बस में करने वाला तावीज कैदी गले में पहने और हर जुमरात को राम के वक़्त तावीज को मोम नामा और कपड़े के कवर से निकाले बिना लोबान की धूनी दी जाए।

कद बढ़ाने के लिए

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الرَّحِيمِ الرَّحِيمِ الرَّحِيمِ الرَّحِيمِ الرَّحِيمِ

अगर कद कम रह जाए और इस बढ़ाना हो तो-
बिस्मिल्लाह रिहमानि रीही

अलिफ ताम रा तिलका आपतुल किनाबिल मुबीन
अरहीमु अरहीमु अरहीमु या अल्लाह या मुतिद०

जुंरें के रंग और गुलाब के अर्क से तीन स्त्रियों पर लिख कर एक स्त्रिट सुबह नहरा मुह, एक अक्ष के बाद और एक रात को सोते वक़्त पानी से पोकर छः महीने तक लगातार पिए इसके अलावा २४ घंटे में कम से कम बारह घंटे लेटने के प्रोग्राम पर अमल करें। लोटते वक़्त इस बात का ख्याल रखा जाए कि टाँगें कमान की तरह न हो बल्कि सीपी रहें। सरहाना ऊंचा रखे ताकि खून का दौरा पैरों की तरफ़ ज्यादा रहे।

दुआ के कुबूल होने के लिए

दुआ कुबूल होने के लिए ज़ियारत वाला अमल तबज्जुद की नमस्ते अदा करके अब्बल अग़िब रपारह पपारह बार दल्दे इबाहीमी (जो दल्द नमज़ में पढ़ा जाता है) के साथ तीन सौ बार ज़ियारत वाला पढ़ कर दुआ करें। अल्लाह ने चाहा तो दुआ कुबूल होगी।

कैसर या सरतान—

कैसर खून को नुक़सान पहुंचाने वाला एक रोग है इसकी कुछ वजहें ये हैं—

कोई इन्सान जब एक या दो या कुछ ज्यादा बिचारों में अपने को गिरफ़्तार कर लेता है तो वह बरकी लहर जो बिचारों के ज़रिए अमल बनती है ज़हरीली हो जाती है यह ज़हरीली लहर चूँकि खून के अन्दर भी नहर पैदा कर देती है इसलिए इस लहर की वजह से खून में बहुत ही महीन कीटाणु बन जाते हैं ये कीड़े किसी एक जगह पर बना लेते हैं वह बरकी लहर जो ज़िन्दगी के काम आनी चाहिए इन कीड़ों की खुराक बन जाती है नतीजे में खुराक का छोट से छोटा कण जो बरकी लहर के साथ खून में दौरा करता है बनाए फायदे के नुक़सान पहुंचाता है। इन कीड़ों की खुराक खून के वे कण होते हैं जो सुर्ख कण या आर० बी० सी० कहलाते हैं पीरे-पीरे रोगों के अन्दर सुर्ख कण खल होकर सफ़ेद कणों की सख्या बढ़ जाती है और ये जिस्म के लिए उचित नहीं रहते चुनावे ये सफ़ेद कण धूँक या बलरूप बन कर बाहर निकलने लगते हैं और इतनी

iss part में सिक्के हैं कि अपनी भीमकार, कीड़मो का दावा बन कर मोत के मुह धूलो अल्ला हैमिहा/odisha

कैसर की दूसरी जिस्म यह भी है। क ज़हरीले कण एक जगह जमा हो जाते हैं इनके जमा हो जाने से वे रंगे गल जाती हैं। जो इस ज़खीरे के पास होती है नतीजे में खून के निजाम में एक बहुत बड़ी कमी पैदा हो जाती है और इससे मौत तक हो जाती है।

यह तो बुरे कैसर की खुली अलाभात। अब सुनाए कि रूहानी इल्म की से कैसर एक ऐसा रोग है जो शरीफ़ नफ़स और बा आज़िज़पार है जो सुनला है महसूस करता है अगर उससे दोस्ती कर ली जाए और कभी कभी अकेले में जबकि रोगी तो रहा हो उसकी खुशामद कर ली जाए और यह कहा जाए भिया कैसर तुम बड़े अच्छे मेहमान हो यह आदमी बहुत परेशान है इसे माफ़ कर दो अल्लाह तुम्हें इसका इनाम देगा तो कैसर रोगी को छोड़ देता है और दोस्ती का सवाल देता है।

इसके अलावा सुर्ख रंग में जो बरकी लहर दौड़ती है वही कैसर की खुराक है इसलिए खून के सुर्ख कणों के अन्दर दौरा करने वाली बरकी लहर कैसर की खुराक बन जाती है और कैसर का रोगी ज़िन्दगी को कायम रखने वाली बरकी लहर से महसूस होकर खल हो जाता है चूँकि खून में दौरा करने वाली सुर्ख रंग की बरकी लहर ही कैसर की खुराक बनती है इसलिए इस बात का इन्तज़ाम किया जाए कि रोगी के माहौल को पूरी तरह सुर्ख कर दिया जाए जैसे जिस कमरे में रोगी रहता है उस कमरे की दीवारें, दरवाज़े और खिड़कियों के पर्दे, पलंग की चारों तरफ़, ताकियों के ग़िलाफ़ यश तक कि रोगी के पहनने के कपड़े, सब सुर्ख कर दिया जाए। इसके साथ साथ खाने का सुर्ख रंग पानी में पोलकर रोज़ानाई बनाए। उस रोज़ानाई से नीचे बूले ४१ तालीन लिखे जाए।

६	१	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

آية النجاة

ص وَالْعَلَمِ ص وَالْعَلَمِ ص وَالْعَلَمِ

७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

अवतारलहाहु

साद वलकलम साद वलकलम

एक तावीज रोमी के गले में हमेशा पड़ा रहने दें और बाकी ४० तावीज सेनाना एक के हिसाब से ४० दिन तक पानी से पीकर पिलाए।

कुब या कूबड़

हराम मगज में सेहतमन्द रेशे कुरत के कानून के तहत कमजोर रेशों को ताकत पहुंचाते रहते हैं उन्हें ताकत पहुंचाने का जरिया यह बरकी लहर है जो दिमाग में नमा होकर दिमाग की तमाम रगों में दौरा करती है अगर बरकी लहर की तकासीम ताकत-बर रेशों में बराबर है तो आदमी का सीना मजबूत होता है लेकिन अगर किसी वजह से बरकी लहर की तकासीम बराबर नहीं है तो सीने की पसलियां कमजोर और नम रह जाती हैं यही वजह है कि कोई आदमी कुबड़ा हो जाता है। इस बीमारी में कुरआन की आयतः

وَالْإِيلَافِ كَيْفَ تُجَلِّدُ

इस इब्रिल कमफा खुलिकतः का विद बार बार किया जाए और जब भी पानी पिए पानी पर यही आयत दम करके पिए।

isshelali jashih mē lāshul/niiali/odlisha

एक बड़े कागज पर-----

अल्लाह नूरस्समावाति वलअर्जि

लिखकर पांच या दस सेर पानी से घो लें और उस पानी को खेत में छिड़क दें। केवल एक बार यह अमल कर लेने से जमीन की पैदावार बढ़ जाएगी।

काम में दिल न लगाना

गैर मुस्तकिल मिर्जानी और आर्थिक कामों में दिलचस्पी न होने को खत्म करने के लिए हर नमाज के बाद बिस्मिल्लाह शरीफ के साथ सौ बार ---

كَلْبُ وَفَوْتِ لِرَالَةِ إِلَّا شَاءَ اللَّهُ نَبِيْرُ
الْعَزِيْرُ الْجَبَّارُ الْمَكِيْرُ

बहवाले व कुब्बाले सा इलाहा इल्लल्लाहु अल्लुहमीनुल अजीनुल नब्बाल्ल मुतकब्बिर

पढ़कर हुआ करें। अगर रोमी बहुत ही काहिल हो तो बीवी या कोई और पिरतेदार यह कबीला पढ़कर उसके लिए हुआ करें। अमल की मुदत २१ दिन है और ज्यादा से ज्यादा ४० दिन है।

कुत्ते का काटना

पाटा ६ सूता माइल की आयत-३

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أُحِلَّ لَكُمْ
وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

यसअल्लुका माना उहिल्ला तुहम से इन्तललाहा सराउल हिसाबः तक ११ बार पढ़कर पानी पर दम करके तीन दिन रोज तीन वक़्त पिलाए।

5

गुर्द में दर्द रियाही हो या पथरी का हो दोनों हालतों में मोनो-
 एन्थालान (C₁₀H₁₆N₂O₂) की इजाजत हो। तैपारम की जगह
 बाय। इस ताबानु का पोरक पिलाना में बड़ी लाभदायक है दर्द
 खत्म हो जाता है और अंगार गुर्द में पथरी है तो वह रेत बन कर
 रियाब के रास्ते बाहर हो जाती है।

साफ आसमानी रंग की शीशी या बोतल में छालिस तिलों का

يَذَرُكُمْ وَيَخَذَلُكُمْ أَفَإِنَّكُمْ لَا تَعْقِلُونَ

الرَّحِيمُ الرَّحِيمُ الْكَتَابُ الْمُبِينُ

अलि लाम रा तिलका आयतिल किताबुल मुधीन०

上中上

अर हांमु अर हांमु अर हांमु

काली रोशनाई से कागज पर लिख कर तार्वाजु गले में डाल दे और यही आयत चीनी की प्लेटों पर छाने के जूद रंग से लिखकर गन्ना और मल को मोने से पहने पाना से पीकर पिता।

पढ़कर ४१ दिन दम करें ४१ वीं रात से रोजाना सातों दफ्तर तैल अच्छी तरह सर में डालें।

तीन दिन और ज्यादा से ज्यादा ग्यारह दिन तक।

मुर्दे की बीमारियां

गठिया और घुटनों का दर्द

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
كَرَمِ هـ

لا تذكريه إلا بخصاؤه وهو ذميرك الأخصاء

एक बार---

ला तदधिकृत अवसारं व हवा मुदरिकृत अवसारं

पढ़कर शाहादत की उंगली के पहले पों पर दम करें और धुव

लगा कर इन्जिनारी की जगह फेंरे। कुछ दिन के इस अमल से रोग खत्म हो जाएगा।

विभिन्नल्लाहिन्द्रभाभिर्दहीम
क न

अलमलिकुल कुददुस अरहमानिरसिम
७६५ ७६५ ७६५

बु लगना

454 454

1944 : 1944

964

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
هُوَ اللَّهُ أَنْبَاءُ الْمَسِيحِيِّ

विभिन्नल्लाहिरहमानिरहीम

हुबल्लाहुल बारिक लहुल असमाउल हुसना०

एक सफेद कानून पर लिख कर बिना मोम जाने के सफेद कपड़े की धज्जी में बांध कर गले में डाल दें तब के अस्सालत खत्म होने पर तबीन और कपड़ा दोनों जला दें। कच्ची खाइ के शरबत पर यन्त्री आपत दम करके पी लें इससे आदमी तब के अस्सालत से बचा रहता है।

मुंह से बदबू आना

मेदे में कब्ज और बदबू की वजह से गैस जब ऊपर की तरफ आती है तो मुंह से बदबू आने लगती है। अगर मसूढ़ों के अन्दर या दांतों की शिरियो में खाने के टुकड़े जमा होकर सड़ जाएं तब मा मुह से बदबू आती है लेकिन यह बदबू जो गैस के रूप में मुंह से निकलती है दूसरे लोगों के लिए बड़ी परेशानी और जहन्नी तकलीफ का कारण बनती है रोगी को इसका इतना अहसास नहीं होता लेकिन सामने वाले के उपर इस बदबू का बुरा असर पड़ता है इससे बचने के लिए खाने में सावधानी बरतने की जरूरत है। वक़्त में वक़्त कोई चीज़ न खाई जाए जो कुछ भी खाना हो केवल उस वक़्त ही खाया जाए जो खाने के लिए तय हो। बाती और खमीर वाली चीज़ें न खाई जाएं। खाने हल्के फुल्के जल हज्म होने वाले हो। जब भी पानी पीए तीन बार—परफूना क्यूनी पढ़कर दन कक्रे पिए और जुहर की नमाज़ के बाद मरफूना स्कूनी—एक तरबीह पढ़कर एक चौड असली शहर पर दम करें। यह शहर दिन में तीन बार सुबह नाराते से पहले दोपहर और रात को खाने से पहले एक एक चमची इस्तेमाल करें। दांत हर वक़्त बिल्कुल साफ़ रखें चाहे मंजन से या मिसवाक से।

मकान या किसी दूसरी जगह को खाली कराना
إِسْلَامُ الْقَوْمِ فِي الْبَيْتِ
होने के बाद या किसी खाली जगह को खाली कराना हो तो इशा की नमाज़ के बाद तीन खी बार—

أَعْلَمُ مَا فِيهَا

‘व अलफल मा फीहा व तखल्लत’ पढ़कर आंखें बन्द कर लें और किराएदार की कल्पना करके फूँक मार दें। अमल की मुद्दत कम से कम चालीस दिन और ज्यादा से ज्यादा ६० दिन है।

मिरगी का दौरा

कभी कभी विचारों में इतना बोझ हो जाता है कि विभाग की वह सलाहियत जो विचारों को बांटती है प्रभावित हो जाती है अगर ऐसी हालत में पानी सामने आ जाए तो विभाग काम करना छोड़ देता है और मिरगी का दौरा पड़ जाता है जब तक विचारों का बोझ मामूली से ज्यादा रहता है रोगी बेहोश रहता है और जब यह बोझ हट जाता है तो रोगी को होश आ जाता है दौरे से क्योंकि पूरा निम्स बेकार सा हो जाता है इस लिए हरकत देर में होती है इसका इलाज यह है रोगी के सर को जमीन से छाय पर केवल एक इंच ऊपर उठा लिया जाए इससे ज्यादा नहीं। दो तीन बार सर को हल्की नुचिया से हिलाया जाए दौरा खत्म हो जाएगा फिर भी आंखों की पुतलियां की देखभाल कुछ देर तक करें ताकि वे रेशे जो हाफिज़ से सम्बन्धित हैं देखने वाले की निगाहों से टकराए और शऊर बहाल हो जाए। मिरगी के रोगी की एक पहचान यह भी है कि पुतलियां अपनी जगह से कुछ न कुछ ऊपर की तरफ हट जाती हैं। मिरगी के रोगी का रुकनियत में इलाज यह है कि चालीस दिन तक सुबह नहाते मुह एक स्क्वेट पर

लिखकार पानी से थोकर पिताएँ साथ है एक बड़े कागज पर लिखकार सर से पाँच तक कागज को पूरे निम्न पर मर्ते कागज फट जाए तो दोबार लिख लिया जाए। इतान के दौरान इस बात का ध्यान रखें कि रोगी को कब्ज को सिकायत न हो।

क्रोमोम में १२ छल्ले होते हैं और हर छल्ले का रंग अलग अलग रंग होता है मां के पेट में अगर इन छल्लों के रंग में समानता रहती है तो बच्चा पूरी तरह मर्दाना होता है और अगर एक छल्ले का रंग मां पूरी तरह दूसरे ११ छल्लों के रंग के बराबर न हो तो बच्चा में इसी हिसाब से मर्दानापन कम हो जाता है बारह छल्लों में से किसी एक छल्ले में रंग की मात्रा बहुत ज्यादा या बहुत कम हो जाए तो लड़की पैदा होती है। कुछ मर्दानों में मर्दानापन कम और औरापन ज्यादा होता है बात करने का ढंग, चाल दाल और शब्द सूत्र में औरत पन झलकता है कुछ मर्दानों को आलान और औरतों को तरह होती है इसको दूर करने के लिए सुबह जाग कर और रात को सोते वक़्त एक मर्दान तब

الرَّجَالِ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ

नींद कम आना या बिठ्ठल न आना

नींद न आने की वजहों में बड़ी वनह दिमाग में खुशकी, आसानी, कामकाश, दिमागी कामकाश या दूसरे शब्दों में दिमागी अपसेट,

हो सके विभाग को खाली करना जरूरी है। ऐसा करना इस रोग से बचने के लिए बड़ा जरूरी है। सब कामों से निवृत्त कर आराम देह बिस्तर पर लेट जाएं जिसमें को ढीला छोड़ दें आंखें बन्द कर लें और यह कलना करें कि गर्दन से नाड़ी तक जिसमें पर शीशों का एक बड़ा जोर रखा हुआ है और उसमें हल्की हल्की ठंडी हवा भरती हुई है जब यह कलना कर ली जाए तो सारा बकरा की पल्लवी आयात अल्पिफ साम मीम से मुक्तिन तक पढ़ना शुरू कर दें दो एक बार पढ़ने से नई की भीठी लह नसीब हो जाएगी।

सफेद कागज पर तीन बार काली रोशनाई से 'या बदीऊ' लिखें। कागज को जला दें जला हुआ कागज जंगलियाँ से भस्म कर नक्सीर के रोगी को सुंघाएं। कुछ देर बाद यह अमल करने से नक्सीर की बीमारी खत्म हो जाती है।

ऐसा पुराना नजला जिसकी वजह से हिमाग से बदबू आती हो, नाक बन्द और आँखें मारी रहती हों, कानों से आवाजें आती हों महसूस होता हो कि हिमाग में कोई चीज मरी हुई है आदि आदि से नजाल हासिल कानों के लिए

يَسُوذُكَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ يَا أَسْمَاءُ وَيَا قُرَيْشَ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ





















विश्वस्मितादिहिरहमानिरहाम

मा फकाईल या इसरापील या समवाईल या फरजाईल कागज पर या चीनी की प्लेटों पर लिख कर तीन वज्र पानी से धोकर पिलाएं। खाने में ऐसे खाने देने से परहेज करें जो पेट को खराब करते हैं।

हैं और उनकी आवाज़ में कड़वापन और मर्दाना पन होता है। पीठ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

附

		$=$		
		$=$		
		$=$		
		$=$		
		$=$		

10

2	2	2	2	2
99	99	99	99	99
2	2	2	2	2

607

11

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

अलगसर या पेट में घाव

रोजाना काली रोजानाई से लिख कर एक घड़े या गुराही में डाल दें और पीने में यही पानी इस्तेमाल करें पानी रोज नया बदल दें जो पानी बचे उसे किसी एक जगह या कियारी में बहा दें। इस अभ्यास की मुरदत ६० दिन है।

खाने की चीजों में भिलावट की वजह से यह बीमारी आम हो

के पहले तावीज को कपड़े के कवर से निकाले बिना लोबान की धूनी दें।

बच्चों के दिल में सुराख

अब्बल आखिर म्यारह म्यारह बार दलद शरीफ के साथ म्यारह हजार बार—

फुअवहा इला अल्लही मा अल्लहो माकज्जाल फुवाहु मरहमा० एक जगह बैठ कर पढ़कर अया सेर असली शहर पर दम करें यह शहर सुबह शाम और रात को खिलाए। घुराक की उम्र के लिहान से ले करें। छोटे बच्चों को उगली से चटाए और दस साल से ज्यादा उम्र के बच्चों को चाय की छोटी चमची तीन वक़्त खिलाए। इलान की मुद्दत छ. महीने है।

बगल और पैरों से बदबू आना

बगल और पैरों से बदबू आना बड़ा कष्ट दायक रोग है ऐसे रोगी जब किसी मज्लिस में बैठते हैं या जूते उतारते हैं तो बदबू का ऐसा मजक़ा निकलता है कि पास बैठने वाले लोग परेशान हो जाते हैं। इस रोग से नजात पाने के लिए म्यारह सौ बार —

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
أَتَمَّخَذَرُ عَيْدِيكَ الْيَتِيمَةِ وَالْمَرْثُورَةِ لِمَع
الْخَيْرِ زَيْدًا وَأَهْلًا بِهٖ لَسْبِيْرُ اللَّهِ ٤

बिस्मिल्लाहिररहमनिररहीम

इन्नामा हर्रमा अलमुकुमुल मयतला बददमा व लहमात ख़िन जीरि वमा उहिल्ला बिहि बिगया ऐल्लाहि०

पढ़कर एक ढाँड़ असली शहर पर दम करें और सुबह शाम रात को एक एक चमची खाए इलान के दौरान खानों में नमक की मात्रा कम से कम रख दें।

issu मोहम्मों/abdul23/niali/odish

टापफाइड बुखार अगर मुद्दत पूरा होन से पहिले उलार दिया जाए तो कभी कभी बच्चों को पोलियो हो जाता है अब यह रोग इलाना आम हो गया है कि इसकी व्याख्या करना जरूरी नहीं है। एक बुटकी चीनी और एक बारीक से चारोंक सूई तै स्टैनलैस स्टील या चांदी के कटोरे में दो तीन घूंट पानी भर लें एक बार

या वरुदु

سَوْدَدُ

पढ़ें सूई पर फूक मारे और सूई की नोक चीनी से छूकर पानी में डुबो दें अब सूई को साफ सफ़ेद कपड़े से अच्छी तरह साफ़ कर लें। इस तरह कि सूई पर पानी का कोई असर न हो इसी तरह सूई डुबोने का यह अमल एक सौ एक बार करें। इस पानी में ज़फ़रान शामिल करके रोगनाई बना लें और उस रोगनाई से—

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الْخَطَرُ
رَمِيْرُ

रहीमु फ़र्कु अलहाम
७६ ११ २६ २७ ३१ ४१

٢٤ ١١ ١٩ ٢٤ ٢١ ٢٧

तीन खेतों पर लिख कर शाम और रात को पानी से धोकर पिलाए। यह तावीज उसी रोगनाई से बालिशत भर चिकने और मोटे कागज़ पर लिखकर प्रभावित होने वाले अंग पर दिन में तीन बार पानी की सूईयों की गार्दश के अनुसार मलें। यह कागज़ फट जाने पर दूसरे कागज़ पर तावीज लिखा जाए। इलान देरी का है यकीन और बिस्वास के साथ जागी रखें फायदा जल्द होगा। खाने में ठंडी और चांदी चीजों और नमक का पूरा परहेज जरूरी है।

नोट— अंग पर मलने वाले तावीज पर —
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
बिस्मिल्लाहिररहमनिररहीम लिखी जाए।

रहे नींद आए तो सो जाए या हफ़ीन का विद उस वक़्त तक क्रिय जाए जिस वक़्त दौरा पड़ता है लेकिन दौरा पड़ने के वक़्त के बाद भी एक घन्टे तक बिस्तर पर रहे। इस अमल की मुद्दत चात्तीस दिन है।

कारोबार में बन्दिश

कभी ऐसा भी होता है कि अच्छा खासा चलता हुआ कारोबार ठप हो जाता है और दुकान या कारोबार में ऐसी बन्दिश हो जाती है कि तमाम सामान व साधन होने के बावजूद बिक्री नहीं होती और आर्डर आदि भी नहीं आते कहीं से आर्डर मिलता है तो उसकी तकमील नहीं होती। दुकान में खरीददार आते हैं माल को पसन्द करते हैं लेकिन खरीदे बिना वापस चले जाते हैं और यही सामान दूसरी दुकान से ज्यादा कीमत पर खरीद लेते हैं। इससे छुटकारा पाने के लिए यह अमल करें—सुबह सबेरे उठकर जुन्नू करें। दुकान या दफ़्तर में ऐसे वक़्त पहुँचे कि अभी सूरज न निकला हो एक बार —

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُوْلُهُ

कुल आऊं बिरिब्बिन्नास०

पूरी सूरः पढ़कर दुकान या दफ़्तर के दरवाजे पर दम करें। पांच करम पीछे हटकर पेरों के दोनों नुतों उत्तार लें और नुतों को हाथ में ले कर तीन बार इस तरह झाड़ें कि नुतों के तलवे एक दूसरे से टकराएँ और नुतों पहन कर दुकान या दफ़्तर के अन्दर जाकर लोबान की धूनी दें। यह अमल केवल एक बार कर लेना काफी है इस अमल में यह बात सामने रखनी चाहिए कि नुतों से दर सौल के हों।

किसी सवाल का जवाब देते वक़्त जुवान का रुकजाना

नर्स नेस की वनह से आदमी के ऊपर अनजाना डर छा जाता है इसके बावजूद कि वह सामने वाली के सवाल का जवाब

issuu.com/abdul23/niail/odisha

देने की पूरी सलाहियत रखता है मगर उससे दब कर उसकी बात का जवाब नहीं दे पाता और बाद में दिल ही दिल में फुड़ता है। इससे नजाल पाने के लिए सुबह सूरज निकलने से पहले जुन्नू करके एक बार—

या वदू— ۝۝۝۝

पढ़ें और सात बार हाथ के चुल्हू में ताज़ा पानी लेकर सात बार नाक में चढ़ाएँ और निकाल दें यह अमल पूरी तरह ठीक होने तक जारी रखें।

कांच निकलना

जिस तरह बड़ों को बवासीर की तकलीफ़ होती है और पाखाना करते वक़्त मरसे बाहर आ जाते हैं इसी तरह बच्चों की भी यह बीमारी हो जाती है कि पाखाना करते वक़्त कांच बाहर आ जाती है बच्चे रोते चिल्लाते हैं और उस मोस्त या कांच को उंगली से रचा कर अन्दर करना पड़ता है। इसका इलाज यह है कि बच्चे को तब़ारत इस तरह कराएँ कि उल्टे हाथ की बड़ी उंगली पाखाने की जगह से रगड़ खाती रहे तब़ारत करते वक़्त जुवान से—

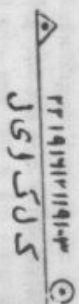
فِي اَلْبَلَدِ

فِي اَلْبَلَدِ

फि अलन फि अलन—फि अल— पढ़ते रहें। दो तीन बार के अमल से यह रोग खत्म हो जाता है।

घर में सब लोगों का बीमार रहना

सेहत के उल्लूकों को देखते हुए यह बहुत जरूरी है कि घर साफ़ सुथरा रहे और घर में सीजन न हो इसके साथ साथ घर के भारील को साफ़ करने के लिए लोबान की धूनी देते रहना चाहिए और यह तलाश करना चाहिए कि घर के सब लोग क्यों बीमार रहते हैं। अगर कोई वनह समझ में न आए तो यह इलाज करें।



۲۲۹۴۹۴۹۲۹۴۹۴۹۴

ल य अ क ल क

लिख कर ऐसी जगह लगाए कि तालीज हवा से हिलता रहे।

मुंह में खून भरना

दिमाग, हलक, मसूढ़ों के प्रभावित हो जाने से या किसी ना मालूम वजह से दिन या रात को सोते वक़्त मुंह में खून भर जाता है और रोगी को बार बार खून की कुत्तिया करनी पड़ती हैं और इस तरह जिस का साग खून निकल जाता है यह हालत बड़ी चिन्ताजनक है और खतरनाक है इलाज यह है—बढ़िया वाला रुई ले कर दो फायों पर एक बार

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
سَيِّدُ اسْمِكَ الْأَعْلَى وَالَّذِي خَلَقَ
قَسْوَى وَالَّذِي دَمَعَهُ قَسْوَى وَالَّذِي
اخْتَرَعَ الْمُرْعَى فَجَعَلَ عَسَا
أَحْوَى

बारिमुल्लाहि रहमनिरहीम

सय्याहरिम रबिबकल आला० अल्लनी खलक-फसव्या० दल्लनी

करतरा फन-दा०

दल्लनी अखरानल मरआ० फन-अल हु गुसा अन अहवा०

issuu.com/abdup123/miaili/odishan

पढ़कर दम करे और एक फाया दोनों कानों में रगत को सोते वक़्त रख ले। अगली रात ये फाये निकाल कर दूसरे दो फायों पर दम करके कानों में रख ले। अमल की पुष्टत सात दिन है। फाये जमा करके बहते पानी या कूए में डाल दें।

अल्लाह के कलाम की बर्कत से बहुत आसानी के साथ यह रोग खत्म हो जाता है। ऐसे कई रोगी मेरे पास आए गए जो महीनों से अस्मताल में दाखिल थे। डाक्टर हैरान व परेशान थे कि यह खून कहां से आता है रोगी को बार बार खून दिया जाता था और यह खून भी मुंह के रास्ते निकल जाता था। इस फकीर ने अल्लाह पर यक़ीन के साथ इलाज किया और सब रोगी अल्लाह की कृपा से ठीक हो गए। डाक्टरों के लिए यह बात मोअम्मा बनी हुई थी कि यह खून किस तरह बन्द हो गया।

नौकरी या कारोबार की तलाश

ऐसी हालत में जब कौशिशों का कोई नतीजा न निकले उम्मीद बांधे और टूट जाए। दिनों हफ्तों और महीनों बल्कि सालों दफ्तरों के चक्कर लगाने के बावजूद नौकरी न मिले या कारोबार में बरकत न हो तो नौकरी या कारोबार में बरकत के लिए यह नक़्श बानू पर बांधे या गले में पहने और हर वक़्त दुआ या बेवज्र उठते बैठते चलते फिरते सोते जागते या हयू या कयूम — का खिद करते रहें।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ

۳۲۱	۳۲۲	۳۲۳	۳۲۴	۳۲۵
۳۲۶	۳۲۷	۳۲۸	۳۲۹	۳۳۰
۳۳۱	۳۳۲	۳۳۳	۳۳۴	۳۳۵
۳۳۶	۳۳۷	۳۳۸	۳۳۹	۳۴۰

وَسُئِلَ عَنْهُ

وَسُئِلَ عَنْهُ

956

E	99	98	97
m9	m20	m22	m98
99	9	9	92
m9	m94	m20	m94
99	99	E	E
90	m20	r2r	m9E
m9	99L	9	m9E

असली तावीज में न लिखा जाए।

三

बिना

ना है या दूध में मक्खन कम हो जाता है।

इसे तब न हो पाते हों तो लड़का का माया खुद लड़का

رَبِّكَ عَبْدُكَ وَإِيَّاكَ تَسْتَبِينُ

परमाणु पर पृथ्वी ता इस आपत का प्रकार है (१०-१५)

ISSN: 0013-788X/2014/0000-0000\$5.00/0

अमल की मुदत ४० दिन है।

काशी

$$+ 9 + 3 + 4 + 6$$

$1 + 2 + 3 + 4 + 5 + 6$
 اَلْاَيَّامِ
 اَلْاَيَّامِ

अलबासिन अल याबिस

प्रभावित जानवर के गले में डाला है।

ख़ास इस्मे आज़म यानि अल्लाह के नाम

हुनूर सल्ल० का इशार्द है कि बेशक अल्लाह के ८८ नामों को जो कोई याद करेगा और उनको दिल में रखेगा अल्लाह पाक उसे जन्नत में दाखिल करेगा। इस इशार्द के अलावा बहुत से औलिया और बुजुर्गों ने अपनी किताबों में अल्लाह पाक के नामों की बेशुमार विशेषताएँ लिखी हैं जैसे भी इन्सानो अफ़स यह मानती है कि ये उस महान हस्ति के नाम हैं जो सारे जग का पालनहार है तो ज़ाहिर है कि इनमें कितना असर होगा।

यहाँ नीचे हम इन नामों के ज़रिए ज़रूरीतों और कामनाओं को हासिल करने और हर तरह की सफलता के लिए अल्लाह के नामों को अलग अलग तफ़्सील से बयान करते हैं।

(9) अल्लाहु

الله

बहुत से वलियों के निकट यह शब्द इस्मे आजम है। अगर इस शब्द की तारीफ़ लिखी जाए तो सारी ज़मीन के पेड़ों के कलम और सारे समुद्रों के पानी की रेशनाई ना काफी हो। यह शब्द ज़ामिन्दास फात फात है जिस तरह अल्लाह की ज़ात हर ज़ुर्गई से पाक है इसी तरह यह शब्द भी हर तरह से पाक है। अगर इसे रोज़ाना एक हजार बार पढ़ा जाए तो ईमान व यकीन मजबूत हो अगर हर नमाज़ के बाद सौ बार पढ़ा जाए तो अल्लाह का मुक़रब

इस शब्द का मतलब है कि मैं ईश्वर का नाम ले रहा हूँ जो अच्चा हो जाए। अल्लाह का बिंद करती हुई किसी जग में जाए तो फ़तह हासिल हो और अगर अकेले में रोज़ाना तीन हजार बार अल्लाह का नाम लिया जाए तो वह खुदा चाहें तो बली हो जाए। बहरहाल जिस मक़सद के लिए चाहें अल्लाह का नाम ले पूरा होगा यह मेरा ईमान है।

(२) अर्रहमानु

الرحمن

रहमान के मायने रहम करने वाले के हैं। इसमें शक नहीं कि उससे बड़ा रहम करने वाला कोई नहीं। इस इस्मे मुबारक को अगर मुसीबत वाला पड़ेगा तो अल्लाह का रहम करम उस पर होगा। सुबह की नमाज़ के बाद २८८ बार पढ़ने से हर मुश्किल आसान हो जाती है कोई भी मुश्किल हो अर्रहमान का वज़ीफ़ा करना चाहिए।

(३) अर्रहीमु

الرحيم

अल्लाह पाक के इस नाम के मायने होते हैं बहुत रहम करने वाला। इसमें क्या शक है। उसके रहम करम की कोई हद मुक़रर नहीं की जा सकती। इस नाम को कोई ग़रीब आदमी पाच बार रोज़ाना पढ़े तो मालदार हो जाए। अगर इसे ताबीज़ बना कर गले में डाले तो हर आफ़त व मुश्किल से बचा रहे। दुकान पर लिखकर लटकाए तो रोज़ाना में बरकत हो। मतलब यह कि हर आफ़त के लिए अर्रहीमु का वज़ीफ़ा करना चाहिए।

(४) अल मालिकु

المالك

अल्लाह के इस नाम के मायने हैं बादशाह। यकीनन सारे जगत् का शरंशाह है। इस नाम का वज़ीफ़ा करना अपनी इज़्ज़त और रज़ा को बढ़ावा देने का सबब है। इसको रोज़ाना पढ़ने वाला दीन व दुनिया दोनों में सुख रू होता है और कामयाबी उसके कदम चूमती है अगर कोई नेक नीयती से इस नाम का वज़ीफ़ा करेगा तो अल्लाह

पार्क का दीवार हासिल होगा। उसका मकसद भा पूरा होगा। अल्लाह के बारे में इल्म हासिल होगा। इस नाम की बरकत से बहुत से बुराईयों ने फैल पाया है।

(५) आल कूदयूँ

इस नाम के मायने होते हैं पाक, वे ऐब। इसमें क्या राक है कि अल्लाह वे ऐब है। इस नाम को पढ़ते रहने से और तालीज बना कर पहनने से सारी आसमान व जमीन की आपत्तों से रिकान्त होती है इस मुबारक नाम को जुमे की नमाज के बाद पढ़ने वाले को दुनिया की बुजुर्गी और दुःखा अज्बाफी की दौलत हासिल होती है। इस नाम का वर्णीण करने से दुश्मान दोस्त बन जाते हैं। इस शब्द को इशा की नमाज के बाद पढ़ने वाला अगर किसी से मुहब्बत करता हो तो मुहब्ब हो जाएगा। बहरहाल इस नाम का वर्णीण बहरहाल ही है।

(૬) અલ અજીજુ

इस नाम का मतलब है गालिब। यकीनन वह सब पर गालिब है। इस नाम को रोजाना पढ़ा करे तो दुनिया में ऊँचे दर्जे हासिल हों और अखिरात में जन्नत हासिल हो। इस शब्द को हर नामान के बाद सौ बार पढ़कर खुदा से दुआ मांगा करे तो अल्लाह उसे गरीब से मालदार बना देंगे।

(७) अल खालिफु

इसका मापन है पैदा करने वाला, बनाने वाला। इसमें क्या शक्ति है कि हम उसी ने तो बनाया है। इस नाम को हर वक़्त पढ़ते रहना चाहिए। इससे सारे मक़ामायाब नष्ट हो जाते हैं। इस नाम को पढ़ने वाले का द्रुमन कभी कामयाब नहीं हो सकता नाम को पढ़ने से दुनिया में भी ऊँचा दर्जा हासिल होता है।

(८) अल वारिज

इसमें क्या शक
हर वस्तु पढ़ते
। इस नाम को
नाम को पढ़ने

इस नाम का मतलब है पैदा करने वाला। ज़ारिर है कि खुदा इस नाम को हर नज़ुल पढ़ना अपने काम में कामयाबी हासिल करता है। जैसे तालिब इलम पढ़ा करे तो कभी फेल न हो। ड्राईवर पढ़े तो कभी हादसा न हो, हकीम पढ़े तो उसके हाथ में शिफाण वख्तो, दुकानदार पढ़े तो बिज्जी और मुनाफा बढ़े, मुस्ताफिर पढ़े तो मंजिल तक आसानी से पहुँच जाए। यह इसे आज्ञम है।

(६) अल मुसविह

मलबहू ह सूरत बनान वाला । रोज रोशन की तरह । जाहिर है कि खुदा से बढ़कर कोई आर्दिस्ट नहीं । खुदा का यह फन किनमा अगोछा है कि लावों करोड़ों इंसान इस दुनिया में बसते हैं हर इंसान के अंगों की बनावट एक जैसी है वहीं आंख वहीं कान वहीं नाक हाथ पांव सब वही लेकिन फिर भी हर शख्स अलग है । कोई उस जैसा कलाकार यकीनन नहीं है इस इस्म का विर्द कराने वाला शनों जहां में इज्जत पाता है अगर दुनिया के दुखों ने भुक्कू छीन लिया हो तो इस नाम का विर्द करे । दिती सुकून हासिल होगा । अगर २१ दिन किसी बांझ औरत को यह नाम पाक पानी पर दम करके पिलाएं तो अल्लाह उसे औनाद प्रदान करेगा ।

(90) अस्मानि

इस नाम के मायने है सलामती वाला । बैशक वह सबसे अच्छे नामों वाला है अगर इस नाम को हमेशा विद किया जाए तो सारे मक़ासिद पूरे हों । इस नाम को पढ़ कर रोगी पर दम कर दें तो वह अच्छा हो जाएगा । तालिब इल्म को पानी में दम करके पिलाएं तो इल्म में तरक्की हो । किसी दुश्मन को मिठाई पर दम करके खिलाएं तो वह तो वह बस में हो कर दोस्त बन जाए । अगर किसी डरपोक को इस पाक नाम का दम किया हुआ पानी पिलाएं तो वह बहादुर बन जाएगा ।

السلامة

(११) अलवर्द्धावु

भाषन है बहुत ज्यादा देने वाला। जाहिर है कि अल्लाह बहुत ज्यादा देने वाला है इस नाम को हर वक़्त पढ़ने वाला फकीर भी अभीर हो जाएगा। अगर कोई जरूरत पेश आए तो रात में आसमान की तरफ़ हुआ के अन्दाज़ में हाथ जुलद करके सौ बार यह पुकारा नाम पढ़ें तो अल्लाह जरूरत पूरी कर देगा

(१२) अल गङ्गा

गुप्फार के माघने हैं बखाने वाला । इसमें जरा भी शक नहीं कि अल्लाह ही हमारे गुनाहों को बखाने वाला है । इस नाम का विर्द करने वालों के गुनाह अल्लाह माफ़ कर देते हैं । इस गुप्फार का नाम को-पढ़ने वाले और अल्लाह से प्रार्थित की हुआ माँगने वाले पर दोनख की आग बराम है !

(१३) अलमुअिअज़ं

यानि इज्जत दैने वाला । अस्ताह ही हर आदमी को इज्जत देने वाला है इस नाम को इशा को नामान के बाद कम से कम १४० बार पढ़ने वाले का दुनिया में दर्जा बढ़ेगा, दुःख दोस्त होंगे और उसे कोई सता नहीं पाएगा, उसकी सारी जरूरतें पूरी होंगी ।

(98) अल द्वाफिनु

इसके मायने हैं पतन की तरफ ते जाने वाला। इस नाम की यह वराकत है कि अगर हमेशा कोई पढ़ता रहे तो उसके दुश्मनों का पतन हो जाएगा।

(१५) अल मुजिबिल

इसके मायने है जर्जोल करने वाला अगर कोई खुदा की

issatna.com और अलाह की
नाराज़गी जल्लत दी नहीं है।

जुलूस से नजात पाएगा ।

(१६) अरार्फेअु

इस नाम की बरकत से पढ़ने वाला गुनी हो जाएगा। हर दुनिया की जुर्रत पूरी होगी और दुनिया की हर तकलीफ दूर होगी।

(૧૭) અલ અલીમુ

इसके मायने हैं जानने वाला। परकीर्ण अल्लाह हर बात जानता है और कोई राज ऐसा नहीं जो उससे छिपा हो। कोई जायज नज़रत पैदा आए तो अकेले में दो रक़त नमान पढ़ें और नमान के बाद एक हजार बार यह नाम पढ़ें तो काम पूरा हो जाएगा। इस नाम का पढ़ना मामूल बना लें तो अल्लाह उसको हक़ का इशान अता करेंगे। अतिसया किराम इसे हर वज़त पढ़ते रहे हैं।

(१८) अल बासितु

मायने हे कुशारा करणे वाला, फेलाने वाला । इस नाम को पढ़ने वाले की हर दुआ कबूल होती है ।

(१६) अल काबिजु

पापने हैं तग करने वाला। खुदा ही हर बात पर काँटिर है वह चाहे तो फेरलए चाह तो तंग कर। इत नाम को खाने के दक्तर पढ़ने वाला कभी फाँके का शिकार न होगा। हमेशा हर नमान के बाद पढ़ने वाले पर दोनख की आँव हलाम है। उस पर कोई दुश्मन फलत हलिल नही कर सकेगा।

(२०) अल बसीर

पायने हैं देखने वाला । अल्लाह से कोई बात छिपी नहीं । वर

दिलों की बात से भी परिचित है इस नाम को हमेशा पढ़ना घुस के दरबार में अपने को मकबूल बनाना है। हर अक्ष की नमाज़ के बाद पढ़ने से बचाओं (बलाओं) से बचा रहेगा।

(२१) अल हकी मु

اَلْحٰكِيْ

मायने हैं हिकमत वाला। फ़ैसला करने वाला। अल्लाह के बराबर कौन हिकमत वाला है इस नाम को अगर कोई रोज़ाना पढ़े तो कभी किसी ज़रूरत में परेशान न हो। जुमे की रात में पढ़ने का मापूल बना लिया जाए तो अल्लाह का फुर्ब हासिल होगा। शुमार बार पढ़ना चाहिए।

(२२) अल अदबु

اَلْاَدَبُ

मायने हैं इत्साफ़ करने वाला। अल्लाह से बड़ा ज़न और कौन हो सकता है इस नाम को हमेशा पढ़ने वाला सारे लोगों में इज़्जत हासिल करेगा। कोई उस पर जुल्म न कर सकेगा। कोई मुकदमा या इस तरह की कोई मुश्किल पेश आए तो इस पाक नाम का क़रीफ़ा करना चाहिए। हर ज़रूरत के लिए इसका विद किया जाए ज़रूरत पूरी होगी।

(२३) अस्समीक

اَلْاَسْمِيْکُ

मायने हैं सुनने वाला। अल्लाह हर बात को सुनता है चाहे दिल से ही क्यों न कही जाए। अगर कोई इस नाम को सा बार पढ़ेगा तो हर दुआ जो नेक मक़सद के लिए मांगी जाएगी पूरी होगी।

(२४) अल लतीफ़ु

اَلْاَلْفِیْ

मेहरबान और मेहरबानी करने वाला, अगर कोई अपनी लड़की की शादी के लिए इस नाम को नमाज़ के बाद पढ़ेगा तो अच्छा रिश्ता मिलेगा बच्ची आराम पाएगी। जो पढ़ने के लिए हमेशा का मापूल बनाएगा उसकी हर दुआ कुबूल होगी।

(२५) अल ह-क-मु

اَلْاَلْفِیْ

मायने हैं फ़ैसला देने वाला। अल्लाह से बढ़ कर फ़ैसला देने वाला कौन है। लोगों में लोक प्रियता हासिल करने के लिए इस नाम का विद करें। यह खास इस्ते आज़म है इसकी बरकत से इय्यन दोस्त हो जाएंगे और हसरत करने वाले अपने हो जाएंगे। बुरा चाहने वाले नके हो जाएंगे रोज़ पढ़ना बरकत का सबब है।

(२६) अल फ़ताहु

اَلْاَلْفِیْ

मायने हैं खोलने वाला। यकीनन वह अपने नेक बन्दों पर रहमत खोलने वाला है। इस नाम को हमेशा पढ़ना चाहिए इसकी बरकत से ज़मीन व आसमान की सारी आफ़तों से हिफ़ाज़त होगी और दुनिया मातहत होगी।

(२७) अलख़वीरु

اَلْاَلْفِیْ

अगर किसी की तबीयत नेकी व मलाई की तरह न आती हो तो इस नाम को पढ़ने के लिए कहें। अल्लाह ने चाहा तो इसकी बरकत से नेक बन जाएगा। इस लिए इस पाक नाम की एक विशेषता यह है कि इसे इशा की नमाज़ के बाद १०० बार पढ़कर सो जाए तो वह जिस बात को जानना चाहेंगे ख़ाब में मालूम होगी इस नाम में बड़ी बरकत है।

(२८) अलमोमिनु

اَلْاَلْفِیْ

मायने हैं शान्ति व सुकून देने वाला। जाहिर है कि वही शान्ति देता है। इस नाम को पढ़ने वाला दुश्मनों से नज़ात पाएगा और शैतान उसका कुछ न बिगाड़ सकेगा।

(२९) अलमुहयमिनु

اَلْاَلْفِیْ

मायने हैं पहरा देने वाला, निगरानी करने वाला। अगर कोई इस नाम को तेजना पढ़ेगा तो सारी मुसिवतों से अल्लाह उसे बचाएगा। उसे हक की राह मिलेगी और अल्लाह जल्त प्रदान करेगा।

(३०) अलमुत-कबिर

أَلْمُوتُ الْكَبِيرُ

मायने हैं महानता व बड़ाई वाला। महानता केवल खुदा ही के लिए है जब भी कोई नया काम शुरू करना हो इस नाम का विद करे कामयाबी शत है। इन्शेआ बिना ज़रूरत पढ़ना भी नकी व भलाई है।

(३१) अल क़ुद्दूस

أَلْقُدُّوسُ

मायने हैं प्रकोप व गुस्सा नाजिल करने वाला। अल्लाह अगर रहीम है तो प्रकोप वाला भी है उसके प्रकोप से हर वस्तु पनाह पायंगी चाहिए इस नाम को जो आदमी तेज पढ़ेगा अल्लाह उसके दुश्मनों पर अपना प्रकोप बनेगा।

(३२) अरज़ाकु

أَرْزَاكُ

मायने हैं रोजी देने वाला। बेशक हमें वही रोजी देता है। इस नाम को पढ़कर घर के हर कोने में दम करे गरीबों दूर होंगी। जब भी वक़्त मिले इस का विद करे तो अच्छा रहता है।

(३३) अल अजीमु

أَلْأَزِيْمُ

मायने हैं महानता व बड़ाई वाला। बिबाय ही अल्लाह बेनियांज है इस नाम का हमेशा विद करने वाला दुनिया व दीन में महानता पाएगा। कभी किसी दुश्मन से हार न माने। कोई उसका बुरा न चाहेगा और जहाँ भी जाएगा लोग उससे मरक़ब होंगे। दुनिया में इज़्ज़त हासिल करने के लिए इस नाम के वजीहे से बेहतर कोई वज़ीफ़ा नहीं।

(३४) अल जब्बार

أَلْجَبَّارُ

जबरदस्ती करने वाला। अल्लाह बड़े बड़े ज़ब्र करने वालों को तोकने वाला है वह सबसे ज्यादा ज़बरदस्त है इस नाम को पढ़ने वाले की सब इज़्ज़त करेगी और कोई उसे परेशान न करेगा अगर किसी को पेट की बीमारी हो तो पानी में दम करके पिलाए ठीक हो जाएगा।

(३५) अलबदीक

أَلْبَدِيْقُ

जब भी कोई परेशानी वाली बात सामने हो या किसी तरह की कोई मुहिम सामने हो तो हर नमाज़ के बाद इस नाम का विद करे तो अल्लाह मुश्किल आसान कर देता है। हर मुश्किल को यह नाम आसान कर देता है। इस नाम के मायने हैं नई तरह पैदा करने वाला।

(३६) अल वारिस

أَلْوَارِثُ

किसी भी मुसीबत के वक़्त इस नाम का विद मुसीबत के खातमे की ज़मानत है। अल्लाह सारे आलम का वारिस है और उसी मुश्किल से पनाह हासिल करने की हुआ मागनी चाहिए क्योंकि अल्लाह सबका वारिस है इस लिए वह अपने बन्दों की हर मुश्किल आसान कर देता है।

(३७) अल बाकी

أَلْبَاقِي

अल्लाह ही रहने वाली हस्ती है वरना यह सब ख़त्म होने वाला है। इस नाम को सच्चे दिल से पढ़ने वाले की गरीबी दूर होगी और उसे नैक कामों को करने की तौफीक नसीब होगी।

(३८) अल गफ़ूर

أَلْغَفُوْرُ

किसी भी तरह की बीमारी हो इस नाम को लिख कर पोकर

खिलाएँ खुदा की मेहरबानी से ठीक हो जाएगा। इस नाम के मायने हैं मफिरत और माफी प्रदान करने वाला, इसलिए इस नाम की बरकत से अपनी खताएँ बख्शवानों के लिए हर नमाज के बाद अनगिनत बार पढ़ना चाहिए।

(३८) अल हादी

اَلْهَادِي

इस पाक नाम के मायने हैं हिदायत करने वाला। इस नाम को हमेशा पढ़ना चाहिए। इससे नेक कामों की तौफीक हासिल होती है।

(४०) अल मानिक

اَلْمَانِك

मायने हैं रोकने वाला। अगर भियां बीबी में नाशजनी हो तो दोनों में से कोई भी इस पाक नाम का विद करे तो नाशजनी दूर होगी और मुहब्बत कायम होगी। अल्लाह पाक इस नाम की बरकत से विद करने वाले को सारे बुरे कामों से रोकता है।

(४१) अल कवीर

اَلْقَوِيْر

इसके मायने हैं बड़ाई और महानता। इस पाक नाम को हमेशा पढ़ने वाला दीन व दुनिया में महानता में बुनूर्गी पाता है और उसकी सारी जरूरतें पूरी होती हैं। लोकप्रियता और लोगों में इज्जत हासिल करने के लिए इस पाक नाम का विद हर नमाज के बाद करना चाहिए अल्लाह ने याह्रा तो वह जहां जाएगा उसका कोई दुश्मन उस पर फतह न होने जाएगा और इज्जत हासिल होगी।

(४२) अल हफीज

اَلْحَفِيْظ

मायने हैं हिफाजत करने वाला। अल्लाह ही सबका मुहाफिज है वही हमें सारी बुराईयों व आफतों से बचाने वाला है और हमारी देखभाल करने वाला है। इस नाम का विद करने वाला सारी बुराईयों से बचेगा। शैतान का वार उस पर न चल सकेगा और उसका कोई दुश्मन उस पर गालिब न आ सकेगा।

اَلْاِسْمَاعِيْلِي

इसको हमेशा पढ़े। सारे आलम की निगाहों में बुनूर्गी व महानता पाएगा। इस नाम के मायने हैं बुलन्दी वाला। इस हिसाब से पढ़ने वाले को अल्लाह महानता व बुलन्दी प्रदान करता है। हमेशा नमाज के बाद पढ़ने से दर्जा और इज्जत बढ़ती है।

(४४) अन्नाफिक

اَلْاِنْفَاك

मायने हैं नफा देने वाला। अल्लाह से बड़ा कोई नफा देने वाला नहीं। इस पाक नाम को कारोबार और अन्य दुनिया के काम शुरू करते वक़्त पढ़े तो कामयाबी मिलेगी।

(४५) अलमुकीतु

اَلْمُكِيْتُ

दिल किसी दुश्मन से डर रहा हो तो फूल पर सी बार दान करें और उसकी खुरदुर सड़ें तो दिल में तफ़्त पैदा होगी। दुश्मन का डर गालिब न आएगा। इस नाम के मायने हैं तेजी देने वाला। इस नाम में खास बरकत की बात यह है कि अगर गरीब रोज़ाना पढ़े तो उसकी गरीबी दूर होगी और अल्लाह उसे पैस से रोज़ी देगा।

(४६) अन-नूर

اَلْاَنْوَر

मायने हैं रोशन करने वाला। अल्लाह पाक इस नाम का विद करने वाले के दिल व हिमाज की रोशन कर देता है और इस पाक नाम को हमेशा इशा की नमाज के बाद पढ़ने से पढ़ने वाले की क़ब्र रोशन कर दी जाएगी।

(४७) अशशकूर

اَلْاَشْشَكُوْر

मायने हैं क़द्रदान। अल्लाह हर आदमी के अच्चे अमल में क़द्र करता है। अगर घर में तर्गी और खाने पीने की परेशानी हो तो इस पाक नाम का विद करना चाहिए तर्गी दूर होगी।

(४८) अल आखिरु

الْآخِرُ

मायने हैं सबसे आखीर वाला। अल्लाह की ज्ञात पर ही सारी विशेषताएँ खत्म हैं इस नाम को हमेशा पढ़ना जहन्नूम से नजात पाना है।

(४९) अल हसीबु

الْحَسِيبُ

मायने हैं हिसाब करने वाला। इस नाम को पढ़ने से दुनिया की सारी मुसीबतें दूर होंगी। हर वक़्त जब भी मौका मिले इस नाम का विद किया करें।

(५०) अल जलीलु

الْجَلِيلُ

इस नाम के मायने हैं बुजुर्गी और बड़ई वाला इस शब्द को लिख कर साथ रखें। कोई मुसीबत पेश न आएगी और सारे मामले अच्छी तरह पेश आएंगे।

ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

(५१) जुल जलाली वल इकराम

कुछ लोगों ने इस नाम को इससे आज़म ख़ास लिखा है। हज़रत मुलेमान अलीहि० को यही इससे आज़म बताया गया था।

(५२) अल मजीदु

الْمَجِيدُ

मायने हैं बड़ी शान वाला। इस नाम को हमेशा पढ़े बीमारियों से बचे रहेंगे। अगर कोई को घोकर पिलाया जाए तो अल्लाह ठीक कर देगा।

(५३) अल ज़ामिऊ

الزَّامِعُ

मायने हैं जमा करने वाला। अगर कोई अपने रिश्तेदारों से issalah (सुलह) करे तो उसकी इज्जत बढ़ती है।

(५४) अल करीमु

الْقَرِيبُ

इस नाम के मायने हैं करम वाला। इस नाम की बरकत से पढ़ने वाला हमेशा इज्जत से रहता है लोगों में उसकी इज्जत बढ़ती है।

(५५) अश्शहीदु

الشَّهِيدُ

मायने हैं शहीद। अल्लाह हर जगह मौजूद है। अल्लाह के इस नाम को अगर कौन पढ़ा करे तो रिवाइ अमल में आएगी। बे औलाद पढ़ा करे तो औलाद होंगी। इस पाक नाम को एक कागज़ के चार कोनों पर लिखें और बीच में किसी खोयी हुई चीज़ का नाम लिखें तो वह चीज़ मिल जाएगी।

(५६) अलमाजिदु

الْمَاجِدُ

मायने हैं इज्जत वाला। इस नाम की बरकत से पढ़ने वाला हर जगह या इज्जत होगा और लोग उसका अदब करेंगे। लोगों के दिल बस में होंगे, दुश्मन दोस्त बन जाएंगे।

(५७) अल हय्यु

الْحَيُّ

मायने हैं ज़िन्दा रहने वाला। अल्लाह ही बेशक हमेशा रहने वाला है इस नाम को पढ़ने वाला लम्बी उम्र पाता है और अगर बीमार पड़े तो अच्छा होगा।

(५८) अल वाजिदु

الْوَاقِعُ

मायने हैं पालने वाला। निश्चय ही वह सारी दुनिया का पालने वाला है और इस नाम को पढ़ने वाला हर जगह इज्जत पाएगा। अगर ग़रीब पढ़े तो अमीर होगा और ग़ैब से चीज़ें पाएगा।

(५६) अलकयूम

इस नाम के मायने हैं कायम रखने वाला। इस पाक नाम को हमेशा पढ़ने से जादू टोने का असर नहीं हो सकता।

أَلْكُؤْمُ

(६०) अलकादिर

मायने हैं कुदरत वाला। अल्लाह ही हर चीज पर कादिर है इस पाक नाम का विद करने वाले को हर दुश्मन पर फतह हासिल होगी और कोई भी दुनिया की मुश्किल क्या न हो आसान हो जाती है।

أَلْكَادِرُ

(६१) अल अव्वलू

इस नाम का मतलब यह है कि सबसे पहले वाला। ज़ाहिर है कि अल्लाह ही सबसे पहले है। अगर कोई अल्लाह से मकरूम इसे पढ़े तो अल्लाह उसे नेक आलाह प्रदान करेगा इस वर्जों को पढ़ने से हर मुराद पूरी होगी।

أَلْأَوَّلُ

(६२) अलवालियु

मायने हैं मौलिक। बेशक अल्लाह ही हमारा मौलिक है। इस नाम का विद करने वाला हमेशा आफतों से बचा रहता है अगर किसी का दिल जीतना हो तो इस पाक नाम का विद करे अल्लाह से हुआ माने मुराद पूरी होगी।

أَلْوَالِي

(६३) अल बातितु

अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए इस नाम को हमेशा पढ़ा करे चूँकि अल्लाह हर भेद को जानता है इसलिए इस नाम के पढ़ने से अल्लाह के भेद ज़ाहिर हो जाते हैं।

أَلْبَاتِئُ

(६४) अज़ ज़ाहिर

أَلْزَاهِرُ

मायने हैं ज़ाहिर करने वाला। इस नाम को पढ़ने वाला देखने इस पाक नाम के मायने हैं सारे देशों का बादशाह। इस पाक नाम को हमेशा पढ़ने वाला दौलत मन्द हो जाता है और उसकी हर दीनी व दुनिया की जरूरत पूरी हो जाती है।

أَلْمَلِكُ الْمَلِكُ

(६५) मालिकुल मुल्क

मायने हैं सारे देशों का बादशाह। इस पाक नाम को हमेशा पढ़ने वाला दौलत मन्द हो जाता है और उसकी हर दीनी व दुनिया की जरूरत पूरी हो जाती है।

(६६) अरसमदु

أَلْأَسْمَدُ

इस पाक नाम के मायने हैं वे जरूरत वाला। यकीनन अल्लाह को किसी बात की जरूरत नहीं है। यह ग़नी है इस पाक नाम की बरकत से पढ़ने वाला हमेशा ग़नी रहता है और इस पर किसी ज़ालिम का जोर नहीं चलता।

(६७) अलवददु

أَلْوَدَدُ

मायने हैं मुहब्बत करने वाला। अल्लाह सबसे मुहब्बत करता है। अगर भिया बीवी में नाचाती हो तो यह एक पाक नाम पढ़ा करे। छुटा ने चाहता तो उसे कामयाबी हासिल होगी और भिया बीवी एक दूसरे के मतवाले हो जाएंगे। सच्ची मुहब्बत के लिए भी यह नाम पढ़ा जाता है अल्लाह इस नाम की बरकत से दूरे दिल जोड़ देता है।

(६८) अल वासिऊ

أَلْوِاسِئُ

मायने हैं खोलने वाला, फैलाने वाला। इस नाम को पढ़ने से मालवारी और दौलत मन्दी हासिल होगी।

(६९) अर्रऊफु

أَلْأَرْؤُفُ

मायने हैं नर्मी करने वाला। इस नाम का पढ़ना लोगों के दिलों को जीतने का ज़रिया बनता है दुश्मन नाकाम रहे।

(७०) अलगनियु

اَلْغَنِي

मायने हैं बेपरवाह। इस नाम का पढ़ना रिजक को खोलने के लिए फायदे मन्द है।

(७१) अलमुकसितु

اَلْمُقْسِطُ

मायने हैं इन्साफ़ करने वाला। इसको पढ़ना आसब और शैतान को दूर करने के लिए बेहतरीन इलाज है।

(७२) अल मुगनी

اَلْمُغْنِي

मायने हैं परवाह न करने वाला। अगर कोई इस नाम का विद करे तो सारी दुनिया से बे परवाह हो जाए।

(७३) अल मुजीबु

اَلْمُجِيبُ

मायने हैं कुबूल करने वाला। अगर कोई इस नाम का विद करे तो सारी दुनिया से बे नियान हो जाएगा।

(७४) अरफ़ीबु

اَلْاَرَفِيُّ

मायने हैं देख माल करने वाला। हमेशा इसे पढ़े तो अल्लाह जान व माल का रखवाला होता है।

(७५) अल वकीबु

اَلْوَكِيْبُ

मायने हैं काम बनाने वाला। हमेशा पढ़ने से अल्लाह बिगड़े काम बना देता है।

(७६) अल बाअिसु

اَلْبَاعِثُ

मायने हैं उठाने वाला। इस नाम का पढ़ना हर मकसद के लिए [issalah.org/Arabic/English/niail/odisha](https://www.issalah.org/Arabic/English/niail/odisha)

(७७) अल क़वियु

اَلْقَوِي

मायने हैं ताक़तवर। इस नाम के पढ़ने से दुश्मन नीचा होता है।

(७८) अलवलियु

اَلْوَلِي

मायने हैं हिमायत करने वाला। यह नाम बुरी आदतों से बचाता है और सीधे रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ दिलाता है।

(७९) अलमुहसि

اَلْمُحْسِي

मायने हैं ग़िम्तने वाला। इसका वर्जोफ़ अनुरूपी बीमारियों को दूर करता है।

(८०) अल्मुअीदु

اَلْمُعِيْدُ

मायने हैं दोबारा पैदा करने वाला। यह नाम खोए हुए लोगों को तलाश करने के लिए पढ़े।

(८१) अल-अहदु

اَلْاَحَدُ

मायने हैं अकेला। अगर बीमार पर इस नाम को पढ़कर दम करे तो ठीक हो जाएगा।

(८२) अलमुक़तदिरु

اَلْمُقْتَدِرُ

मायने हैं हुकूमत वाला। इस नाम का पढ़ना सारी बलाओं से नज़ात दिलाता है।

(८३) अल-मुक़ददिमु

اَلْمُقَدِّمُ

मायने हैं आगे करने वाला। इसका विद करने वाला हर जंग में फ़तह पाएगा।

महमुदुन

इस पाक नाम के पढ़ने से ग़रीबी दूर होती है।

محمود

(१३)

फ़ासिमुन

जो कोई इस पाक नाम का रोज़ाना बिंद करे अल्लाह उसे आलम बना देता है।

فاطمه

(२०)

आकिबुन

कोई भी ज़रूरत हो अल्लाह इस नाम के पढ़ने वाले को इच्छा पूरी करता है।

عاقب

(१३)

फ़ातिहुन

इस पाक नाम को रोज़ाना पढ़ा करे तो अल्लाह को कुर्बत हासिल होगी।

فاطحه

(१६)

माहिन

रोज़ाना पढ़ने से रश्क का दिन आसान होगा।

ماهين

(१९)

हाशिरुन

इस पाक नाम को कमज़ोर तालिब इल्म पढ़े तो इल्म में तरक्की होगी।

هاشرون

(२०)

खातिमुन

इस पाक के दिन सत्तर बार पढ़कर दुआ मांगे तो मुत्ताद पूरी होगी।

خاتمه

(१९)

दाअिन

इस नाम पाक को पढ़ा करे दुनिया में इज़्ज़त हर दिल अज़ीज़ी (लोकप्रियता) हासिल होगी।

داइन

(१९)

www.issu.com/abcp123/issu.com/pdisha

हमेशा पढ़ने वाल पर कब भी भी हिंदी/Urdu

بشير

(२१)

रसूलुन

जब किसी आर्थिक परेशानी में पड़ जाए तो रोज़ाना इस पाक नाम को पढ़ा करे अल्लाह परेशानी को दूर करेगा।

رسول

(२१)

ताहा

इस नाम को ज्यादा तादाद में पढ़ने से बरकत हासिल होगी।

طاه

(१५)

हादिन

सीधे रास्ते पर चलने के लिए हमेशा इस नाम को पढ़ा करे।

هادين

(१५)

नकीरुन

कब्र में अज़ाब से बचने के लिए इस नाम को पढ़ा करे।

نكير

(२३)

नबीयुन

हक का इल्म हासिल करने के लिए इस नाम को पढ़ाकरे।

نبي

(२१)

ख़लीलुन

अगर किसी को बुरे ख़ाब दिखाई दे तो इस नाम को रोज़ाना सोने से पहले पढ़ा करे।

خليل

(२१)

यासीन

अगर आधी रात को नींद सर हो कर पड़ेगा तो अल्लाह हर प्रार्थना पूरी करेगा।

يسين

(१५)

मुज़म्मिलुन

مزمّل

(१५)

इस नाम को नाशर व गरीब को चाहिए कि रोज पढ़ा करे
गरीबी दूर होगी।

वलीयुन

अल्लाह की रजा व खुशी हासिल करने के लिए इस पाक नाम
का वर्जीफा करे।

नसीरुन

फिर में इस पाक नाम को पढ़े यकन न होगी और सफर
आसान हो जाएगा।

हमीदुन

हुरी आदती से बचने के लिए इस नाम को अपनी ज़बान पर
रखे।

कलीमुन

हुरी आदती वाला इस नाम को पढ़े तो अच्छी आदती वाला
बन जाएगा।

मुद्दसिसरुन

इस नाम को पढ़ने वाला शैतान की चालों से बचा रहेगा।

मुसददिकुन

इस नाम को सुबह होते ही दस बार पढ़े सात दिन झूठ ज़बान
से न निकले।

हबीबुन

एक हजार बार रोजाना पढ़ किफा करे सारी दुनिया बस में
हो जाएगी।

हुज्जतुन

किस्ती भी ज़रूरत के लिए इस नाम का हिंद करना चाहिए।

issuu.com/ul23/niall/odisha

बात करने वाला बना देगा।

शहीदुन

इस नाम मुबारक को दांतों में मिसवाक करते वक़्त पढ़ा करे।
दात जुदाये में भी कायम रहेंगे।

मुस्तफ़ा

नेक कामों को ताहीक को हासिल करने के लिए इस नाम का
हिंद करे।

बयानुन

अकलमन्दी और सख़्त ब्रह्म हासिल करने के लिए इस नाम का
पढ़ना बेहतर है।

मुर्तज़ा

सारी आसमानी व ज़मीनी आफ़तों से बचने के लिए रोज़ पढ़ा
करे।

काइमुन

अगर बारिश न होती हो तो रात के वक़्त एक हजार बार
पढ़ा करे। बारिश ज़रूर होगी।

मुख्तारुन

शहर घाटी और बुलन्द दर्जा हासिल करने के लिए रोज़ ५०
बार पढ़ा करे।

हाफ़िज़ुन

तमाम मुसीबतों से बचने के लिए बेहतरीन ज़रिया है।

आदिलुन

इस पाक नाम की बारकत से पढ़ने वाला हर जगह इज्जत की निगाह से देखा जाता है।

सादिकुन

आसेब को दूर करने के लिए इस पाक नाम को पानी पर दम करके रोगी पर छिड़के।

नूरुन

जो आदमी रोजाना बिना नागा पढ़ा करे ख्याल में हरिज न डरे।

वाअिजुन

जो आदमी रमजान शरीफ में सौ बार रोजाना पढ़ा करे अल्लाह उसको हर इबादन कुबूल करेगा।

मुतीनुन

इस नाम को पढ़ने से दिल के इरादे पूरे होते हैं।

साहिबुन

इस नाम को पढ़कर रोगी पर दम करने से अल्लाह शिफा देगा।

बुरहानुन

इस नाम के पढ़ने से गरीबी दूर होती है।

नातिकुन

हुमन से महफूज रहने के लिए हर दिन पढ़ा करे।

मकीनुन

इस वज्जीफे को पढ़ने वाला आख की रोजानी कम होने से बचा

रऊफुन

इस नाम को पढ़कर जिस हाकिम के पास जाएं वह इज्जत से पेश आएगा।

मुतीउन

इस नाम को पढ़ने से गुनाहों से मगफिरत हो जाती है।

मुरब्बी

इस पाक नाम को बिच्छू, साँप और पगल कुत्ते आदि जानवरों के डसे हुए पर दम करना चाहिए ठीक हो जाएगा।

अमीनुन

इसे पढ़ने वाला कभी जर्तल नहीं होता।

यतीमुन

इस नाम को पढ़कर दावों पर दम करे याव अल्लाह के करम से भय नएंगे।

हिजाज़ीयुन

नबी करीम सल्ल० की खुशनुदी हासिल करने के लिए इस नाम को पढ़ा करे।

करीमुन

बेरोजगार इस नाम को पढ़ा करे अल्लाह उसे रोजगार प्रदान करेगा।

गरीबुन

इस इस्मे आजम को अगर पागल कुत्ते पर दम कर दे तो वह फिर से किसी पर हमला नहीं करेगा।

अलीमुन

इस पाक नाम के पढ़ने से इज्जत होता है।

अजीजुन

इस नाम को अगर अधिक पढ़े तो इसका मतलब मिल जाए (हरामकारी के लिए कभी न पढ़े)

عَرِيبُ

عَلِيْمُوْن

اَزِيْزُوْن

कुरआनी इस्मे आजम की तौसीफ़

इसमें कोई शक नहीं कि कुरआन मजीद का एक एक शब्द इस्मे आजम है और कुरआन पाक का, कोई सूरात या आयत तिलावत की जाए तो खुदा की रहमत नाज़िल होती है मगर कुछ ऐसी आयतें और सूरातें हैं जिन्हें खास तौर से मुग़ाद शायिल करने के लिए पढ़ते हैं नीचे हम उन कुछ आयतों और सूरातों के बारे में बयान करते हैं क्योंकि इस छोटों से किताब में पूरी तफ़सील की गुंजाइश नहीं।

issuu.com/23/niali/odish
सूरा फ़ातिहा

किसी भी ख़तरनाक बीमारी से नज़ात पाने के लिए सूरा फ़ातिहा को पढ़कर पानी पर दम करके रोगी को पिलाएं। आसेब वाले भी यही अमल करें शिफ़ा होगी।

सूरा बकरा

इस महान सूरा की तिलावत करने वाला ज़िन्ना, मूला, आसेब, डाकू और दूसरी मुसीबतों से बचा रहता है। पढ़ने वाले पर शैतान का हमला नहीं होता।

सूरा आले इमरान

हमेशा पढ़ा करें तो कियामत के दिन यह महान सूरा एक सार्दबान की सूरात में सूरज की गर्मी से बचाएगी। इस सूरा के पढ़ने से हिमगी उलझन खत्म होती है और सुकून हासिल होता है।

सूरा कहफ़

दीन व दुनिया की मलाई हासिल करने के लिए रोज़ाना एक बार पढ़ें। सारी शक्तियों के लिए पढ़कर अल्लाह से मदद मांगें। मतलब पूरा होगा।

सूरा यासीन

इससे तमाम आफतें दूर हो जाती हैं। पढ़ने के बाद दुआ मांगें तो कुबूल होती है। अल्लाह पाक इस सूरा के पढ़ने वाले के सारे गुनाह माफ़ कर देता है। अगर मरने वाले के पास पढ़ी जाए तो अल्लाह उस बन्दे पर सकारात मौत आसान कर देता है जहाँ इसे पढ़ा जाए वहाँ पर ज़िन्ना, मूला, आसेब या अन्य ख़बीस रुहों का आना मुमकिन नहीं है।

سُورَةُ الْكَافِ

سُورَةُ الْيَاسِيْنِ

سُورَةُ الْاٰلِ اِيْمَرٰنَ

सूरा फ़तह

इस सूरा के पढ़ने से पढ़ने वाले पर दुश्मनों का वार नाकाम होता है और पढ़ने वाला हर जगह कामयाब होता है। अगर ४० बार पढ़कर किसी मुक़द्दमे में जाए तो हक़ में फैसला होगा अगर कोई जरूरत पेश हो तो सो बार पढ़कर हुआ मांगे अल्लाह कुबूल फ़रमाये।

सूरा रहमान

कोई भी दुनिया की जरूरत पेश हो तो सूरा रहमान पढ़ कर अल्लाह से हुआ मांगनी चाहिए तो अल्लाह अपनी रहमत कामला से पढ़ने वाले की जरूरत पूरी फ़रमाते हैं अगर गरीब पढ़े तो मालदार हो जाए रोमी पढ़े तो अच्छा हो जाए कैदी पढ़े तो रिहाई पाए गुनहगार पढ़े तो तौबा की तौफ़ीक़ हो और प्रेमी पढ़े तो मतलूब मिल जाए।

सूरा मुहम्मद

इस सूरा को पढ़ने वाला इज्जत हासिल करे अगर बीमार को दम करके पिलाया जाए तो सैहत पाए और इस लिख कर गले में डाले तो दुश्मन उस पर फ़तह शायिल न कर सके। इस सूरा का पढ़ना हर तरह की परेशानियों से बचा कर रखता है।

सूरा मुज़म्मिल

इस सूरा का पढ़ने वाला हुनूर सल्ल० का दीदार करता है जिन दुनिया की मुश्कलों के लिए इस सूरा की तिलावत की जाती है वे हल हो जाती हैं। रोमी को दम करके पिला दे तो अच्छा हो जाए। तमाम मज़ासिद के लिए इस सूरा की तिलावत करनी चाहिए।

सूरा वाकिआ

अगर इस सूरा को कोई फ़ाका वाला पढ़े तो पैब से रिज्क उतरता है गरीब पढ़े तो मालदार हो जाए रोमी पढ़े तो अच्छा हो। इस सूरा को हर नमान के बाद पढ़ना चाहिए।

सूः नूह

अगर कोई दुश्मन बहुत तंग कर रहा हो और उससे बचने की कोई और सुरात न हो तो सूः नूह तिलावत करके अल्लाह से हुआ मांगे, दुश्मन बर्बाद हो जाएगा।

सूरा जिन

इस सूरा को तिलावत करने से, खिल्ला करने से ज़िन्न, देव, परी, भूत वश में हो जाते हैं पूरी जानकारी के लिए हमारी किताब अमलियात तसवीर ज़िन्नात का मुताला करे या फिर किसी आमिल या कमाल से मालूम करें। खिल्ला या अमल बिना किसी उस्ताद के कभी न करें।

सूरा मुद्दसिर

गरीब आदमी इस सूरा को पढ़े तो अभीर हो जाए, बीमार पढ़े तो ठीक हो जाए अगर पढ़ने वाला किसी मुहिम पर जाए तो कामयाब हो।

सूरा अलम नशरह

अगर किसी के सीने में या अङ्गुली तौर पर कोई बीमारी हो तो इस सूरा के पढ़ने से अच्छा हो जाए अगर कोई माल खरीद कर पढ़े तो फायदा और बरकत हो और बिजात करने वाला पढ़े तो बहुत ज़्यादा नफ़ा हो।

तर्जुमा

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं वह जिन्या है संभालने वाला न उसे ऊंच आती है न नींद। जो कुछ जमीन और आसमान के बीच है कौन है जो उसके पास सिफारिश कर सके उसकी इजाजत के बिना। वह जानता है हाजिर व गायब हालात और वह मौजूदात उसकी मालुमात में से किसी चीज को भी अपने इत्मा में नहीं ला सकते मगर जितना इत्मा वह चाहे उसकी कुर्सी ने सब आसमानों और जमीन को अपने अन्दर ले रखा है और उसे इन दोनों की हिफाजत कुछ मुश्किल नहीं है वह बुलन्द दर्जे वाला है।

दरुदशरीफ

दरुद शरीफ का हमेशा पढ़ने वाला अल्लाह की पनाह में रहता है मेरा अपना खुद का तर्जुमा है कि जब भी कोई मुश्किल आयी तो दरुद शरीफ का विद किया तो अल्लाह ने मुश्किल दूर कर दी।

नबी करीम सल्ल० ने फरमाया है कि जो मुझ पर एक बार दरुद शरीफ मेजता है खुदा और उसके फरिश्ते उस पर दस बार दरुद शरीफ भेजते हैं और उसकी दस दुआईयों को अल्लाह भिटा देता है इशाद गिरामी है कि जो आदमी मुझ पर ज्यादा दरुद मेजता है वह कियामत के दिन मेरे सबसे करीब होता है तो जब भी मौका मिले दरुद शरीफ पढ़ा करो ताकि नबी करीम सल्ल० की खुशदूरी हासिल हो। दरुद शरीफ मुकामल यह है। स्पष्ट हो कि हर नमाज में यही दरुद शरीफ पढ़ी जाती है।

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ
وَعَلَى الْإِسْلَامِ وَتَحَرِّمْ عَلَى الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ
وَعَلَى الْفِرْيَانِ وَالْمُنَافِقِينَ

अल्लाह हमारे अल्ला, मुहम्मदिय आला आले मुहम्मदिन के मा
सल्ल० व अल्ल० इब्नाहिमा व अल्ला आले इब्नाहिमा इन्का इमीदुम्मीद०

अल्ला हमारे बारिक आला मुहम्मदिय आला आले मुहम्मदिन के मा
बारकला अला इब्नाहिमा व अला आले इब्नाहिमा इन्का इमीदुम्मीद०

तर्जुमा

ऐ अल्लाह दरुद मेज मुहम्मद पर और उनकी औलाद पर जैसा
कि दरुद मेनी तुने इब्नाहिम की औलाद पर। बेशक तू बुजुर्ग है। ऐ
अल्लाह बारकल मेज मुहम्मद पर और उनकी औलाद पर जैसे कि
तुने बारकल मेनी इब्नाहिम पर और उनकी औलाद पर।

हमारे कलिमे
बड़ी अजुमत वाले

हमारे कलिमे जो अल्ल में हमारे ईमान का इकरार है बहुत
सी विशेषताओं के हासिल है जलेमा और शेखों का फरमान है कि
इन कलिमों को पढ़ना बारकल व भलाई का जरिया है और दोन व
दुनिया की कामयाबी है कोई भी परेशानी आए तो कलिमा तय्यबा
का विद शुरू कर दें। अल्लाह पाक अपने हबीब के सरके में मुश्किल
हल करता है मगर इन छः कलिमों को गरीब लगातार पढ़ें तो अभीर

हो जाए तेगी पढ़े तो अच्छा हो जाए किसी पर कोई आसेब हो तो लिखकर पोकर भिलाए तो शिफा होगी अगर पढ़ते हुए किसी हाकिम के सामने जाए तो वह मेहरबान हो अगर राह में डर लगे तो कलिने एक के बाद एक पढ़ते जाए हिफाजत से मौजिल तक पहुंचेगे। मतलब यह है कि कलिने के पढ़ने का मामूल बना ले तो जिनदगी के हर मैदान में अल्लाह पाक कामयाबी अता फरमाए।

सारे कलिने हम यहां तजुबे के साथ पेशा कर रहे हैं—

पहला कलिमा तय्यिब

लां इलाहाइल्लाहा मुहम्मदुर रसूल्लाह

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं।

दूसरा कलिमा शहादत

अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीका लहु व अशहदु अल्ला मुहम्मदन अबदुहु व रसूलुहु०

اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं है वह एक है उसका कोई साझी नहीं मैं गवाही देता हूँ कि बेयाक मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

तीसरा कलिमा तमजीद

सुबहानल्लाहि वल हम्दुलिल्लाहि व ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर० वला हवला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलियिल अजीप०

سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَالْإِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

तजुमा

पाक है अल्लाह और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है ओ० अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। अल्लाह बहुत बड़ा है और किसी में को हरकत व कुव्वत नहीं है जो जुल्द और बड़ी अनुमत वाला है।

चौथा कलिमा तौहीद

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीका लहु लहुल मुल्कु व लहुल हदु मुहमि व मुमीनु वहुवा हय्युल्ला ममूनु अ-ब-दन अ-ब-दा० नुल जलालि वल इकरामि बियाहिहिल खपल० वहुवा अला कुल्ली शयइन करी०

तर्जुमा

अल्लाह के सिवा कोई सच्चा मायूर नहीं वह अकेला है कोई उसका सहाी नहीं उसके वास्ते है मुल्क और उसके लिए प्रार्थना नहीं किया करता है वही मारता है वह कभी मरने वाला नहीं। वह बड़ी शान और बुजुर्ग वाला है उसी के हाथ में मलाई है और वह हर चीज पर काबिज है।

पांचवा कलिमा इस्तगफार

اَسْتَغْفِرُ اللهَ رَبِّيَ اَسْتَغْفِرُكَ رَبِّيَ اَسْتَغْفِرُكَ رَبِّيَ
اَسْتَغْفِرُكَ رَبِّيَ اَسْتَغْفِرُكَ رَبِّيَ اَسْتَغْفِرُكَ رَبِّيَ
اَسْتَغْفِرُكَ رَبِّيَ اَسْتَغْفِرُكَ رَبِّيَ اَسْتَغْفِرُكَ رَبِّيَ
اَسْتَغْفِرُكَ رَبِّيَ اَسْتَغْفِرُكَ رَبِّيَ اَسْتَغْفِرُكَ رَبِّيَ
اَسْتَغْفِرُكَ رَبِّيَ اَسْتَغْفِرُكَ رَبِّيَ اَسْتَغْفِرُكَ رَبِّيَ

असतगग फिर्ललाहा रब्बी मिल् कुल्ती जन्बिन अन् नबतुहु
अ-म-दन अल ख-त-अन सिरन अल निमतव् व तबु इलयाहि
मिनजन्बिल्लनी आलमु व मिन जन्बिल्लनी ता आलमु इन्का अन्ता
अल्लामुल गुपीब व सतालत उरुपीब व गफफास्जन्गीब वला इवला वला
हुनवला इल्ला विल्लाहिल अर्हिमिल अर्जामो

issuu.com/tarjuma/bdpu23/pinili/qdshin

माफ़ी मागता हूँ अल्लाह से जो मैं तूफ़ान में हूँ और मुनाह से जो मैं जानता हूँ और उस मुनाह से जो मैं नहीं जानता। बेशक तू ही मेरा जानने वाला है और छिपाने वाला दोषों का और बख़ाने वाला गुनाहों का और गुनाह से बचाव और मेरी की तौफ़ीक अल्लाह की मदद से है जो बुलन्द और बड़ी अज़मत वाला है।

छठा कलिमा रददे कुफ

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ اَشْرِكَ بِكَ شَيْئًا وَّ اِلَّا
اَعْلَمُ بِهِ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا اَلَا اَعْلَمُ بِهِ تُبْسِتُ عَذَابُ
تَبْرَأْتُ مِنْ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكَذِبِ وَالْغِيْبَةِ
وَالْبَغْيِ عَذَابُ السَّيِّئَةِ وَالْعَوَاجِشِ وَالْبُهْتَانِ
وَالْمَعَاصِي كُلِّهَا وَاَسْلَمْتُ وَاَقْرَبُ اِلَى
اِلَهِكَ اَللّٰهُمَّ عَسَا اُرْسِلُنِيْ

अल्ला हुमा इनी आऊजु बिक्का मिन अन उशरिका बिक्का
शफऊब्अना आलमु बिहि व असतग फिर्लका लिमा ता आलमु बिहि
तुबु अन्तु तबर् अतु मिनल कुफिर वशरिक वल किन्बि वल मीबाते
बलबिद अले वलन मीपतिल बलफयाहिशि वल बोहलानि वलन आसि
कलिला व असतमदु व अफुदु ता इल्ला इल्लाहु मुहम्मदुरसलुल्लाहो

तर्जुमा

ए अल्लाह में तुझ से पनाह मांगता हूँ इस बात से कि मैं साझी बनाऊँ तेरा किसी चीज़ को जानबूझ कर। और माझी मांगता हूँ तुझसे उस गुनाह से कि जिसको मैं नहीं जानता मैंने तीबा की उरसे और मैं बेजान हुआ कुछ से और शिक से और झूठ से और गीबत से और बिरदअल से और चुगल खोटी से और गंदी बातों से और तोहमत से और सारे गुनाहों से और मैं इस्लाम लाया और कहता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।

खासुल खास

इस्मे आजम शरीफ

नीचे दिया गया इस्मे आजम हर मुश्किल के वक़्त पढ़ें खुदा ने चाहा तो कोई ऐसी मुश्किल नहीं जो हल न हो। अल्लाह की क़ुदरत पर पूरा विश्वास रखें अल्लाह से बड़ा कोई मुश्किल क़ुरआन नहीं है। इस्मे आजम शरीफ के बारे में हदीसों में बेशुमार इशारे मौजूद हैं और बुजुर्गाने दीन ने भी इस इस्मे आजम को रोजाना का मासूल बना कर बेशुमार फायदे हासिल किए हैं आप भी इस इस्मे आजम को रोज पढ़ें और फिर क़ुदरत ख़ुदावन्दी का क़ारिमा देखें।

क़ुरआनी इस्मे आजम शरीफ यह है

ترانہ اسمِ اعظم

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللّٰهِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ

issuaredhachbhai2@gmail.com

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللّٰهِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका बिअन्नका अन्ता अल्लाहु ता इलाहा इल्ला अन्ता अलअहदु अससमदु अल्लवी तम यल्लिद वलम यूल्द वलम यकुल्लहु कुफुदन अहद० अल्ला हुम्मा इन्नी असअलुका बिअन्ता तका अलहदु ता इलाहा इल्ला अन्ता अल्लनानु अलमनानु बदी उससमवाति वल अर्जि यानुल जलालि वल इकराम० या हय्यु या कयूम असअलुका व इला हुकुम इलाहु वाहिदुन ता इलाहा इल्ला हुवरहमानुरहीम० अलिफ ताम मीम अल्लाहु ता इलाहा इल्ला हुवल हय्युल कयूम० ता इलाहा इल्ला अन्ता सुबहानका इन्नी कुनु पिनज्जलिमीन०

वे तसवीहें जिनके फायदे इस्मे आजम जैसे हैं

नाफिउल ख़लाइक में लिखा है कि कोई आदमी नमाज़ के बाद ३३ बार सुबहानल्लाह ३३ बार अल्लदुलिल्लाह ३४ बार अल्लाहु अक़बर और एक क़लिमा तीहोद पढ़ा करे तो अल्लाह पढ़ने वाले के सारे गुनाह बख़्शा देगा चाहे वे रेगिस्तान के ज़रों के बराबर ही क्यों न हों। क़ुरबान जाइए प्यारे नबी सल्ल० पर हमें क़िलनी अच्छी और क़िलनी आसान तरकीब बतायी। मग़फ़िरत के लिए अगर आप हम इससे फायदे न उठाए तो हमारी बादशरीबी के सिवा और क्या है।

हुआ गजान-ए- इसरारे इलाही

रिवायत है कि एक दिन हुनूर सल्ल० मस्जिद नरनी में बैठे हुए थे और शैतान भी वहीं खड़ा हुआ था जब नबी सल्ल० की निगाह उस पर पड़ी तो आपने फामाया-ए-बाद बख्त यश कसो खड़ा है? शैतान ने मुस्फुराकर जबाब दिया कि जनाब मैं बाद बख्त नहीं हूँ बल्कि नेक बख्त हूँ क्योंकि अल्लाह सबसे पहले मुझे जन्मत में दाखिल करेगा। हुनूर ने हैरत से पूछा क्यों तेरे पास कोई ऐरा अमल है जो तेरा दाखिला सबसे पहले जन्मत में होगा? तब शैतान ने जबाब दिया कि मुझे हुआ गजाना इसरार इलाही याद होगी वह और यह अल्लाह का वादा है कि जिससे यह हुआ याद होगी वह जन्मत का हकदार होगा। यह सुनकर आप हैरत में पड़ गए। इसी इफ्त हुनूरत निवाइल अलै० आए और उन्होंने कहा कि यह सब कहता है यह हुआ की बारकत से बख्शिया की उम्मीद रखता है मगर खुरा अपने हुक्म से कियामत से पहले इसको यह हुआ-ए-अनी मा मुला देगा। फिर निवाइल अभीन ने कहा-----ए अल्लाह के रसूल सल्ल० यह हुआ आपको बताता हूँ आप इसे अपनी उम्मत तक पहुंचा देंतकि पढ़ने वाले जहन्नुम की आग से नजात पाएँ।

हुआ यह है

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

या इलाहल व शर व अनवीमल खतर व या सरीअज्ज-फ-सी व या मअरुफल अ-सफि व या अजीबा अलमन्ना व मासिक यदम ददीनी० बिहकिक् व इया का नाअबुदु वइया का नस्तअीन् बिहमतिका या अरहमरहीमीन

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के फायदे

जब कोई काम शुरू करो बिस्मिल्लाह पढ़ा करो। काम में बारकत और खुदा की रहमत शामिल होगी। बिस्मिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम पढ़ने से दुनिया व आखिरत में कामयाबी हासिल होती है और सुख रहै भी। औलिया किराम ने भी बिस्मिल्लाह के विद को करने की तसदीक की है जगहिर है कि इसकी कितनी बड़ी अजमत है (यानि इन शब्दों की) कि अल्लाह के कलाम की शुरुआत इन्की मुकरस शब्दों से होती है तो कितनी सहानियत होगी इन शब्दों में। हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि० फरमाते हैं कि जो कोई बिस्मिल्लाह का विद करेगा जहन्नुम के मुधिककलों से जो अजाब देने पर मुकर है नजात मिलेगी और इस तरह कि एक बार के पढ़ने से एक मुधिककल से। बिस्मिल्लाह में पढ़ने की बारकत से सारे मसले हल होंगे सारे मकसिद पूरे होंगे।

जन्मत की कुन्जी क्या है

हनूर सल्ल० का इशार्द है कि

أَخْبَرَنَا أَبُو عَبْدِ اللَّهِ الْعَلَوِيُّ الطَّيْهَرِيُّ

ला हवला बला कुव्वता इल्ला बिल्ला हिल अलियिल अर्जीम पढ़ा करो यह जन्मत की कुन्जी है हमेशा पढ़ना चाहिए इशामन नाकाम हो और शैतान दूर भागाता है। हर आसेब और दुनिया की बलाओं से बचोगे।

नेकियों का पल्ला भारी करने वाला अमल

सही बुखारी शरीफ में है हजरत अबू हुदैर रजि० से रिवायत है कि हुनूर सल्ल० का इशार्द है कि जो कलिये ऐसे हैं कि जिन्हें दुबान से अदा करना बड़ा आसान है मगर अमल की तरानू में उनका वजन बढ़ा भारी है वे कलिये ये हैं -----

सुब्कानल्लाहि वबिहमदिहि० सुब्कानल्लाहिल अनीम०

بِسْمِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 بِأَمْرِ اللَّهِ وَبِحُكْمِ رَسُولِهِ أَهْلُ الْبَيْتِ
 يَا مَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ يَا مَنْ لَا شَرِيكَ لَكَ
 يَا مَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ يَا مَنْ لَا شَرِيكَ لَكَ

تسبیح مکرّم کی فہمالت

ہنر ات اناس بین مالک رننۃ فرماتے ہ کہ نبوی کریم
 سلنۃ نے ہشاد فرمایا ہ کہ جو اس تسبیح مکرّم کو اک
 بار پڑھے گا توں اللہ اسکا سواہ پڑنے والے کے موں باپ کو
 اتا کرے گا اور اسکی فمالتی موں باپ کا ہک اتا کرنے والوں
 میں ہوگی تسبیح مکرّم یہ ہ:-

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ
 وَآلِهِ الطَّيِّبِينَ الطَّاهِرِينَ

اتلہمادو لیللاہ ربیبسمماواتی ولالہ ربیب لیللاہ
 وللہ ربیب فیسماواتی ول الہ ربیب وللہ ربیب لیللاہ

اتلہناما

بھول سے بانوں نے لیللاہ ہ کہ یہ اتلہناما بھی بھول
 برکاتوں والا ہ بلکہ فمالتوں میں تو اتلہناما تسبیح اتلہناما ہ
 اتلہناما کو لیللاہ ہ کہ پڑنے سے مالوم ہوتا ہ کہ جیسے یہ
 بھی فمالتی ہسے آٹام سے کم نہیں ہ بلکہ ہسارے اولم میں
 بانوں ہات ہ ہسارے مالوم مان لینے سے ہارا نہیں ہسے یہ
 بانوں ہات ہ کہ اس اتلہناما ہات کو برکات سے بھول
 کام بان ہ کہ کوہے بھول نہیں کہ اللہ کو ہات کو
 اور بھ ہات ہات کرنے والے کے ہات کو ہات ہات ہ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 بِأَمْرِ اللَّهِ وَبِحُكْمِ رَسُولِهِ أَهْلُ الْبَيْتِ

اللَّهُمَّ فَاطِمَةُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
 عَالِمَةُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ الرَّحْمَنُ
 الرَّحِيمُ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ فِي
 هَذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ أَنْ
 لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ
 لَكَ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَ
 رَسُولُكَ فَلَا تُخَلِّني إِلَى نَفْسِي فَانْكَرُ
 أَنْ تُخَلِّني إِلَى نَفْسِي فَتُخَلِّني إِلَى الشَّرِّ

دُورِ تِلَاج

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

شروع کرتا ہوں اللہ کے نام سے جو بڑا مہربان نہایت رحم والا ہے

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا

اے اللہ رحمت نازل فرما ہمارے سر پر اور مالکِ سر

مُحَمَّدٍ صَاحِبِ الْکِتَابِ وَالْمُعْزَاجِ

صلی اللہ علیہ وسلم پر جو صاحبِ تاج اور سحرِ

وَالْبَرَقِ وَالْعَلَوِ دَافِعِ الْبَلَاءِ وَ

اور برائی اور علمِ حق اور دشمنی کا

اَوْبَاءٍ وَالْقَحْطِ وَالْمَرَضِ وَالْآلِی

دہ اور غمط اور بیماریوں اور گھٹ دور کرنے

اَسْهٖ مَكْتُوبٍ مَرْفُوعٍ مُّشْفُوعٍ

والمے میں ان کا نام مبارک کھا برا ہے بلند صاحبِ شفاعت

مَنْفَعٍ فِي الدُّنْيَا وَالْآٰخِرَةِ وَالْاٰتِلَاقِ وَالْاٰثِلَاقِ

نفع دینے والا دنیا اور آخرت کے اور عالم کے اور عالم

الْعَرَبِ وَالْعَجَجِ وَجَسَدِهِ مَقْدَاسُ

دعوت کے سر پر ہیں آپ کا جسم نہایت قدس

مُعْطَرٌ مَّطْلُوعٌ مِّنْ رِّفْدِ الْبَيْتِ وَ

خوشبو دار اور پاکیزہ اور نازک کعبہ و حریمِ پاک میں

الْحَرَمِ شَمْسِ الضُّحٰی بَدْرُ الدُّجٰی

موز ہے آپِ باخشت گاہ کے آفتابِ صبح کی بات کے بہاب

صَدْرُ الْعُلٰی نُورُ الْهَدٰی كَهْفُ

بندوں کے صدرِ روشن نامِ ہدایت کے نورِ محفوظات

الْوَرٰی وَصَبَاحِ الظُّلُوْ طَجَبِیْلُ

کے مائے پناہ اندھیروں کے چراغِ نیک الحمار کے

السَّیْلِ ط شَفِیْعِ الْاَمُوْ صَاحِبِ الْجُودِ

مالکِ آسمانوں کے بخشنے والے بخشش دار و

وَالْكَرِّ ط وَاللّٰهُ عَاصِمُهُ وَجَبْرِیْلُ

مصرف میں اور اللہ آپ کا نگہبان اور جبریل

خَادِمُهُ وَالْبَرَّاقُ مَرْكَبُهُ وَالْبُعْرَاجُ
 فَرَسْتُ كَلْبًا اور بَرَّاقُ آپ کی ساری اور بُعْرَاجُ
 سَفَرَةُ وَسِدْرَةُ الْمُتَنَهِّلِي مَقَامُهُ
 آپ کا سفر اور سِدْرَةُ الْمُتَنَهِّلِي آپ کا مقام
 وَقَابُ قَوْسَيْنِ مَطْلُوبُهُ وَالْمَطْلُوبُ
 میں قَابُ قَوْسَيْنِ کا ترچہ آپ کا مطلب ہے اور مَطْلُوبُ
 مَقْصُودُهُ وَالْمَقْصُودُ مَوْجُودُهُ سَبِيلُ
 کا مقصود ہے اور مقصود آپ کو حاصل ہے آپ کے رسول کے
 الْمُرْسَلِينَ خَاتَمُ النَّبِيِّينَ شَفِيعُ
 کردار نبیوں میں سب سے نیچے آنے والے گوشتوں کے
 الْهَدَنُ نَبِيَّيْنِ ابْنَيْسِ الْغَرِيبِينَ رَحِمَهُ
 بخوارنے والے ساتروں کے غم خوار دُنيا جہاں
 الْعَالَمِينَ رَاحَةُ الْعَاشِقِينَ وَرَاحَةُ
 کے لیے راحت عاشقوں کی راحت مشتاقوں کی
 الْمُسْتَأْقِنِينَ شَيْسِ الْعَارِفِينَ سِرَاجُ
 مُرَاد مُثَلَّ شامسوں کے انکاب لہ ٹھکانہ پتے

السَّامِكَيْنِ الْإِنْعَامُ الْبَرَّاقُ الْفَرَسُ وَالْبُرَّاقُ
 والوں کے پھاغ متروک کے لہ بَرَّاقُ
 مَحَبِّ الْفُقَرَاءِ وَالْغُرَبَاءِ وَالْمَسْكِينِ
 متاعوں غریبوں اور مسکینوں سے محبت رکھنے والے
 سَيِّدِ الثَّقَلَيْنِ نَبِيِّ الْحَرَمَيْنِ أَمَامِ
 جن کے اُمی و سردار جبریل کے نبی دونوں ہولناکیتوں
 الْقِبْلَتَيْنِ وَيَسِيلُنَا فِي الدَّارَيْنِ
 کہیں کے پھیلا اور دنیا و آخرت میں ہمارے وسیلہ ہیں
 صَاحِبِ قَابِ قَوْسَيْنِ مَجُوبُ رَيْتِ
 وہ جو ترچہ قَابِ قَوْسَيْنِ پر فائز ہیں دو معجزوں اور دو
 الْمَشْرِقَيْنِ وَرَيْتِ الْمَغْرِبَيْنِ جَدُّ الْحَسَنِ
 مغربوں کے رب کے محبوب ہیں ، حضرت امام حسن و حضرت
 وَالْحُسَيْنِ مَوْلَانَا وَمَوْلَى الثَّقَلَيْنِ إِلَى
 امام حسین کے جد امیر اور ہمارے اور تمام حق دانوں کے آقا ہیں
 الْقَاسِمِ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ نَوَازِ
 ابی القاسم محمد بن عبد اللہ کے نواز

مِنَ اللّٰهِ يَا أَيُّهَا الْمُسْلِمُونَ
 بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
 اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی رَسُوْلِكَ
 وَبَارِكْ وَسَلِّمْ عَلٰی اٰلِهِ وَاصْحَابِهِ
 اَمَّا بَعْدُ فَسَبِّحْ

विद्विभल्लाहिरहमानिरीहोम

अल्लाहुम्मा सल्लो अला सायिदेना व मवलाना मुहम्मदिन
 साहिबिनीन वलमेअराजि वल जुराकि वल अलमि० दाकिनिअल बलाई
 वल वबाई वल कहते वल म-र-जि वल अल-मि० इहुमु मकतुमुभर-
 अ-ज-मि० शमसि जुहा० बदरिद जुनआ० सर दित उला०
 नूरिलुहा० कहांकेल वरा० मिसवाहि जुनल-मि जमी-शरीयामि०
 शफल-मि० साहिबि नूदि वल क-र-मि० वल्लाहु आसिमु व जिब्रैल
 खारिमु वल जुराकु वलमेअरानु स-फ-रु व सिररुल मुनतहा
 मकमुमु व कबा कजसयनि मतलुह वल मतलू मकमुमु वलमकसदू
 मवमुमु सयिदिल मुरसलीना खालमन बियीना शफीअल मुज्जिबीना
 अभीसल मगिरीबीना रहमतिल्ल आलमीना राहतिल आशिकीना
 मुरादिल मुशातकीना शमसिल आरिफीना मिरा निससालिकीना
 मिसबाहिल मुकरबीना मुहिबिल फुक-राई वल गुर-बाई वल मसाकीना
 साय्येरिसरफ-सयनि नाबिअल ह-र-मयानि इमामिल किब लतयानि
 वसीलतिना फिरदवारयनि साहिबि केव कवसयनि महबूब रिबल
 मशरिकयनि वल मगिबयनि जदीदल ह-सिसनि वलहुसयनि मव लाना
 व मवल-स-क-सयनि आबिल कौ-सिम मुम्मदिनि अब्दल्लाहि
 नूरारिम्भन नरिल्लाहि या अयुहल मुशातकीना चिनूरी जमालिहि सल्ल०
 अलैहि व अलिहि व असहाबिहि व सल्लिम् तसलीम०

issuu.

गुरु करता है अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और रहम
 मुहम्मद पर जो साहिबे तान, मेरान और जुराकि और निमान के दूर
 करने वाले है सल्लो, दवा कहत (अकल) बीमारी और दर्द के नाम
 उनका लिखा गया है बुलन्द किया गया है नफ़ा किया गया है तोह
 व कलम के बीच में सरदार है आब व कबा के बीच रोशन है सूरज
 बड़ा पाक छुरबदार पाकीना हरम व कबा के बीच रोशन है सूरज
 चारत के चान्द के अयेरी रात के मसनर नयाँन बुलन्द के, नूर
 सीपी राह के, पनाह लोगों के, चाराग अयेरी के। नैक आदतो वाल
 बख़ाने वाले उम्मतों के साहब बाख़िया और जुजुर्गी के और
 अल्लाह निगहबान वाले उम्मतों के साहब बाख़िया और जुजुर्गी के
 और अल्लाह निगहबान है उनका और निब्रैल सेवक है उनके और
 जुराक है सवादी उनकी और मेअराज सफ़र है उनका और सिररुलमुन
 तहा (जो बेरी है आसमान पर) मक़ाम है उनका और क़ाब कौरेन
 (अल्लाह का दीवार) मतलू उनका, नूर मतलू है मक़सद है उनका
 और मक़सद उनके पास मौजूद है। सरदार रसूलों के, खातम सब
 नाबियों के बख़्तवाने गुनाहगारों के, दुखियों और मुसाफ़ियों के, ज़हान
 के लोगों के वारते रहमत है। आशिकों के आराम के, मुशातकों की
 मुराद के सूरज, खुदा के चाहने वालों के चाराग, अल्लाह की राह
 पर चलने वालों के चाराग, खास लोगों को दोस्त रखने वाले मोहलानों
 गरीबों के ज़िन्न व इन्सानों के सरदार। हमारे बीच दुनिया व
 आख़िरत का वसीला दर्जोवाला दो कमानों के बराबर, परवरदिगार
 के महबूब दो मशरिक और दो मरिब के नाना इमाम हसन व इमाम
 हुसैन के, मालिक हमारे और मालिक ज़िन्न व इंसानों के। कुनीयत
 अबुल कासिम नाम मुहम्मद बेटे अब्दुल्लाह के। एक नूर में अल्लाह
 के नूर से। ऐ आशिको नूर जगल हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर दरख
 मेनो उनके ऊपर उनकी औलाद और उनके दास्तों पर सलाम मेनो।

रोजा रखने की हुआ روزہ رکھنے کی وجہ

issuu.com/abdul23/niali/odisha

وَيَقُولُ عَلَىٰ كُلِّ مَسْجِدٍ مِّنْ مَّسْجِدٍ رَّحْمَةً

‘یا جس جگہ پر مسجد بنی اس جگہ پر رحمت (رہبانہ)

روزہ رکھنے کی وجہ

الْفَخْرُ لِيْكَ مَعْمُوتٌ وَبِكَ الْفَتْحُ وَ

عِيَاكَ تَوَكَّلْتُ وَطَلَّ بِرَبِّكَ الْفَتْحُ

توڑ میں تم پر ہے اس طرح کہ

ہے اعلیٰ ہے میں کمالِ رحمان کا رोजا رکھنے کی نیامت کی
اور اسی پر توکل کرتا ہوں تو اس طرح کہ
